आँखों देखा रूस

[श्री नेहरू की 'सोवियत रशिया' का हिन्दी रूपान्तर]

पं० जवाहर लाल नेहरू

नवयुग प्रकाशन, दिल्ली।

विषय-सूची

सातवाँ परिच्छेद

आठवाँ परिच्छेद

नवाँ परिच्छेद

दसवाँ परिच्छेद

ग्यारहवाँ परिच्छेद

बारहवाँ परिच्छेद

तेरहवाँ परिच्छेद

चौदहवाँ परिच्छेद

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

सोलहवाँ परिच्छेद

भूमिका

ये लेख हिन्दुस्तान के विभिन्न समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए थे, जिन में से बहुधा मद्रास के पत्र "हिन्दू" में निकले थे और शिक्षा से सम्बद्ध एक लेख "यंग इण्डिया" में तथा कई लेख अन्य पत्रों में छपे थे। बड़े सोच विचार, संकोच और झिझक के पश्चात् मैंने इन्हें पुस्तकाकार में प्रकाशित किया। साधारण पाठकों की अपेक्षा मैं अधिक जानता हूँ कि इन लेखों में क्या कुछ त्रुटियां हैं और वे कितना बिखरी तिखरी तथा बेजोड बातें हैं, जो सरसरी रूप में लिखी गई हैं। इन में से कुछ लेख रेलवे गाड़ियों में यात्रा करते हुए लिखे गये। सच तो यह है कि ये सब के सब चलते चलाते मेरी दूसरी प्रकार की सरगर्मियों के बहाव में, जिन में मेरे समय का अधिक भाग व्यतीत हुआ, लिखे गये हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि सोवियत रूस की प्रतिक्षण परिवर्तन-शील तथा उलझी हुई परिस्थियों के लिखने के लिये कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिये, जो बहुत व्यापक जानकारी एवम् साहस रखता हो। मुझे इस प्रकार की जानकारी रखने का दावा नहीं है और यद्यपि मेरा यह स्वभाव है कि मैं उस क्षेत्र में कूद पड़ता हूं, जिस में पग रखते हुए बुद्धिमान व्यक्ति घबराते हैं, तो भी मेरा यह दावा नहीं है कि मैंने रूस की अच्छाइयों अथवा गुणों का विवेचन या वर्णन कर डाला है या यह कि जो घटनाएं वहां हुईं, उन की निन्दा की जाय। सोवियत रूस की परिस्थितियों का अध्ययन मेरी अभिरूची के लिये आकर्षक रहा है। वहां की परिस्थतियों के सम्बन्ध में अनेक महानुभावों ने मुझ से प्रश्न किये हैं। इस से प्रकट होता है कि इस देश की परिस्थितियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये लोगों में कितनी उत्सुकता एवम् चाव है। लेखों का यह क्रमविहीन चयन, जिन

में बहुत सी त्रुटियाँ हैं और कई बातों को फिर फिर दुहराया भी गया है, मेरी व्यक्तिगत तुच्छ जानकारी और थोड़ा बहुत पुस्तकाध्ययन पर आधारित है। यह पाठक-वर्ग को कठिनता से सन्तुष्ट कर सकेगा, परन्तु इस से उन लोगों को, जो इस विषय में और भी ज्ञान वीन करना चाहते हैं और पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं, शायद अपने कुछ प्रश्नों का उत्तर मिल जाए। मन में इन्हीं विचारों के होने से मुझे इस पुस्तक को पाठकों के सामने रखने का साहस नहीं होता था। १७ दिसम्बर १९१७ ई० को प्रधान वुडराफ विल्सन ने अमेरिका की काँग्रेस के प्रति अपना अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए कहा था :—

"मानव जाति की जो आवाज़ें वायुमण्डल में गूँज रही हैं, मेरे साथ आप भी उन्हें सुनते हैं। ये आवाज़ें दिन प्रति दिन अधिक ऊंची, अधिक स्पष्ट और अधिक व्यापक होती जा रही हैं और वे प्रत्येक स्थान के मनुष्यों के अतः स्थलों से निकल रही हैं।"

वर्तमान रूस का अध्ययन करने वालों को भी मानव जाति की आवाज़ें सुनाई देती हैं। ये जनसाधारण की—जनमता की आवाज़ें हैं, जो प्रति क्षण अधिक ऊँची और बलवती होती जाती हैं और मुझे ऐसा अनुभव होता है कि प्रत्येक देश में इन की गूँज सुनाई देती है। युद्ध से ऊब चुकी हुई दुनिया ने इन आवाज़ों को सुना। प्रधान विल्सन ने भी इन को सुना। अपने विश्व विख्यात चौदह नियमों का उल्लेख करते हुए (खेद है कि अब इन नियमों का कहीं पता नहीं) सोवियत रूस और जर्मनी के मध्य संधि-वार्ता की चर्चा करते हुए कहा था:—

'रूसी प्रतिनिधियों ने उचित प्रकार से अत्यन्त समझदारी और वर्तमान युग की स्वतन्त्रता की सच्ची भावना के साथ इस बात पर जोर दिया कि जर्मन और तुर्कों के सहित वह सन्धि की जो कांग्रेस कर रहे हैं, वह गुप्त

रूप में नहीं, प्रत्युत खुले रूप में होनी चाहिये। अस्तु जैसा कि उनकी इच्छा थी, सारे संसार ने उस बात चीत को सुना।

परन्तु एक ऐसी आवाज है जो सिद्धान्त और उद्देश्य की व्याख्या अथवा स्पष्टिकरण के लिए पुकार रही है, जो मेरी राय में संसार भर की आवाजों से अधिक वेदना पूर्ण और हृदय को कंपा देने वाली है और वह रूसियों की आवाज है। वे हम से मांग करते हैं कि हम प्रकट कर दें कि हम क्या चाहते हैं और किस किस बात में हमारा उद्देश्य और भावना उनके उद्देश्य और भावना से विभिन्न हैं और मुझे विश्वास है कि अमेरिका निवासी यह चाहेंगे कि मैं उनसे कह दूँ कि हम उनकी आवाज का उत्तर अत्यन्त शुद्ध हृदय से सच्चाई के साथ तथा लागलपेट से दूर रह कर देंगे। रूसियों के वर्तमान नेता इस बात का विश्वास करें या न करें, किन्तु हमारी हार्दिक इच्छा यह है कि कोई ऐसा मार्ग निकल आए कि हम रूसियों को उनकी स्वाधीनता और सुख शान्ति प्राप्त करने में सहायता देने का गौरव प्राप्त कर सकें। चौदह नियमों में से मित्र-राष्ट्रीय शक्तियों की वास्तविक परीक्षा छटे नियम के कार्यान्वित किये जाने पर निर्भर है।

समस्त रूसी प्रदेश को मित्र राष्ट्रीय सेनाओं से खाली करने में और रूस की समस्त सम्बन्धित समस्याओं का समाधान इस रीति से करने में, कि उसे स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी राजनीतिक पॉलिसी और राष्ट्र-नीति स्थिर अथवा निश्चित करने का निर्विघ्न अवसर मिले, संसार की अन्य जातियाँ उसके साथ खुले हृदय से सर्वोत्तम सहयोग करें। और विश्व के स्वाधीन राष्ट्रों की सभा में हृदय से इस का स्वागत करने का विश्वास दिलायें और उसे स्वतंत्रता दें कि वह अपनी इच्छा के अनुसार इस्टिटयूशन स्थापित करे और प्रत्येक आवश्यकता के समय और जब कभी वह चाहे उसे सब प्रकार की सहायता दें। दूसरी जातियाँ रूस के साथ भावी महीनों में जो बर्ताव

करेंगी, उससे उनकी मनः शुद्धि की यथार्थ परीक्षा हो जाएगी और पता चल जाएगा कि वे उसकी आवश्यकताओं को समझती हैं और निजी स्वार्थ से ऊँचा रह कर निष्काम सहानुभूति रखती हैं।

यह उदारता के शब्द थे, परन्तु स्वयं प्रधान विल्सन, जिस के मुँह से ये निकले थे, और उनका देश इन पर दृढ़ नहीं रहा। इतिहास इस परीक्षा के परिणाम हमें बताता है। यूरोप की मित्र-जातियों ने सहानुभूति पूर्ण वर्ताव करने के स्थान पर नये रूस को नष्ट भ्रष्ट करने का प्रयत्न किया और आज युद्ध से दस वर्ष के पश्चात् भी खुले रूप में राजदूतों द्वारा विचार विनिमय से हम कितनी दूर हैं। यह बात उस गुप्त सागरिक प्रतिश्रुति से विदित है, जो वर्तमान में इंगलैण्ड और फ्राँस के मध्य सम्पन्न हुई है। परन्तु इन समस्त कठिनाइयों के होते हुए भी रूस इस कारण से जीवित रहा कि मानव जाति की आवाजें उसके साथ थीं।

जिन विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में ये लेख प्रकाशित हुए थे, मैं उनके सम्पादकों का आभारी हूँ कि उन्होंने कृपा पूर्वक मुझे इनके पुनः प्रकाशित करने की आज्ञा दे दी है। 'हिन्दू' और 'यंग इण्डिया' के सम्पादकों का मैं विशेषतः कृतज्ञ हूँ।

इलाहाबाद

जवाहरलाल नेहरू

पहला परिच्छेद

रूस से सम्बद्ध जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता

जब से मैं यूरोप से लौटा हूँ, मुझ से रूस के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न किये जाते हैं। मैंने मास्को की अत्यन्त संक्षिप्त यात्रा की। इसी आधार पर मुझे रूसी मामलों में लगभग पूर्ण ज्ञाता समझा जाने लगा है और समस्त प्रकार के प्रश्न मुझ से पूछे जाते हैं, जिन से मैं बहुत परेशान होता हूँ। विशेषतः विद्यार्थियों के जलसों में जब भाषण करने का अनुरोध किया जाता है तो प्रायः यह प्रार्थना की जाती है कि सोवियत रूस के सम्बन्ध में कुछ कहूँ। यद्यपि इस विषय में मेरा ज्ञान अतीव सीमित है परन्तु मैं लोगों की किसी चीज के जानने के लिये इस उत्सुकता का समादर करता हूँ। इस लिये मैं हर्ष के साथ उन की आज्ञा का पालन करता हूँ। क्योंकि हिन्दुस्तानियों में इस देश के सम्बन्ध में यह दिलचस्पी सराहनीय है, जिसकी प्रायः समस्याएं हमारे देश की समस्याओं से समानता रखती हैं और जिस ने संसार के इतिहास में एक बहुत बड़ा परीक्षण करके देखा है। सारे संसार की आँखें रूस पर लगी हुई हैं। कई जातियाँ भय और घृणा और कई आशा भरे दिलों से देख रही हैं और उसके पद-चिह्नों पर चलने की इच्छुक हैं।

रूस के विषय में विमनस् होकर विचार करना कठिन है और उसकी

सफलताओं तथा असफलताओं पर विना पक्षपात के आलोचना करना या विचार प्रकट करना और भी कठिन है। आज कल वह एक ऐसे तार के सदृश्य है, जिस में विद्युत दौड़ रही हो। उसके छूने से भीषण झटका लगना आवश्यक है। जो लोग रूस के सम्बन्ध में कुछ लिखते हैं वे या तो सीमा से अधिक प्रशंसा करने लगते हैं या निन्दा पर उतर आते हैं तो चरम सीमा को पहुंच जाते है। इस बात का अधिकतर आधार लिखने वाले के जीवन-दर्शन और दृष्टिकोण पर है तथा भूतपूर्व द्वेश और विचारों पर है जो निरीक्षण करने वाला पहले से रखता है। परन्तु चाहे कोई सा अभिमत सत्य हो, कोई व्यक्ति मजदूरों और किसानों के इस अद्भुत यूरोपीय एशियाई देश की मनोज्ञता से इनकार नहीं कर सकता, जहाँ किसान और मजदूर निरकुँश और स्वच्छन्द साम्राटों के सिंहासन पर आरूढ़ हैं और जिन्होंने ईर्षा तथा द्वेश करने वालों के मनसूबों को मिट्टी में मिला दिया है।

भारत और रूस

यहाँ भारत वर्ष में हमारे लिये रूस के साथ अभिरुची और भी अधिक है, अपितु हमारे हित हमें विवश करते हैं कि इन बड़ी शक्तियों के अभिप्राय को समझें, जिन्होंने पुरानी व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट करके एक नये संसार को जन्म दिया है, जहाँ मनुष्यों के मूल्य सर्वथा बदल गये हैं और पुराने मानदण्डों का उन्मूलन होकर उनके स्थान पर नये स्तर स्थापित हुए हैं। हम रूढ़ी-वादी लोग हैं, परिवर्तन के अधिक इच्छुक नहीं और अपने भव्य अतीत तथा अमिट सभ्यता के लिये भ्रांतिपूर्ण विचारों को मन में स्थान देकर अपने वर्तमान संकटों तथा दुरवस्थाओं को भूल जाने का सदा प्रयत्न किया करते हैं। परन्तु अतीत मर चुका है और

व्यतीत हो गया है और हमारी अमिट सभ्यता या संस्कृति वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान करने में हमारी तनिक सहायता नहीं करती। यदि हमें इन समस्याओं का हल ढूण्डना है तो हमें विचारों के नये क्षेत्रों में उस की खोज करनी पड़ेगी और नये उपायों तथा साधनों को अपनाना होगा। संसार बदल रहा है। कल और परसों की सच्चाइयाँ सम्भव है कि आज किसी काम न आयें। हमें जीवन का मार्ग इन विभिन्न टेढ़े मेढ़े औवड़ खाबड़ क्षेत्रों में तय करना है। किसी बाह्य या दिखावे के उद्देश्य या लक्ष्य पर अड़े रहने से सम्भव है कि हम विनाश के गह्वर में जा गिरे। वास्तव में रूस के साथ हमें इस लिये अभिरुची है कि शायद उन बड़ी समस्याओं के, जो आज संसार के सामने हैं, समाधान में उस की परिस्थितियों अथवा अनुभवों से हमें सहायता मिल सके। रूस के साथ हमें इस कारण से भी दिलचस्पी है कि वहाँ की परिस्थितियाँ सदा से और अब भी भारतवर्ष की परिस्थितियों से विभिन्न नहीं हैं। दोनों ही कृषि प्रधान देश हैं और दोनों के शिल्प उद्योग प्रारम्भिक अवस्था में हैं। दोनों ही में दरिद्रता और अविद्या विद्यमान है। यदि रूस को इन कठिनाइयों के निराकरण या समाधान का संतोषजनक उपाय मिल जाएगा तो भारत वर्ष में हमारा काम सुगम हो जायगा।

इसके अतिरिक्त रूस की इस लिये भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह हमारा पड़ोसी देश है और बलवान पड़ोसी है, जो हमारा मित्र बन सकता है तथा हमारे साथ सहयोग कर सकता है या हमारे वक्षस्थल का कण्टक सिद्ध हो सकता है। प्रत्येक दृष्टिकोण से रूस को जानना और समझना तथा उसके अनुकूल अपनी नीति स्थिर करना हमारे लिये आवश्यक है। रूस के साथ युद्ध की आशंका सदा से बनी रही है। ज़ार के समय में हम से कहा जाता था कि रूस समुद्र में निकलने के लिए कोई स्थान

हुएड रहा है और अब जब कि जार का युग समाप्त हो चुका है तो हमें डराया जाता है कि साम्यवादी रूसी शान्तिप्रिय और शान्त संसार को उलट पुलट देना चाहते हैं। व्हाइट हाल और मास्को या पेत्रोग्राद मे किसी भी दल के हाथ में शासन की बागडोर हो, इङ्गलैण्ड और रूस के मध्य प्राचीन राजनीतिक शत्रुता सदा विद्यमान है।

प्रश्न यह है कि इस शत्रुता या द्वेश से हिन्दुस्तान को कहां तक प्रभावित होना चाहिये और इसके लिये कहाँ तक हानि उठानी चाहिये। युद्ध की अफवाहें इस समय भी सुनी जाती हैं और हमारे लिये इस प्रश्न पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। अस्तु रूस के सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानने की उत्कण्टा होना सर्वथा उचित है। इस समय तक रूस के विषय में जो बातें भारतवर्ष को ज्ञात हुई हैं, वे उन समाचार एजन्सियों के द्वारा मिलती रही हैं जो रूस की विरोधी है और जिन्हे इस प्रकार के विरोधात्मक समाचारों के लिए स्वार्थी क्षेत्रों मे आर्थिक सहायता मिलती है। रूस के सम्बन्ध में अत्यन्त अनूठी कहानियाँ सुनाई गई है। मुझे से प्रायः यह प्रश्न किया गया है कि ये बातें कहाँ तक सच्च हैं, जैसा कि कहा जाता है, कि रूस में महिलाओं को राष्ट्रीय सम्पत्ति बना दिया गया है। (राष्ट्रीय सम्पत्ति बनाने का अर्थ यह है कि महिलाओं के साथ नियमपूर्वक ब्याह की रीति सम्पन्न नहीं होती, प्रत्युत प्रत्येक व्यक्ति जिस महिला को चाहे अपने प्रयोग में ला सकता है—अनुवादक)

रूस के सम्बन्ध में अत्यन्त बेसिर पैर के समाचार इगलैंण्ड और अन्य देशों के समाचार पत्रों को रेगा के संवाददाता जुटाते रहे हैं। न्यूयार्क के पत्र 'नेशन' में एक लेखक लिखता है—

रेगा के सम्वाद-दाता कैसे बनाये जाते हैं !

पहली बार रेगा के सम्वादाता के रूप में मैंने लण्डन के एक समाचार पत्र में काम किया। एक सम्पादक ने प्रातः के समाचार पत्रों में से एक सम्पादकीय लेख कैंची से काट कर मेरे हाथ में दिया और आदेश दिया कि इस लेख के एक भाग के शब्दों को बदल कर इस प्रकार लिखो कि मानो रेगा से पत्र भेजा गया है और इस पर रेगा की तिथि डाल दो। इस ढंग से मुझे रेगा का संवाददाता बना दिया गया। इस लेख में तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय सभा की तथा कथित घृणित कार्यवाहियों की आलोचना की गई थी। मैंने इस लेख को नये सिरे से सुचारु रूप में लिखा होगा। क्योंकि बाद को उक्त समाचार पत्र की ओर से फिर मुझे इसी प्रकार का नाजुक काम दिया गया और मैं उस समाचार पत्र का नियमित रूप से रेगा का संवाददाता बन गया। उन समाचारों के शीर्षकों के नीचे सदा ये शब्द, जैसा कि फ्लेट स्ट्रीट के पत्रकार लिखना पसन्द करते हैं, लिखे जाया करते—"हमारे विशेष संवाददाता की लेखनी से"। एक वर्ष के पश्चात् जब मैं पैरिस में था और वहाँ के समाचार पत्र से सम्बन्ध रखता था, तो फिर मैंने अपने आप को रेगा का संवादाता पाया। अब दो प्रकार का कार्य मुझे सौंपा गया था। फ्राँसीस और अंग्रेजी समाचार पत्र, जिन में लण्डन का वह समाचार पत्र भी सम्मिलित था. जिस ने पहले मुझे रेगा-संवाददाता नियुक्त किया था, सब मेरी रेगा की चिट्ठियाँ प्रकाशित करने पर गौरव प्रकट करते थे। उन समस्त चिठियों में नये नये रहस्यों के उद्घाटन का वर्णन होता था। उनके शीर्षक प्रायः ये हुआ करते थे—

"बाल्शेविकों के अत्याचार"। "निर्दोष लोगों को फांसियाँ"। "रूस की जनता का अपनी सरकार के प्रति असंतोष।"

जैसा कि लण्डन में नियम था, उसी प्रकार पैरिस में भी इस इस प्रकार के लेखों की सामग्री मुझे सौंप दी जाती थी। और इस से एक और रेगा का संवाददाता का जन्म हो जाता था। वह लिखता है कि जब कभी मैं रेगा की कल्पना करता हूँ तो मेरे मस्तिष्क में कोई नगर नहीं आता, प्रत्युत समाचार पत्र का एक कार्यालय आता है जहाँ पुरानी मेजें हैं, गोंद-दानियाँ, टाइपरायटर और रद्दी कागजों की टोकरियाँ पड़ी हैं। मानों रेगा, समाचार-पत्र के कार्यालय-रूपी एक नगर का नाम है, जहाँ वे लोग बसते हैं, जो अपने काम में व्यस्त हैं, खूब खाते हैं, खूब सोते हैं और अपने लिये मोटरकारें मोल लेने के स्वप्न देखते हैं। एक बार कौतूहल-वश मैंने 'इन्सायक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में रेगा की खोज की। वर्तमान जानकारी के इस महाकोष में लिखा था कि रेगा बाल्टिक उपसागर पर एक बड़ी बन्दरगाह है, जहाँ से कृषि की उपज, विशेषतः चेना, इङ्गलैण्ड में आता है। शायद् इन्सायक्लोपीडिया का यह पुराना संस्करण था। आजकल तो चेना के स्थान पर वहाँ अफवाहें बड़े प्राचुर्य से आती हैं।

यदि कभी नगरों को, उनकी दुर्लभ सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप सम्मान सूचक उपाधियाँ प्रदान करने की प्रथा का प्रचलन हुआ तो पश्चिमी जगत् को चाहिए कि रेगा को सब से बड़ी उपाधि प्रदान करे। केवल उसका नाम ही पत्रों पर लिखे जाने से बाल्शविकों के मनोरथों के विरुद्ध एक बाधा खड़ी हो गई है और इस प्रकार से पश्चिमी यूरोप के पवित्र आदर्शों को सुरक्षित रखा गया है। सोवियतों के घृणित् प्रचार से रेगा ने संसार की रक्षा की है। बाल्शवेकों के प्रभाव को रेगा के मोर्चे पर तोड़ दिया गया है।

दूसरा परिच्छेद

मास्को की यात्रा

विदेशों के साथ क्रियात्मक और साँस्कृतिक सम्बन्धों की सभा ने १६२७ ई० के नम्बर में रूस की स्वाधीनता की दसवीं वर्षगाँठ के उत्सव पर हमें मास्को में आमन्त्रित किया था। समस्त देशों के बहुत से पुरुषों और महिलाओं को भी निमन्त्रण पत्र भेजे गए थे। न केवल साम्यवादियों प्रत्युत बहुत से प्रोफेसरों, वैज्ञानिकों और अन्य प्रतिष्ठित महानुभावों को भी आमन्त्रित किया गया था। मेरा विश्वास है कि लगभग आठ सौ व्यक्ति इस निमन्त्रण को स्वीकार करके वहाँ पहुँचे थे। हम ने वहाँ जाने का निश्चय अन्तिम समय पर किया था, क्योंकि हमें अवकाश बहुत कम प्राप्त था और मास्को की यात्रा बड़ी लम्बी थी। हमने बर्लिन से प्रस्थान किया। सारा पोलैण्ड हमें लांगना पड़ा। यह यात्रा नीरस, आनन्द शून्य और शुष्क थी। पोलैण्ड एक उजाड़ और आनन्द विहीन देश दिखाई देता था। वार्सा सागर के समस्त रेलवे स्टेशन छोटे छोटे हैं और उनके आस पास बहुत थोड़े भवन देखने में आते हैं। गाड़ी में एक जर्मन पथप्रदर्शक हमारे साथ था। उसे पोलैण्ड से और पोलैण्ड की प्रत्येक वस्तु से घृणा थी। उसके विचार में जर्मन की सीमा से निकलते ही सभ्यता समाप्त हो गई और पोलैण्ड वाले असभ्य और

पशु हैं। संभव है कि इस देश का नीरस दृश्य ऋतु के कारण हो, क्योंकि सर्दी की ऋतु आरम्भ हो चुकी थी। फिर भी जाड़े की ऋतु किसी उद्योग-शील देश को और तरह का नहीं बना देती और गाड़ी में बैठे हुए जहाँ तक हम देख सकते थे औद्योगिक उन्नति के चिह्न बहुत कम दिखाई देते थे।

रूसी सीमा का पहला स्टेशन

बर्लिन से प्रस्थान करने के चौबीस घण्टे के पश्चात् ७ नवम्बर की रात को हम रूसी सीमा के नीग्रोलोजी स्थान पर पहुँचे। हमारे पहुँचने से पहले चुङ्गी विभाग का इंचार्ज एक रूसी अधिकारी हमारी गाड़ी में आया। उसने पूछा कि क्या हम अतिथियों के रूप में उत्सव में सम्मिलित होने जा रहे हैं। जब उसे ज्ञात हो गया तो उस ने कहा कि अपने सामान की चिन्ता न करें मैं इसे संभाल लूँगा। और चुङ्गी के कर के लिये हमारे असबाब की तलाशी भी न ली गई।

यह सीमावर्ती स्टेशन भली प्रकार से सजाया गया था। इस पर चारों ओर झण्डे झण्डियां लगी हुई थीं। स्थान स्थान पर लाल पताकाएं लहरा रही थीं। उन पर सोवियत का हथौड़े और द्राँती का चिह्न बना हुआ था। और नेताओं के चित्र भी थे। इस विजय-दिवस और बाल्शेविकों को शासन की बागडोर संभाले दस वर्ष पूरे हुए थे। समस्त रूस में यह महोत्सव मनाया जा रहा था।

हम खाना खा चुके थे, परन्तु स्टेशन स्टाफ बहुत सा खाना हमारे लिये ले आया। वे भारतीयों की भांति अनुरोध करते थे तथा हमारा बहाना न सुनते थे। इसलिये हमें उनकी प्रार्थना को स्वीकार करना ही

पड़ा। हमें उन से बातचीत करने में बड़ी कठिनाई हुई क्योंकि यूरोप की बोलियों में से हम केवल अंग्रेजी और फ्राँसीसी ही जानते थे। स्टेशन स्टाफ वाले अंग्रेजी से सर्वथा कोरे थे और फ्रांसीसी भी बहुत ही कम जानते थे। उनमें कई व्यक्ति जर्मन भाषा भली प्रकार से जानते थे। अन्त में एक व्यक्ति ढूंढ कर लाया गया जो कुछ फ्रांसीसी बोल सकता था। उसने दुभाषिये अर्थात् हमारे और रूसियों के मध्य हमारी बातचीत के अनुवादक का काम किया। हमें एक संक्षिप्त सी रीति का पालन करना पड़ा। हमारे स्वागत में एक भाषण किया गया जिसका मैंने संक्षेप में उत्तर दिया। एक दर्जन के लगभग ग्रामीण भी, जिन में पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे भी सम्मिलित थे, इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने जलसे की कार्यवाही में बड़ी रूची प्रकट की। संभव है कि इसका कारण यह भी हो कि मेरी पत्नी और बहिन साड़ियाँ पहने हुए थीं। इसके बाद हमें कमरे में घुमाया गया और चित्रों तथा विज्ञापनों का अर्थ समझाया गया। तब हमें पहली बार अनुभव हुआ कि इस देश में लेनिन के लिये कितनी श्रद्धा एवम् भक्ति विद्यमान है। जब कभी लेनिन की चर्चा की जाती थी तो श्रोताओं के चेहरों पर लालिमा झलक उठती थी। इस स्टेशन पर हमारे संक्षिप्त विश्राम को, पिता जी के शब्दों में, इससे उपमा दी जा सकती है कि कांग्रेस का कोई प्रतिनिधिमण्डल असहयोग अन्दोलन के समय में किसी छोटे कसबे या गांव में गया हो।

रूसी ट्रेन में यात्रा

नेगरोलोजी से हम रूसी ट्रेन में सवार हुए। हमारे अतिथि-सेवियों ने हमारे लिये सीटें रिजर्व करा रखी थीं और हम ने बड़े आराम के साथ

यात्रा की। रूस की रेलगाड़ियों में केवल एक ही क्लास (दर्जा) होता है। परन्तु सोने के लिए विशेष गाड़ियाँ होती हैं जो हमारे लिये जुटाई गई थीं। हम सारी रात और दूसरे दिन के बड़े भाग में निरन्तर यात्रा करते रहे और तीसरे पहर के समय मास्को पहुंच गये। महोत्सव के उपलक्ष में रास्ते के समस्त स्टेशन पताकाओं और चित्रों से आलंकृत थे। स्टेशनों पर जो पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे हम ने देखे, वे सब अच्छे वस्त्रों से विभूषित थे। उन में बहुधा लम्बे कोट पहने हुए थे, जो टखनों तक लम्बाई लिये हुए थे और बड़े बड़े रूसी बूट घुटनों तक चढ़े हुए थे।

मास्को स्टेशन पर सांस्कृतिक समिति के प्रतिनिधि हमारे स्वागत के लिये उपस्थित थे और कुछ भारतीय युवक भी, जिन से हम परिचित न थे, और श्री एस० जे० सकलतवाला, जो हम से कुछ दिन पहले पहुँच गये थे, विद्यमान थे। स्टेशन से हमें होटल डी० मास्को में ले गये। यह बहुत बड़ा भवन है, जहाँ शाही युग के गौरव तथा शान के चिह्न पाए जाते हैं। चूंकि ये ठाठ बाट और शान बान के चिह्न वर्तमान शासन व्यवस्था के नियमों के विरुद्ध हैं, इसलिये प्रायः चिह्नों को ढाँप दिया गया है।

मास्को पहुँचने पर सब से पहले हमें इस बात का खेद हुआ कि हम एक दो दिन पहले क्यों न आए। क्योंकि अवस्तविक उत्सव एक दिन पहले मनाया जा चुका था और उसमें हम सम्मिलित न हो सके थे। इस उत्सव के अतिरिक्त दूसरी बात, जिस के न देख सकने का हमें खेद हुआ, वह यह था कि दसलाख फौजी आदमियों और मजदूरों और बच्चों ने लेनिन की समाधि को सलामी देते हुए मार्च किया था। ये लोग रूस के प्रत्येक भाग से आए थे। रूसी यूनियन के किसान प्रधान कलेनिन ने, जो अपनी उच्च पदवी के होते हुए भी रङ्ग ढङ्ग से किसान ही प्रतीत होता

था, यह सलामी ली थी। प्रातः से लेकर रात हो जाने तक अन्तर्राष्ट्रीय गीत के साथ, जो मजदूरों का राष्ट्रीय गीत है, मार्च पार्ट जारी रहा। सब से आगे सब प्रकार की सेना, इसके पीछे कारखानों, कालेजों और स्कूलों तथा नगरों एवम् गाँवों के प्रतिनिधि गुजरे। मजदूर और किसान स्त्री पुरुष और बच्चे चालीस पंक्तियों में अपने सिरों के ऊपर पताकाएं ऊंची किये हुए बड़े समारोह और और जोश के साथ सलामी देते हुए गुजरे।

चेम्बरलेन, बरवाएड और बाल्डविन के काग़जी बुतों का प्रदर्शन भी किया गया था। इनमें से कई बुत (मूर्तियां) बड़ी कारागरी से बनाए गये थे। एक बुत (मूर्ति) में चेम्बरलेन को ब्राँती में खिचा हुआ और हथौड़ा उसके सिर पर गिरता हुआ दिखाया गया था। अंत में बड़ी रात गये कासिकों के रिसालों ने लाल चौक में से गुजरते हुए सिरपट घोड़े दौड़ा कर अश्वारोहण-कला के कमाल दिखाये। इस प्रकार के दृश्यों की कहानी हम ने सुनी और जितना यह सब कुछ सुनने थे उतना ही एक दिन लेट पहुँचे का हमें खेद होता था कि यह शानदार समारोह हम न देख सके।

———

तीसरा परिच्छेद

मास्को के दृश्य

मास्को के बाजारों में बड़ी भीड़ भाड़ थी। अधिकतर लोग पैदल चल रहे थे। प्रत्येक स्थान पर जनसमूह ही जन समूह दिखाई देते थे। परन्तु वे नियम-बद्ध समूह थे। वे सड़क पर चलने के नियमों का पालन करते थे और किसी स्थान पर जमघटा किये बिना बराबर चलते रहते थे पुलिस वाले, जिन्हें वहां मलेशिया के सिपाही कहा जाता है, लोगों के यातायात का प्रबन्ध भली प्रकार से कर रहे थे। किन्तु उनका काम इतना कठिन नहीं था जितना की संसार के अन्य नगरों में होता है। क्योंकि वहां तांगों और मोटर कारों का यातायात बहुत कम है। यद्यपि बिजली की ट्रामें, मोटर बसें और टैक्सियां भी भारी संख्या में चलती हैं परन्तु पैरिस, बर्लिन और लण्डन की अपेक्षा उनकी संख्या बहुत कम है। सोवियत रिपब्लिक के दसवें वार्षिक उत्सव के कारण उन दिनों संभवतः भीड़ भड़का अधिक था।

इस महोत्सव के उपलक्ष में नगर सजा हुआ था और जहां तहां पताकाओं का प्रदर्शन हो रहा था। प्रत्येक स्थान पर लाल झण्डे दिखाई देते थे जिन पर द्रांती और हथौड़े के चिह्न थे। ये मजदूरों और किसानों के शासन का निशान हैं। अनेक स्थानों पर लेनिन के चित्र भी लगे हुए थे और दस का अंक भी, जो स्वतन्त्रता के दसवें वर्ष का पता देता था, प्रायः स्थानों पर देखने में आता था। रात के समय दीपावली हुई। रात के 'समय

भी नगर की सजावट का दृश्य स्पष्ट रूप में दिखाई देता था। बिजली के हण्डे भी प्रायः लाल वर्ण के थे। लाल रङ्ग रूस को बहुत पसन्द है, जो क्रांति का द्योतक है। रूसी भाषा में लाल रङ्ग के लिये जो शब्द बोला जाता है, उनके दो अर्थ हैं—लाल और सुन्दर। अस्तु मास्को का सब से बड़ा चौक जो क्रेमलिन दुर्ग के निकट है और जिसके एक पार्श्व में लेनिन की समाधि अवस्थित है, क्रांति के समय से पहले भी लाल चौक के नाम से पुकारा जाता था।

मास्को में प्रवेश करने पर पहला अनुभव जो नवागन्तुक यात्री को होता है वह यह है कि यह बहुत बड़ा नगर है और नगर में जितना आगे बढ़ते जाओ वहाँ पश्चिमी जगत् के अन्य नगरों से सर्वथा नये प्रकार की बस्तियाँ दिखाई देती हैं। अन्त में यात्री इस परिणाम पर पहुँचता है कि मास्को पश्चिमी देशों के नगरों से सर्वथा अनूठा नगर है। वहां बहुत से सुनहले कलस वाली समाधियां, विशाल चौक, और चौड़ी सड़कें हैं जिनसे नगर अत्यन्त सुन्दर नजर आता है। गिरजा घरों की संख्या भी बहुत है। एक व्यक्ति ने हमें बताया था कि इस नगर में सोलह सौ गिरजे हैं। कई गिरजाओं को अजायबघरों में परिवर्तित कर दिया गया है परन्तु प्रायः गिरज़े अब भी धार्मिक लोगों के लिये खुले हुए हैं। सोवियत सरकार किसी रूप में भी धर्म को प्रोत्साहना नहीं देती और वहां ऐसी सभाएं भी हैं, जो धर्म के विरुद्ध प्रचार करती हैं और जो शिक्षा स्कूलों तथा कालेजों में दी जाती है उसमें धर्म की झलक तक भी नहीं होती। परन्तु गिरजे में जाने वालों के मार्ग में कोई बाधा नहीं है। और बहुत लोग विशेषतः देहाती अभी तक गिरजाओं में जाते हैं। क्रेमलिन दुर्ग से दहनी ओर हजरत मरियम के नाम पर एक पुराना गिरजा बना हुआ है। इसकी पवित्रता की दूर दूर तक बड़ी ख्याति है। वहाँ की यात्रा अथवा दर्शन के लिये दूर दूर से लोग

आते हैं। हमने देखा कि बहुत बड़ा जन-समूह, जिसमें अधिकांश स्त्रियां थी, गिरजा में जा रहा था। कोई उन्हें रोकता नहीं था। परन्तु इस रास्ते से गुजरने वाला कोई व्यक्ति सामने की दीवार पर लिखे हुए इन वाक्यों को पढ़े बिना नहीं रह सकता था, जो मोटे मोटे अक्षरों मे लिखे हुए थे और जो कार्ल-मार्क्स की एक विख्यात उक्ति है, उसके शब्द ये हैं--

"धर्म मनुष्य के लिए अफ़ीम है।"

पश्चिम के किसी नगर में इतनी भाँति भाँति तथा नाना प्रकार की पौशाके देखने में नही आतीं जितनी मास्को में हैं। पैरिस के सम्बन्ध में समझा जाता है कि वह यूरोप का अन्तःराष्ट्रीय केन्द्र है। प्रत्येक देश के लोग वहाँ देखने में आते हैं। परन्तु वे सब पश्चिमी वेश पहने हुये होते हैं, केवल भारतीय स्त्रियों को छोड़कर, जो वहाँ भी साड़ियाँ पहन कर निकलती हैं। परन्तु मास्को में प्रत्येक कोने से ऐशिया झाँक रहा है, न केवल निरक्षवृत्त का एशिया प्रत्युत उत्तरी और पूर्वी तथा मध्यवर्ती क्राँतिवृत्तों का एशिया भी। लोग भारी भारी बूट पहने हुए हैं और लम्बे २ कोटों तथा टोपियों का प्रत्येक नमूना वहाँ नजर आता है। लोग वेश भूषा की इन रंगा रंगियों के स्वभावी हो गये हैं और इन विभिन्नताओं से तनिक भी चकित नहीं होते। जहाँ तक कि मेरी पत्नी और बहन की साड़ियों ने भी, जो मास्को मे एक असाधारण चीजें थीं, वहाँ के निवासियों के ध्यान को बर्लिन और पैरिस वालों की अपेक्षा बहुत कम आकर्षित किया।

परन्तु मास्को में जो वास्तविक परिवर्तन नवागन्तुक यात्री को दीख पड़ता है और जो वहाँ के निवास की अवधि में प्रतिदिन परिवर्द्धित होता जाता है, वह वहाँ के वातावरण में परिवर्तन है। वहाँ अमीरी और ग़रीबी की चरम अवस्थाएं दिखाई नहीं देतीं। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह रेलवे स्टेशन का पोर्टर है या किसी होटल का वेटर, उसे "तवारिश" नाम से

सम्बोधित किया जाता है, जिसके अर्थ हैं, कामरेड या साथी। और उसे इसी शब्द या नाम से पुकारा जाता है। किसी व्यक्ति के गुणों और हैसियत का अनुमान उसके वेतन की बड़ी धनराशि से नहीं किया जाता। हमें बताया गया है कि कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्यों को, जो सरकार की बड़ी बड़ी पदवियों पर आरूढ़ हैं, दो सौ पच्चीस रोबल मासिक मिलते हैं। यह धनराशि हमारे यहां के तीन सौ रुपया के बराबर है। रूसी यूनियन के प्रधान को यही वेतन मिलता है और संभवतः उसके क्लर्क के वेतन में इससे कुछ अधिक अन्तर नहीं है। अन्तर केवल इतना है कि प्रधान को रहने के लिये कुछ कमरे मिले होते हैं और एक मोटरकार तथा अन्य कुछ सुविधायें। गाँव का किसान या किसी कारखाने का मजदूर प्रधान से मिलने आता है तो इस प्रकार मिलता है, मानो कि वह इन्हीं में से एक है। केवल वह अधिक समझदार और योग्य है। वह उसे "तवारिश" कहकर सम्बोधित करते हैं।

मोटरकारें या तो बहुधा किराया की टैक्सियाँ हैं या सरकार और संस्थाओं, ट्रेड यूनियनों, कोअरेटिव बैंकों, कारखानों या बड़ी बड़ी फर्मों की सम्पत्ति हैं। साधारण व्यक्तियों की कोई मोटर देखने में नहीं आई।

वहाँ बड़ी बड़ी दुकानें और स्टोर हैं जो देखने में दूसरे नगरों की दुकानों के सदृश्य हैं। समस्त बड़ी बड़ी दुकानें सरकार की सम्पत्ति हैं। केवल छोटी छोटी दुकानें साधारण लोगों की हैं। बाजारों में फेरी देने वाले भी हैं जो मामूली चीजें बेचते हैं। जो माल बहुधा दुकानों में रखा हुआ है वह सादा और बाह्य टीप टाप से मुक्त है तथा फैशन का उसमें समावेश नहीं है। पैरिस के बाजार रोड़ी, रपोली या लण्डन की बाण्डस्ट्रीट की तरह की मनोहर और चित्ताकर्षक वस्तुएं वहाँ कहीं विद्यमान न थीं। बाजारों में प्रत्येक स्थान पर लोग ऐसी वेशभूषा पहने हुए दिखाई देते थे, जिनमें

फैशन का कोई लक्ष न था। बहुत लोग बिना कालर और नेकटाई के थे और प्रायः लोग ऐसे हैं जो कोई मूल्यमान वस्तु खरीदने का सामर्थ्य नहीं रखते। परन्तु खर्च के प्रश्न को छोड़कर वहाँ यह समझा जाता है कि कपड़ों पर रुपया और समय लगाना ऐसा दोष है, जो पूंजीपतियों ही से बन्धा है।

कई बड़े बड़े चौकों में लाउड स्पीकर लगे हुए हैं, जो उस दिन के नवीन समाचार, गाने और राजनीतिक भाषण सुनाते रहते हैं ताकि जो लोग कम्यूनिस्ट सिद्धांतों या नियमों में संदेह रखते हों उनके संदेह दूर होकर कम्यूनिस्ट मनतव्य दृढ़ हो जाएं। साम्यवादके लोग संसार को अपनी आकाश वाणी सुनाने का अवसर हाथ ऐसा जाने नहीं देते।

हम यहाँ के सरकारी ओपरा हाउस में भी, जो जार के समय का बना हुआ है, खेल देखने को गये। वहाँ सात सुवर्णछत्र एक दूसरे के ऊपर स्थापित हैं। जार के समय में वहाँ फैशनेबल अमीर लोग एकत्रिक हुआ करते थे। परन्तु जो जन समूह हम ने देखा, वह सर्वथा विभिन्न प्रकार का था। नाट्य-शाला में उन लोगों की बड़ी भीड़ थी जो साधारण वस्त्र पहने हुए थे। कोई व्यक्ति तड़क-भड़क वाले वस्त्र पहन कर खेल देखने वहीं आया था। वे सब घरेलु वस्त्रों में थे। मज़दूर, किसान और पढ़े लिखे लोग थे और उनमें कुछ बच्चे भी सम्मिलित थे। तमाशा में नृत्य और गाना हुआ, जो बहुत ऊंचे स्तर का था। उसे दर्शकों ने बहुत पसन्द किया और "बन्समोर" के नारे उठाते थे। एक छोटे लड़के और लड़की ने, जिनकी आयु दसवर्ष से अधिक न थी, नृत्य दिखाया। परन्तु खेल के कार्यक्रम में सब से बड़ी बात जार के समय की एक विख्यात नर्तकी का नृत्य था। नर्तकी की आयु साठ वर्ष थी, परन्तु देखने में तीस से बड़ी प्रतीत नहीं होती थी। उसने बहुत ही सुन्दर नाच दिखाया। सौंदर्य और कला की दृष्टि से यह ऐसा नृत्य था कि संसार में किसी स्थान के नर्तक

उससे आर्जी नहीं ले जा सकते।

हमने सीनेमा का भी एक खेल देखा। जहाँ एक क्रांतिकारी फिल्म दिखाई गई। उसका नाम था "पेत्रोग्राद के अन्तिम दिन"। रूसी लोग अपनी फिल्मों के सौंदर्य और कला कौशल के लिए विख्यात हैं। परन्तु खेद है कि हम भारत में उन फिल्मों के देखने से वंचित हैं। यहाँ हम बड़ी बड़ी फिल्में देखते हैं और अधिकतर हॉली वुड की बनी हुई निरर्थक तथा अण्ट सण्ट होती हैं। यहाँ जो फिल्म हमने देखी उसमें जार के शासन काल में अमीरी और गरीबी के मध्य जो अन्तर था वह दिखाया गया था। और इसके पश्चात् युद्ध के भीषण दृश्य, फिर ज़ार की अवनति और करेंन्स्की का शासन, तथा बाल्शेविकों और करेन्स्की के मध्य युद्ध तथा अन्त में लेनिन की विजय के दृश्य बड़े प्रभाव शाली रूप में दिखाए गए थे। यह अत्यन्त जबरदस्त और हृदय को कम्पा देने वाली फिल्म थी और इसके प्रापेगण्डा का मोल असीम व अगणित था।

हमने क्रांति का एक अजायबघर भी देखा। वह उस भवन में था, जो पुराने समय में अंग्रेजी क्लब घर कहाता था, जिस का अर्थ यह था कि वह एक अंग्रेजी क्लब का नमूना था, यह नहीं कि अंग्रेज लोग उसके सदस्य थे। अजायबघर में बहुत सी चित्ताकर्षक वस्तुएं थीं। परन्तु हम उसे देख कर बहुत हताश हुए। हमने चित्रों की एक गैलरी भी देखी और एशियायी रूस तथा तुर्कस्तान आदि के चित्र देखकर बहुत संतुष्ट हुए।

ज़ार के समय का भव्य हाउस आफ लार्ड भी हमने देखा, जिसको अब ट्रेड यूनियन हाल बना लिया गया है। उसके मित्रों की कॉंग्रेस इसी हाल में हुई थी। यह ऐसा सुन्दर हाल था, जिसकी टक्कर के हाल मैंने अपने जीवन में कम देखे हैं।

हमने केमलिन दुर्ग भी देखा जहां बड़े बड़े भव्य भवन और गुम्बद हैं। हम जार के प्राचीन महल के भीतर नहीं गए या और किसी भवन में प्रविष्ट नहीं हुए। केवल यूनियन के प्रधान कलेनिन से मिलने गए थे। वह दो तीन कमरों में रहता था जिनका फर्निचर अत्यन्त सीधा सादा था और जहाँ विलासता और ठाठ बाट का कोई लक्षण दिखाई नहीं देता था।

क्रांति ने रूस की बहुत सी चीजों को परिवर्तित कर दिया है। परन्तु रास्की वैसी की वैसी ही विद्यमान है। यह प्राचीन समय की एक गाड़ी है, जो चार पहियों की रिक्शा के सदृश्य है और कि जिसमें घोड़ा जोता जाता है। हम यह न समझ सके कि यह रूढ़िवादी समय की सवारी अब क्यों प्रयोग में लाई जाती है। इसमें केवल एक ही व्यक्ति बैठ सकता है या अधिक से अधिक दुबले पतले दो व्यक्ति और इसका गति वेग ६ मील प्रति घण्टा से अधिक नहीं।

क्रांति बाजार में भिख मंगों का प्रबन्ध भी अब तक नहीं हो सका। प्रायः भिखारी हमसे सवाली होते थे। कई बार नौजवान महिलायें, जिन की गोद में बच्चे होते थे, भीख मांगती देखी गई। साम्यवादियों ने हमें बताया कि विगत समय की अपेक्षा भिखारियों की संख्या में बहुत ह्रास हो गया है और भिखारियों को उनसे आयु भर की टेव का छुड़ा देना कठिन है।

मास्को में हमारा निवास बहुत थोड़ा समय रहा। इसलिये हम बहुत कम परिभ्रमण कर सके। फिर भी उस समय में उस नगर के लुभावने दृश्यों को देख कर काफी आनन्द प्राप्त हुआ। हम अरमान भरे हृदय से यह आकांक्षा लेकर वापस आये कि उसके सुनहले कलसों को धूप में चमकते हुए और उसके बाजारों को, जो पूर्व और पश्चिम के नवागन्तुक व्यक्तियों से भरे रहते हैं, एक बार फिर देखें।

— — —

या दल समाज की उन्नति के लिए आवश्यक हैं उन्हें वोट (मतदान) का अधिकार दिया जाए और अधिक उन्नति शील अर्थात् प्रगतिशील लोगों को उनकी सामाजिक विशेषता और साहस या धैर्य के अनुसार अधिकार दिया जाए। वोट (मतदान) का अधिकार देने या इससे वंचित रखने का अन्तिम अधिकार सोवियतों की अखिल एशिया कॉंग्रेस को प्राप्त है जो देश में सबसे बड़ी शासक संस्था है। यह नियम १६१८ ई० में अखिल एशिया सोवियत कॉंग्रेस के तीसरे अधिवेशन में बनाया गया था कि लूट खसोट करने वाली श्रेणियों (दलों या संस्थाओं) के सदस्यों को कदापि सम्मिलित न किया जाय। फिर १ जुलाई १६१८ ई० में अखिल एशिया सोवियत कॉंग्रेस के पाँचवें अधिवेशन में यही नियम संविधान में समाविष्ट किया गया। मतदान के अधिकार से वंचित रखी गई श्रेणियों की मूल सूचियाँ वे कमेटियाँ तैयार करती हैं जो विभिन्न स्थानीय सोवियतों के चुनाव की देख रेख करती हैं। इन सूचियों पर बहसें अथवा वाद प्रतिवाद होते हैं और उच्च सोवियतों में इनकी अपील होती है और अन्तिम अपील अखिल एशिया सोवियत कांग्रेस या इसकी कार्यकारिणी समिति के सामने पेश होती है। साम्यवादी कहते हैं कि वर्तमान परिवर्तन के अवसर पर यह बहिष्कार आवश्यक है और शासन व्यवस्था उन्नति प्राप्त करेगा तो इसमें समस्त काम आने वाले मनुष्यों को सम्मिलित किया जाएगा जो अपने हाथों या मस्तिष्कों (बुद्धियों) से काम करते हैं। अंतिम परिणाम सम्भव है कि यह हो। परन्तु अभी वर्तमान तरीका एक सुदृढ़ अल्प संख्या वालों को शासन व्यवस्था के स्थिर रखने में बड़ी सहायता देता है। परन्तु अल्पमत या अल्प संख्या वाले अधिक समय तक अपना प्रभुत्व स्थिर नहीं रख सकते यदि जनता की स्वीकृती अथवा संतुष्टी उन्हें प्राप्त न हो। सोवियत सरकार को मजदूरों का पूर्ण स्वाधीन स्वायत्त शासन का नाम दिया जाता है, जो वास्तव में एक ऐसी प्रगतिशील श्रेणी का एक छत्र शासन या स्वराज्य है, जो एक बड़ा सुसंगठित या सुव्यवस्थित

दल है, जिसे यह दावा है कि वह जनता का प्रतिनिधि है और उसे जनता की स्वीकृति प्राप्त है। इस पूर्ण स्वछन्द-सत्ता या स्वायत्त शासन के समर्थन में कम्युनिस्ट लोग कहते हैं कि दूसरे देशों की गणतंत्री सरकारें भी वास्तव में पूर्ण स्वछन्द हैं, जो सदा अपनी श्रेणी या दल के हितों को सामने रखती हैं। वे दस प्रतिशत या इससे कम जनसंख्या की पूर्ण स्वछन्द सरकारें हैं जब कि मजदूरों का पूर्ण स्वायत्त शासन ९० प्रतिशत जन संख्या का है।

सोवियत शासन व्यवस्था का विशेष पहलू उसकी प्रतिनिधित्व प्रणाली है। दूसरे गणतन्त्रात्मक देशों की भाँति वहाँ चुनाव क्षेत्र प्रदेशों या इलाकों के अनुसार नहीं बनाए गए। प्रत्युत सोवियतों के निर्माण की नींव आर्थिक और सामाजिक एकाइयों (यूनिटों) पर है। उदाहरणार्थ कारखाने, गाँव, कोआपरेटिव सोसाइटियाँ, ट्रेड यूनियन आदि के डेलिगेट (प्रतिनिधि) वोटरों की संख्या के अनुपात से चुने जाते हैं। इस अनुपात की केवल थोड़ी सी अवहेलना की जाती है। देहात से दस हजार मतदाताओं(वोटरों) के पीछे एक डेलिगेट (प्रतिनिधि) निर्वाचित किया जाता है और नगरों में दो हजार वोटरों के पीछे एक डेलीगेट। नगरों के रहनेवाले जिनसे अधिकतर अभिप्राय औद्योगिक कारखानों में काम करने वाले मजदूर हैं उन्हें बड़ी हैसियत का समझा जाता है, इसलिए उन्हें प्रतिनिधित्व का अधिकार अधिक दिया गया है। देहाती सोवियत को गाँव की आत्मा कहा जाता है। शब्द सोवियत का अर्थ 'सभा' है और देहाती सोवियत उस पंचायत के सदस्य है, जिसे हिन्दुस्तान के किसी गाँव के समस्त निवासी चुनें। वोटर लोग एक जन सभा में, जिसमें एक विशेष आयु के समस्त पुरुष और महिला निवासी, केवल कुछ एक प्रकार के लोगों को छोड़कर, एकत्रित होते हैं। उन्हें मतदान का अधिकार प्राप्त होता है और वे हाथ खड़ा करके अपने मत को प्रकट करते हैं। इन सभाओं (जलसों) में केवल उन लोगों को वोट देने का अधिकार नहीं

होता, जो धनाढ्य जमींदार हैं और दूसरों के परिश्रम पर गुज़ारा करते हैं या सूद खाने वाले महाजन (साहूकार) हैं या पादरी हैं और इस प्रकार के दूसरे लोग जिन्हें जनसाधारण का रक्त चूसने वाला समझा जाता है। यदि गाँव में कोई छोटा सा कारखाना या पब्लिक इंस्टिट्यूशन है तो वह सोवियत में अपने डेलीगेट सीधे भेज सकते हैं। इसी प्रकार स्थानीय कोआपरेटिव सोसायटियाँ और खेतों में काम करने वाले मजदूरों की यूनियन तथा महिलाओं की सभायें तथा युवकों की लीगें अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार रखती हैं। देहाती सोवियत में प्रायः गैर कम्यूनिस्टों (असाम्यवादियों) को बहुमत प्राप्त होता है। परन्तु कुछ कम्यूनिस्ट भी उसमें अवश्य सम्मिलित होते हैं इसलिए उनका प्रभाव अधिक होता है।

देहाती सोवियत में प्रायः ऐसी समस्याओं का निपटारा किया जाता है जिनका सम्बन्ध देहातियों के दैनन्दिन जीवन से होता है। और उनकी अपीलें उच्च सोवियतों में हो सकती हैं, जिन्हें यह भी अधिकार प्राप्त है कि जब आवश्यकता पड़े वे देहाती सोवियत के मामलों में हस्तक्षेप करें। देहाती सोवियत भूमि की समस्याओं, विशेषतः भूमि की बाँट की समस्याओं और बीज डालने के लिए बीजों के बटवारे तथा वनों से लकड़ियाँ काटने, टैक्स लगाने, विद्यालय और औषधालय बनाने, डाक्टरी नौकरी के प्रबन्ध, आग बुझाने तथा आपसकी सहायता आदि समस्याओं के समाधान या फैसले करती है। यह सोवियत गाँव की अन्य सभाओं के मध्य भी एक शृङ्खला का काम देती है। रूसी गाँवों में आपस की सहायता की सभाओं, महिला सभाओं, युवक संघों, बॉय स्काउटों तथा अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं की दिन प्रतिदिन उन्नति हो रही है।

सोवियत शासन व्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि वोटरों को अपने निर्वाचित डेलीगेट को वापस बुला लेने का अधिकार प्राप्त है। प्रत्येक क्षेत्र को यह अधिकार प्राप्त है कि जिस समय चाहे, सोवियत से अपने प्रति-

निधियों को वापस बुला ले। सब जानते हैं कि दूसरे देशों में पार्लियामेंटों (संसदों) के सदस्यों को, जो तीन वर्ष या चार वर्ष या पाँच वर्ष की निश्चित अवधि के लिये निर्वाचित हुए हैं, वापस बुलाने का कोई नियम नहीं। दूसरा विशेष पहलू यह है कि सोवियत विधान सभाएं भी हैं और कार्यकारिणी समितियाँ भी। यह बात स्पष्ट नहीं कि यह कार्यवाही किस प्रकार की जाती है।

दावा किया जाता है कि सोवियत शासन पद्धति में दूसरी शासन पद्धतियों की अपेक्षा जाति के वास्तविक जीवन की झलक प्रति फलित होती है। वह लचकदार है और उसे बदलने वाली परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जा सकता है ताकि जाति के प्राकृतिक विकास या प्रवृद्धि की गति में किसी प्रकार से बाधा न पड़ने पाए।

चौथा परिच्छेद

सोवियत शासन पद्धति

सोवियत शासन पद्धति वाल्शेविकिज्म और रूस के साथ इस घनिष्टता से सम्बद्ध है कि उनसे पृथक इसका विचार करना कठिन है। फिर भी यह बात विचार संगत है कि क्यूनिज्म (साम्यवाद) के बिना भी इसका अस्तित्व या इसका बाहरी ढांचा स्थिर रह सकता है। रूस के एक भूतपूर्व ग्राण्ड ड्यूक ने, जो मफरूर है और अपने आप को रूस का उचित या वैध जार समझता है तथा जो अब तक आशा रखता है कि शायद किसी दिन वह क्रेमलिन दुर्ग में राज सिंहासन पर आरूढ़ हो सके, कुछ समय हुआ, कहा था कि मैं सोवियत शासन व्यवस्था को पसन्द करता हूँ और साम्यवाद के नियमों की रक्षा करूंगा परन्तु क्रियात्मक रूप में इस शासन व्यवस्था को वर्तमान शासन व्यवस्था के सदृश्य समझा जाए।

सोवियत का विचार संभवतः सबसे पहले १८३४ ई० में जेम्जस्मिथ ने प्रकट किया था, जो ग्राण्ड नेशनल ट्रेड यूनियन के नेताओं में से था। ग्राण्ड नेशनल ट्रेड यूनियन इंगलैण्ड में राबर्ट ओवन ने स्थापित की थी। फिर १८४७ ई० में मार्क्स और एंजल्ज ने साम्यवादियों का वह सुप्रसिद्ध मैनीफैस्टो (नियमावली) जारी किया, जो वर्तमान युग के साम्यवाद की सर्वोच्च बपौती

है। लगभग एक पीढ़ी के पश्चात् १८७१ ई० में पैरिस में भी थोड़े समय के लिये साम्यवाद का प्रचार हुआ जिसकी इति श्री अत्यन्त खेद पूर्ण रूप में हुई। लूइस आगस्ती वलैंकोई, जो कम्यून का प्रवर्त्तक था, क्रांति के समय में इस बात पर जोर देता था कि मजदूरों का पूर्ण स्वच्छन्द स्वायत्त शासन स्थापित हो। परन्तु जिस दिन पैरिस में कम्यून की घोषणा हुई उससे एक दिन पहले वलैंकोई जेल में डाल दिया गया था। उसकी अनुपस्थिति और योग्य नेताओं के न होने से वह आन्दोलन पैरिस के तीन हजार निवासियोंके रक्त प्रवाह में डूब गया, जिनको थेटरस और उसके जनरलों ने बड़ी निर्दयता से काट डाला। अब उसका केवल स्मृति चिह्न शेष है परन्तु वह सजीव स्मृति चिह्न है और पैरिस के कब्रस्तान पेरी ली चेज की दीवार, जहां कम्यूनिस्ट लोग, जो कैद किये गए थे और मशीन गनों से भून डाले गये थे, संसार के साम्यवादियों और समाजवादियों के लिये तीर्थ स्थान बन गई है।

१९०५ ई० की रूस की क्रांति में सोवियत शासन प्रणाली ने एक रूप ग्रहण कर लिया था। वह फलती फूलती रही और उसमें निरन्तर परिवर्तन होते रहे। अन्त में १९१७ ई० में वह सर्वाधिकार युक्त हो गई। वाल्शेविकों की क्रांति के साथ उसने बहुत तेजी से उन्नति की और उस समय से परिवर्तित स्थितियों के अनुसार वह निरन्तर अपने आप को समतल करती अर्थात् बनती संवरती रही।

सोवियत की शासन व्यवस्था की विशेषता यह है कि उसमें इस सत्य को खुले रूप में स्वीकार किया गया है कि समाज में सदा विभिन्न हैसियत की श्रेणियां सम्मिलित होती हैं और प्रत्येक श्रेणी या वर्ग के आर्थिक हित विभिन्न होते हैं। जब तक यह स्थिति बनी रहेगी प्रत्येक सरकार को उन श्रेणियों के अनुपात-संगत महत्त्व को

ध्यान में रखना पड़ेगा। इतिहास बताता है कि उन विभिन्न श्रेणियों के मध्य सदा से संघर्ष चला आ रहा है। इतिहास का आर्थिक मतलब या विवेचन इसी का नाम है। इतिहास के प्रत्येक युग में ऐसी एक श्रेणी का प्रभुत्व रहा है और दूसरी श्रेणी के हितों को केवल उस सीमा तक सुरक्षित रखा गया है जहां तक कि वे उस श्रेणी के प्रभुत्व को सुदृढ़ करें या सुदीर्घ बनाएं। परन्तु एक श्रेणी का दूसरी श्रेणियों पर प्रभुत्व शासन व्यवस्था के रूप में स्पष्टतः बहुत कम प्रकट किया जाता है, प्रत्युत कई अवस्थाओं या रूपों में इस प्रभुत्व को छिपा कर रखा जाता है ताकि उन लोगों को धोखा दिया जा सके, जिन्हें इस सरकार के द्वारा लूटा खसोटा जाता है। और जहां परिवर्तन मन्द गति से होते हैं, वहां प्रभुत्व सम्पन्न श्रेणी सदा रहने वाले अधिकारों और कर्तव्यों का विचार उत्पन्न करके अपने कर्तव्य की रक्षा कर लेती है। समाज में परिवर्तन होते रहते हैं। आर्थिक और सामाजिक ढांचे नये प्रकार के बनते रहते हैं और इस उन्नति का प्रतिनिधित्व करने वाली नई श्रेणियां आगे बढ़ती रहती हैं। धीरे धीरे ये श्रेणियाँ पुरानी श्रेणियों पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेती हैं और आगे की उन्नति के पथ में खड़ी हो जाती हैं। प्रभुत्वशाली श्रेणी लोगों की संस्कृति, शिक्षा, विधान और रस्म व रवाज को वश में रखती है परन्तु अपनी श्रेणी के प्रभुत्व को सदा कायम रखती है। विशेषतः उस अवस्था में जब कोई नई श्रेणी उसके प्रतिरोध के लिये तैयार हो जाती है और अपने अधिकारों की मांग करती है। साम्यवादियों के निकट वे समस्त सरकारें भी, जो गणतन्त्री कहलाती हैं श्रेणीगत प्रभुत्व से शून्य नहीं हैं। यद्यपि वह बड़ी चतुरता से उस प्रभुत्व को छिपाने का प्रयत्न करती हैं। वास्तव में वह सामाजिक या मानवीय गण-तन्त्र नहीं होता। इसकी विशेषतः यह है कि समाज व्यक्तियों में बिखर जाता है। साम्य केवल मुंह से कहने को हो जाता है और प्रभुत्व सम्पन्न श्रेणी एक प्रबल पूंजी पति सरकार बन जाती है, जिसके

मुकाबले में व्यक्ति और बटी हुई छोटी छोटी श्रेणियां सर्वथा विवश होती हैं। प्रभुत्व सम्पन्न श्रेणी की कार्यवाहियों को देखना हो तो उस समय देखना चाहिए जब कि किसी दूसरी श्रेणी को संगठित करने की चेष्टा की जाती हो। उस समय ये नाम मात्र की गण तन्त्री सरकारें इस प्रकार की संस्थाओं या सभाओं को निर्दयता से कुचल देती हैं।

रूस में प्रारम्भ ही से मजदूरों की शासन व्यवस्था सोवियत के रूप में स्थापित की गई। मजदूरों की यूनियन से यह सर्वथा पृथक चीज थी, यद्यपि यूनियनों के सुयोग्य और प्रमुख्य लोगों ने बाद में सोवियतों में भाग लिया। १९१७ ई० में करेन्स्की के समय में सोवियतों की शक्ति बहुत बढ़ गई और लेनिन के युग में और भी उन्नति हुई। क्राँति से पहले सोवियतों में केवल मजदूर सम्मिलित थे, बाद में सिपाही और मल्लाह सम्मिलित हुए। अन्त में किसान भी सम्मिलित हो गये, परन्तु किसानों को प्रतिनिधित्व का अधिकार नहीं दिया गया, जैसा कि मजदूरों को दिया गया। क्योंकि मजदूरों को वहाँ समुन्नत श्रेणी समझा गया। शिक्षित लोगों को भी सम्मिलित होने की आज्ञा दी गई। परन्तु जो शिक्षित लोग पूंजीपतियों के नौकर थे, उन्हे इस अधिकार से वंचित रखा गया। प्रारम्भ में धनाढ्य जमींदारों को सम्मिलित किया गया था परन्तु बाद को इनमें से अधिकाँश को निकाल दिया गया। जो लोग दूसरों की मजदूरी पर निर्वाह करते हैं या किराया की आय पर या जार के समय के अधिकारी (अफसर) हैं, या पादरी हैं, इन सबको सोवियत से बाहर रखा गया है। परन्तु इनमें कुछ विशेष व्यक्तियों को अधिकार दे दिया गया। वास्तव में जिन लोगों को मतदान (वोट) से वंचित रखा गया है, उनकी संख्या बहुत कम है अर्थात् वयस्क व्यक्तियों का ३·७ अंश। जिस नियम के अनुसार कुछ श्रेणियों या व्यक्तियों को मतदान के अधिकार से वंचित किया गया है वह यह है कि जो श्रेणियाँ

पाँचवां परिच्छेद

समाजवादी सोवियत और गणतंत्र संघ

दिसम्बर १९२२ ई० में समाजवादी सोवियत गणतंत्रों का संघ स्थापित हुआ। इस संघ के संस्थापन से पहले रूस में चार गणतन्त्र थे (१) रूसी समाजवादी सोवियत गणतन्त्र (२) यूक्रेन (३) श्वेतरूस (४) ट्रिनी काकेशिया। ये चारों पृथक पृथक गणतंत्र थे। परन्तु एक दूसरे से संयुक्त थे और प्रायः मामलों में उनके मध्य समझौते या प्रति श्रुतियां थीं। इन चारों ने पृथक पृथक रूप में अपनी कांग्रेसों में संयुक्त या सम्मिलित होने का निश्चय किया और संघ (यूनियन) का संविधान बनाने के लिये प्रतिनिधि चुने। १९२५ ई० में दो और गणतन्त्र इस संघ में सम्मिलित हो गए अर्थात् तुर्कस्तान और अजबकस्तिान, जिनमें कई एक गणतंत्र पहले से सम्मिलित थे और इस प्रकार संघ में नौ गणतन्त्रों का समावेश हो गया। जिनके नाम ये हैं—क्रेमिया, तातार. बश्कीर, बोरेट मंगोलियन, क़ाख़ेज, कारेलियन, दाग़स्तान, लाकूत और जर्मन वाल्गा गणतंत्र।

ट्रिनीकाकेशिया की फेड्रेशन में तीन गणतन्त्र सम्मिलित हैं—आज़र बायजान, आरमेनिया और जार्जिया। इन पृथक पृथक गणतन्त्रों के अतिरिक्त संघ में कुछ और भी स्वतन्त्र प्रदेश सम्मिलित हैं। अस्तु, एक फेड्रेशन में ऐसे बारह प्रदेश (इलाके) हैं। ये सब प्रदेश आन्तरिक रूप में स्वतन्त्र

हैं, केवल उन मामलों को छोड़ कर, जिनके अधिकार संघ को सौंप दिए गए हैं। जैसे बाहरी अर्थात् विदेशी सम्बन्धों का मामला या संघ (यूनियन) में नये गणतन्त्रों के सम्मिलित करने का मामला, कर लगाने का अधिकार और व्यापारिक समस्याएं आदि। संघ के संविधान की धारा चार में लिखा है कि यह उन प्रदेशों का स्वयं प्रस्तावित व स्वीकृत संघ है जो प्रत्येक प्रकार से समान दर्जा रखते हैं और प्रत्येक गणतन्त्र को यह अधिकार है कि वह जब चाहे संघ से पृथक हो जाए। संघ की वैधानिक व्यवस्था या प्रबन्ध दूसरे कानूनों की भांति बदला जा सकता है अर्थात् वह लचकदार है और नई परिस्थियों के अनुसार उसमें परिवर्तन किये जा सकते हैं। इसमें जातीय या राष्ट्रीय मतभेद को स्वीकार किया गया है और विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों को समुन्नत करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त है। भूतपूर्व समय के शासन काल में शासक अपनी भाषा और संस्कृत को उन समस्त जातियों में, जो उसके आधीन थी, बल पूर्वक प्रचलित किया करता था परन्तु अब यह बात नहीं है।

सबसे उच्च अधिकार अखिल संघ कांग्रेस को प्राप्त हैं। संघ की परिषद् (यूनियन कौंसिल) का चुनाव प्रत्येक गणतन्त्र के अनुपात-युक्त प्रतिनिधित्व पर आधारित है और जातियों की परिषद् में प्रत्येक गणतन्त्र से पांच पांच सदस्य लिए जाते हैं और एक एक सदस्य स्वतन्त्र प्रदेशों से। अस्तु रूस की सबसे बडी यूनियन के भी उतने ही प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हैं जितने छोटे गणतन्त्रों के।

अखिल संघ कांग्रेस (आल यूनियन कांग्रेस) की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति लगभग एक पार्लिमेण्ट के समान होती है। कांग्रेस में ग्यारह सौ से अधिक सदस्य हैं और उसका अधिवेशन प्रत्येक छटे मास में होता है। समस्त कानून कमेटी के दोनों चेम्बरों में पास हो कर तब वे लागू होते हैं

अर्थात् जातियों की कौंसिल को समस्त महत्त्वपूर्ण समस्याओं के निपटारे अथवा समाधान का अधिकार प्राप्त है। अतः यह दावा किया जाता है कि रूस के विभिन्न स्वतन्त्र गणतन्त्रों को न केवल अपने आर्थिक मामलों और सामाजिक जीवन तथा संस्कृति को उन्नत करने के पूरे पूरे अवसर प्राप्त हैं, प्रत्युत संघ की साधारण शासन व्यवस्था में उन्हें निश्चयात्मक भाग लेने का भी अधिकार प्राप्त है।

समस्त सोवियतों और उनकी कार्यकारिणी समितियों का चुनाव प्रतिवर्ष होता है। केवल अखिल संघ कांग्रेस का चुनाव दूसरे वर्ष किया जाता है।

अखिल संघ कांग्रेस विभिन्न विभागों के उच्च पदाधिकारियों और कॅमिस्सरों को चुनती है। और इस प्रकार कॅमिस्सरों की यूनियन कौंसिल का गठन होता है। इस कौंसिल को मन्त्रि-परिषद् कहना चाहिए।

प्रत्येक गणतन्त्र की अपनी सोवियत कांग्रेस और केन्द्रीय कार्य-कारिणी समिति तथा कॅमिस्सरों की कौंसिल होती है। केवल कुछ विभाग, जैसे विदेशी मामलों का विभाग आदि संघ सरकार (यूनियन गवर्नमेण्ट) के लिए सुरक्षित रखे जाते हैं। कुछ विभाग ऐसे हैं, जो संघ में और प्रत्येक गणतन्त्र में विद्यमान हैं, जैसे उच्च आर्थिक कौंसिल, मालियात (लगान) तथा लेबर (श्रम) के विभाग और कई विभाग केवल गणतन्त्रों ही में होते हैं, जैसे कृषि, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य रक्षा और सामाजिक भलाई के विभाग।

प्रत्येक गणतन्त्र की नींव, गाँव या कारखाने से सीधे या ना-सीधे निर्वाचन के द्वारा आरम्भ होती है। अर्थात् गाँव की सोवियत, देहाती डिस्ट्रिक्ट सोवियत काँग्रेस के लिए प्रतिनिधि और कार्यकारिणी समिति के सदस्य चुनती है और डिस्ट्रिक्ट सोवियत प्राँतों की सोवियत काँग्रेस के लिये तथा

प्रान्तों की सोवियत काँग्रेस गणतन्त्री काँग्रेस के लिये। शहरों में डिस्ट्रिक्ट सोवियतों और प्राँतीय सोवियतों के लिये सीधा चुनाव होता है। कई शहरों को काँग्रेस में सीधे प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त है।

देहाती सोवियतों में देहात और जिलों में किसानों को बड़ी भारी बहुमत प्राप्त है। परन्तु उच्च सोवियत कांग्रेसों में साम्यवादियों का अनुपात बढ़ता जाता है और समस्त उच्च अधिकारों के पद उनके कब्जे में हैं। अखिल रूसी सोवियत में तो पूर्णतः उन्हीं का अधिकार अथवा प्रभुत्व है।

साम्यवादी दल को संविधान में यद्यपि कोई सरकारी सत्ता या हैसियत प्राप्त नहीं है परन्तु वास्तव में सोवियत सरकार का स्तम्भ वही है। यह बड़ी सुदृढ़ व्यवस्था है, जिसमें मजदूरों की श्रेणी का प्रगतिशील अंश सम्मिलित है. जिसका विशेष उद्देश्य और कार्यक्रम है। वह भली प्रकार संगठित है और सैन्य अनुशासन अपने पुराने गुणों के साथ बढ़ता जाता है। साम्यवादियों का यह विश्वास है कि वे आनेवाली मानवी पीढ़ी के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं, परन्तु जोश धार्मिक व्यक्तियों के विश्वास की भाँति है। यह दल शिक्षित लोगों और कृषकों को भी अपने क्षेत्र में समाविष्ट करता है। परन्तु उन लोगों का, जो मजदूरों के पूर्ण स्वतन्त्र शासन की फिलास्फी को समझते हैं, इस दल में सम्मिलित होना और इसके नियमों पर दृढ़ रहना, सुगम नहीं है। समय समय पर उन सदस्यों को निकाल दिया जाता है, जिसका सम्मिलित रहना हानि-कर समझा जाता है। दल की शक्ति और अधिकार का अनुमान इस बात से हो सकता है कि आज के युग में सोवियत यूनियन के भीतर सबसे बड़ा प्रतिष्ठित तथा शक्ति शाली व्यक्ति स्टालिन है, जो दल का जनरल सेक्रेटरी (प्रधान मंत्री) है, यद्यपि सरकारी तौर पर उसे और कोई बड़ी पदवी प्राप्त नहीं।

बहुत से बोर्ड और कमेशन हैं, जो विभिन्न कर्तव्यों का पालन करते हैं। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण उच्च आर्थिक कौंसिल है, जिसके साथ बहुत सी शाखाएं संयुक्त हैं। लेबर यूनियन आदि भी सरकार के आवश्यक अङ्ग हैं। एक बड़े उद्योग के मजदूर एक यूनियन में सम्मिलित होते हैं, चाहे वे खानों में काम करते हों या बढ़ई या मिस्तरी हों। कोआपरेटिव सोसायटियों की संस्थाएं या संगठन भी हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं की सभाएं और युवकों की लीगें आदि भी हैं।

लेबर यूनियन (श्रमक संघ) और कारखानों की कमेटियाँ आदि कारखानों में मजदूरों के हित की देखभाल करती रहती हैं, परन्तु किसी कारखाने के मैनेजर या मैनजरों के बोर्ड की नियुक्ति अखिल एशिया सोवियत की ओर से सुप्रीम (उच्च) आर्थिक कौंसिल करती है। यदि मैनेजर और मजदूरों के मध्य झगड़ा हो तो झगड़े निपटाने वाली कमेटी उसका निर्णय करती है और अपील होती है। मैनेजर या तो निकाल दिया जाता है या दूसरे स्थान पर तबदील कर दिया जाता है।

साराँश यह है कि सोवियत की शासन पद्धति या संविधान व्यवस्था के ये संक्षिप्त पहलू हैं। निश्चित रूप से यह संविधान इस उद्देश्य से बनाया गया है कि समस्त अधिकार मजदूरों के हाथ में रहें और पूंजीपतियों या उन लोगों का, जो पूञ्जीवाद को वापस लाना चाहते हैं, सर्वथा कोई हस्तक्षेप नहीं। इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है कि आया पूँजीवाद कैसे गुप्त रूप में किसी समय प्रकट होगा या नहीं। परन्तु पूंजीवाद के विरुद्ध युद्ध करने में पूञ्जीवादी देशों के गणतन्त्र से बाल्शेविक लोग धोखा नहीं खाते।

साम्यवादियों की पहली अन्तर्राष्ट्रीय घोषणा में, जो मार्च १९१९ ई० में लेनिन, ट्राटस्की और दूसरे नेताओं के हस्ताक्षरों से प्रकाशित हुई थी, ये शब्द लिखे थे—"कि मजदूरों से, जो पूंजीवाद के साथ जीवन मरण की

लड़ाई लड़ रहे हैं, यह माँग करना कि वे पूंजीपतियों के गणतन्त्र को स्वीकार कर लें, सर्वथा ऐसा होगा जो डाकुओं के विरुद्ध अपना जीवन बचाने के लिए लड़ रहा है, उसे यह कहा जाए कि वह लड़ते हुए ऐसे नियम स्वीकार करे जो उस के शत्रु ने निश्चित किये हों और शत्रु स्वयं उनका पालन न करता हो।

आजकल रूस में मज़दूरों का निरंकुश शासन है। परन्तु हमें बताया जाता है कि यह अनिश्चित स्थितियों का समय है और उस आने वाले युग के लिये तैयारी की जा रही है कि वर्गगत या श्रेणीगत युद्ध सर्वथा बन्द हो जाएगा, और केवल एक ही श्रेणी होगी तथा सरकार नाम मात्र रह जाएगी। सच्चे साम्यवाद का वह युग होगा, जब साम्यवादियों की घोषणा के अनुसार पूंजी का प्रभुत्व दूर हो जाएगा, लड़ाइयां असम्भव हो जाएंगी, देशों की सीमाएं मिट जायेंगी और समस्त संसार आपस की सहायता का एक सांझे मित्र का रूप धारण कर लेगा और उस समय सच्ची स्वतन्त्रता तथा मानव जाति की बरादरी स्थापित हो जाएगी।

छटा परिच्छेद

रूस के सम्बन्ध में कुछ पुस्तकें

मुझे याद है कि मैं एक जलसे में, जिसका निमंत्रण वैज्ञानिकों और प्रोफेसरों की ओर से दिया गया था, सम्मिलित हुआ। उस जलसे में बहुत से देशों के लोग उपस्थित थे। उसमें विभिन्न भाषाओं में भाषण हुए। मुझे स्मरण है कि एक युवक विद्यार्थी ने भी भाषण किया था। वह दक्षिणी अमेरिका के पोरोगोई नामक स्थान से आया था। उसको उसके देश के विद्यार्थियों ने इस देश की यात्रा के लिए भेजा था और जो कुछ उसने देखा उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने स्पेनी भाषा में बड़े चित्ताकर्षक ढंग से भाषण किया। उसने कहा कि वह सोवियत रूस के लाल सितारे को अपने हृदय में अंकित करके अपने दूर के देश में ले जाएगा और सामाजिक स्वतन्त्रता के संदेश अपने साथियों को देगा। उस युवक के हृदय पर बहुत ही प्रभाव पड़ा। फिर भी बहुत से व्यक्ति ऐसे भी हैं, जो हमसे कहते हैं कि रूस अनार्किस्टों अर्थात् विप्लवी लोगों का देश है और वहाँ दुखों तथा आपत्तियों के सिवा और कुछ नहीं है। बाल्शेविक लोग खूनी और कातिल हैं, जो मानव समाज की सीमा के बाहर चले गये हैं। इनमें से कौन सच्चा है ? सम्भव है कि एक सीमा तक दोनों सच्चे हों। मैं कोई निर्णय या फैसला नहीं दूंगा तथा चूड़ान्त अभिमत (राय) प्रकट नहीं करूंगा। मैं भी प्रभावित होने वाला व्यक्ति हूँ और स्वीकार करता हूँ कि मास्को से जो प्रभाव मैं साथ लाया,

वे इस पक्ष में हैं और जहाँ तक मैंने अध्ययन किया, उससे मेरे विचारों का
समर्थन हुआ है यद्यपि बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिनको मैं नहीं समझा और
बहुतसी ऐसी हैं, जिनको मैं पसन्द नहीं करता। मैं केवल वे बातें लिखूँगा, जो मैंने
देखी हैं और यह काम दूसरे लोगों पर छोड़ता हूँ कि वे अपने परिणाम स्वयं
निकाल लें। परन्तु इस बात का ध्यान रखें कि जो कुछ मैंने देखा, वह इस
का अत्यन्त ही छोटा सा अंश था, जो मुझे देखना चाहिए था।

प्रोफ़ेसर के० टी० शा ने अपने भाषणों के एक क्रम में (१९१७ से
१९२७ ई० तक रूसी अनुभव) जो कुछ वर्णन किया है वह बहुत कम
विश्वसनीय है। यद्यपि इसमें घटनाओं को रङ्ग दिया गया है जो लोग रूस
की घटनाओं या स्थितियों से रुचि रखते हैं, उनको चाहिए कि वे उसके
सम्बन्ध में प्रत्येक प्रकार की पुस्तकें पढ़ें, जिनसे घटनाओं या स्थितियों के
दोनों पहलू ज्ञात हो सकें। मुझसे प्रायः प्रश्न किया गया है कि रूस के
सम्बन्ध में कौनसी पुस्तकें पढ़नी चाहिएं। जो पुस्तकें मेरी दृष्टि से गुजरी
हैं, उनमें से कुछ का उल्लेख करता हूँ। अंग्रेजी में बहुत सी पुस्तकें हैं,
जिनमें बाल्शेविक सरकार पर टीका टिप्पणी की गई है। बाल्शेविकों के
अधिकार के समय में अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें बहुत कम हैं। ऐसी पुस्तकें
अधिकतर जर्मन और अन्य भाषाओं में हैं। परन्तु वर्तमान ही में अंग्रेजी
में कुछ छोटी छोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें साम्यवाद के बहुत से
पहलुओं पर आपत्तियाँ उठाई गई हैं परन्तु उसके आधारभूत नियमों और
सफलताओं पर सहानुभूति प्रकट की गई है। बाल्शेविकिज़्म का अध्ययन यदि
भली प्रकार से करना हो तो उसकी कम्यूनिज़्म (साम्यवाद) के प्रारम्भ की
थ्योरी (सिद्धाँत) और उसके विकास की जानकारी प्राप्त करने के पश्चात्
करना चाहिए। बलेन्बोई के कथानुसार अजानकारी और साम्यवाद एक
स्थान पर नहीं रह सकते और यह बात विचारनीय है कि आजकल भी साम्य-

वादी लोग इस बात का बड़ा चाव रखते हैं कि वे अपने नियमों अथवा सिद्धान्तों का प्रत्येक व्यक्ति के सामने प्रचार करें। यदि वे किसी व्यक्ति को अपना सहमत बनाना चाहें तो वे मार्क्स की एक पुस्तक "कैपीटल" के कुछ वाक्य सुनाते हैं, जो साम्यवादियों की बाइबल समझी जाती है; या लेनिन और बखारन की पुस्तकों पर, जो लेख एंजल ने लिखे हैं, उनके हवाले प्रस्तुत करते हैं। परन्तु इतनी बड़ी पुस्तकों के पढ़ने के लिये आयु पर्याप्त नहीं है। बेलजियम कालेज आक्सफोर्ड के मास्टर ए० डी० लेण्डजे ने कार्ल मार्क्स की पुस्तक कैपीटल पर एक छोटी सी पुस्तक लिखी है, जो आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस में छपी है, उससे मार्क्स के विचारों के समझने में सहायता मिलती है। यह एक आलोचनात्मक पुस्तक है। ऐसी ही सालेड़ की एक पुस्तक है, जिसका नाम है "कार्ल मार्क्स और मॉडर्न सोशलिज्म" जो मैकमिलन ने प्रकाशित की है। साम्यवादियों के दृष्टिकोण को सर्वोतम रूप में बखारन ने अपनी पुस्तक "ऐतिहासिक भौतिकवाद(हिस्टारिक मैटरियलिज्म)" में व्यक्त किया है। इस पुस्तक को जार्जएलिन और अनोन ने प्रकाशित किया है। इसकी पुस्तक "पूंजीपतियों का आर्थिक दृष्टिकोण" (मुद्रक—मार्टन लारेंस) और बोगंडोनोफ की पुस्तक "शार्ट कोर्स आफ एकॉनोमिक सायंस" जिसे लन्दन के साम्यवादी दल ने प्रकाशित किया है, ये दोनों पुस्तकें रूस में शिक्षा की पाठ्य पुस्तकों के रूप में पढ़ाई जाती हैं। लेनिन की भी कुछ पुस्तकें अंग्रेजी में मिलती हैं। परन्तु मेरी दृष्टि से केवल एक पुस्तक गुजरी है, जिसका नाम "एम्पिरिलिज्म और पूंजीवाद का अन्तिम स्टेज" है। इसे लण्डन के साम्यवादी दल ने प्रकाशित किया है। जिन लोगों को इस वाद प्रतिवाद में अभिरुचि है, जो बाल्शेविकों और जर्मन कार्लकाटस्की में चला आता है, जो यद्यपि बाल्शेविकों पर प्रबल आलोचना करते हैं, परन्तु अपने आपको मार्क्स का सच्चा अनुयायी समझते हैं, उन्हें काटस्को की

पुस्तक "लेबर रेवोल्यूशन" पढ़नी चाहिए। (यह पुस्तक जार्ज एलिन वालों ने छापी है)। लेनिन ने इस पुस्तक का उत्तर दिया है और ट्राटस्की ने भी।

प्रोफ़ेसर लास्की की पुस्तक "कम्यूनिज्म" बड़ी योग्यता से लिखी गई है, जिसमें कम्यूनिज्म के सिद्धान्तों और कर्त्तव्यों (वा क्रियात्मक बातों) पर आलोचना की गई है, जिसका उत्तर ब्रिटेन की कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से दिया गया है। परन्तु कम्यूनिस्ट पार्टी की पुस्तक मेरी नज़र से नहीं गुज़री।

ये पुस्तकें प्रत्युत इनमें से कुछ पुस्तकें जिज्ञासु के हृदयंगम करा सकती है कि बाल्शेविकों का उद्देश्य क्या है। वादविवाद की तो और भी पुस्तकों का उल्लेख आवश्यक है। एक ट्राटस्की की पुस्तक "ब्रिटेन किधर जा रहा है" और नार्मन एंजेल की पुस्तक "क्या ब्रिटेन को मास्को के पथ पर चलना होगा?" (प्रकाशक—नोवल डगलस) आर० डब्ल्यू पोस्ट गेट की पुस्तक "बाल्शेविक थ्योरी" भी एक अच्छी पुस्तक है और उसमें सोवियत शासन पद्धति पर आलोचना की गई है। परन्तु यह पुस्तक अब दुर्लभ है यदि १९२० के बाद उसका नया संस्करण प्रकाशित न हुआ तो।

यह तो रहा दृष्टिकोण या सिद्धान्त का प्रश्न। परन्तु रूसी क्राँति के बड़े भारी नाटक और भीतरी शक्तियों के समझने के लिए, जिनसे यह भारी परिवर्तन हुआ, केवल सिद्धान्त ही का अध्ययन पर्याप्त नहीं है। अक्तूबर की क्राँति, जो निःसन्देह विश्व के इतिहास में एक बड़ी घटना थी, प्रत्युत प्राथमिक फ्राँस क्राँति के बाद सबसे बड़ी घटना कहनी चाहिए, वह अत्यन्त दिलचस्प है। क्राँति की आँखों देखी घटनाएं एक अंग्रेज और एक अमेरिकन ने लिखी हैं। अंग्रेज का नाम फ़्लेसप्राइस है जो मानचेस्टर गार्डियन का रूस में संवाद-दाता था। उसने अपनी पुस्तक "रूसीक्राँति के सम्बन्ध में मेरे संस्मरण" में उन दिनों के एक एक दिन की विस्तृत कहानी लिखी है।

मार्च की क्राँति से लेकर करेंस्की के हाथ में सत्ता आने तक, उसने सारी घटनायें लिखी हैं कि किस प्रकार से मास्को में दंगा या बलवा आरम्भ हुआ और ज़ार के शासन की शताब्दी गत शृङ्खलाएं तोड़ दी गईं। लेनिन किस प्रकार रूस में आया और सोवियत के अधिवेशन में किस प्रकार उसकी हँसी उड़ाई गई और फिर उसी सोवियत ने कुछ महीनों के पश्चात् उसे बहुत बड़े प्रदेश का डिक्टेटर नियुक्त किया। करेंस्की के प्रतिक्रियावाद, सोवियतों के बढ़ने अथवा शक्ति सम्पन्न होने तथा उनकी विजय और अन्त में बाल्शेविकों की सफलता की समस्त घटनाओं का उसने वर्णन किया है। उसने संघर्ष के उन महीनों का उल्लेख किया है जबकि भीतरी और बाहरी शत्रुओं के विरुद्ध आँदोलन तथा प्रयत्न जारी थे और जबकि ऐसे समय में भी सोवियत की शक्ति केवल धैर्य के कारण अक्षुण रही, जिस समय में सारी आशाएं टूट चुकी थीं।

दूसरी पुस्तक जानरीड नामक एक अमेरिकन संवाददाता ने लिखी, जिसका नाम है "दस दिन, जिन्होंने संसार को हिला दिया।" उसमें अक्तूबर मास की क्राँति के पहले दस दिनों की घटनाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। पढ़ने वाला कई घटनाओं को पढ़कर बहुत दुःखी या शोकग्रस्त होता है और आश्चर्य होता है कि ऐसा चमत्कार देखने में आया और क्राँतिकारियों को सफलता प्राप्त हुई। इन लोगों के दल की प्रशंसा करनी पड़ती है, जो वर्णनातीत बाधाओं के मध्य अपना कर्तव्य पालन करने से न चूके और युद्ध तथा विद्रोह के समय में जबकि प्रत्येक ओर से मौत और विनाश का सामना था, उन्होंने विप्लव और अशान्ति में, एक समाजवादी शासन पद्धति का निर्माण किया। क्रांति के चौथे दिन भी उन्होंने इतना अवकाश निकाल लिया, जबकि बाजारों में गोलियाँ चल रही थीं कि मजदूरों के लिए आठ घण्टे का दिन निश्चित करें और शिक्षा के खुले प्रसार की नीति को अपनाएं तथा एक सप्ताह के भीतर भीतर उन्होंने अल्प संख्या

वालों की समस्या को निपटा लिया, 'जो भारत में हमें प्रतिक्षण परेशान रखती हैं। उन्होंने उसी दौरान में घोषणा की—

(१) रूस निवासियों को समता (साम्य) और स्वतन्त्रता प्राप्त है।

(२) रूस निवासियों को अपनी इच्छा के अनुसार शासन व्यवस्था स्थापित करने का अधिकार प्राप्त है, चाहे उनमें से देश के कुछ प्रदेश पृथक पृथक सरकारें कायम करें।

(३) जातीय, धार्मिक और धर्म के अनुसार प्राप्त विशेष अधिकारों तथा अधिकारों की प्रवञ्चना की समाप्ति होती है।

(४) जातिगत अल्प संख्या वालों की और रूस में बसने वाले विभिन्न बोलियाँ बोलने वालों की स्वतन्त्रता पूर्वक उन्नति की व्यवस्था होगी।

———

सातवां परिच्छेद

लेनिन

मैं कई पुस्तकों का उल्लेख कर चुका हूँ, जिनके अध्ययन से रूस की क्रांति के कारणों के समझने में सहायता मिल सकती है। समस्त बड़ी बड़ी क्रांतियों की भाँति रूसी क्रांति के कारण भी अत्यन्त गंभीर थे अर्थात् मनुष्यों की बहुत सी पीढ़ियां शताब्दियों से कष्ट में थीं। बुद्धिमान कहते हैं कि संसार पर आर्थिक तत्वों का राज है और राजनीति अर्थनीति की कठ पुतली है। उसने भी इतिहास के इस पाठ को दुहराया कि मनुष्य भाग्य को ढालते हैं और कई बार एक व्यक्ति की संकल्प-शक्ति करोड़ों व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन उत्पन्न कर देती है। अस्तु क्रांति पैदा करने वालों में कई व्यक्तियों की स्थितियों का अध्ययन अत्यन्त लाभदायक होगा, जिन्होंने गड़बड़ और विप्लव में से एक नया और सुदृढ़ रूस पैदा किया। उन निर्वासित व्यक्तियों ने, जो फौजी मामलों का कुछ भी ज्ञान नहीं रखते थे, बहुत बड़ी बड़ी विजयी सेनायें तैयार कीं और जिन्हें राजदूत के काम का अनुभव प्राप्त न था, उन्होंने दूसरे देशों के पारदर्शी और अनुभवी राजनीतिज्ञों के साथ सफलतापूर्वक मामले तय किये, जिन्हें व्यापार और देश की शासन व्यवस्था की कोई जानकारी न थी, उन्होंने राज्य की विशाल मशीनरी को चलाया, जिसके द्वारा सम्पूर्ण देशीय उपज और उसकी बांट का काम सम्पन्न किया। इन क्रांतिकारी नेताओं में सबसे बड़ा नेता लेनिन था।

बहुत से व्यक्ति उसकी प्रशंसा और गुणानुवाद करते रहे हैं। लेनिन की जीवनी के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक पुस्तक मेरी दृष्टि से नहीं गुज़री। एक पुस्तक, जो भारतीय पाठकों के लिए रोचक हो सकती है वह रेनी फिलप मिल्लर की पुस्तक 'लेनिन और गांधी' है। यह पुस्तक सरसरी तौर पर लिखी गई है और इससे पूरे हालात का पता नहीं चलता। परन्तु इसमें लेनिन के स्वभाव और गुणों का ठीक ठीक वर्णन किया गया है। लेनिन के जीवन का सँक्षिप्त वर्णन एमल लडविग की पुस्तक "जीनियस एण्ड कैरक्टर" में मिलता है।

लेनिन का अवसान हुए चार वर्ष बीत गये हैं। उसकी आयु पचास वर्ष से कुछ ऊपर थी, जिनमें तीस वर्ष लगातार तैयारी और दौड़ धूप या संघर्ष में व्यतीत हुए, और जिनमें मुकद्दमे-बाजियाँ, फरारी और साइबेरिया में निर्वासन भी सम्मिलित हैं। अन्त में उसे विजय प्राप्त हुई। परन्तु आयु भर के खतरों और कठिनाइयों को लांगने के बाद वह गोली लगने से घायल हुआ। इसी घाव का परिणाम उसकी मृत्यु थी। परन्तु मरने से पहले वह समस्त कठिनाइयों तथा आपत्तियों पर विजय प्राप्त कर चुका था और वह अपनी विजय के अनुभव के पश्चात् मरा। आज उसका शव मम्मी के रूप में मास्को के रमणीय लाल चौक में एक साधारण मकबरे के भीतर, जो क्रेमलिन दुर्ग के नीचे अवस्थित है, रखा हुआ है। यह जान पड़ता है कि वह सुख की नींद सोया हुआ है और यह विश्वास करना कठिन है कि वह मर गया है। लोग कहते हैं कि जब वह जीवित था, तो कुछ सुन्दर न था। वह सर्वथा साधारण रूप रंग का व्यक्ति था। ढंग-संग से रूसी प्रतीत होता था। परन्तु वह शव अत्यन्त सुन्दर है और उसके चेहरे से शांति व सन्तोष टपकता है। उसके होठों पर मुसकुराहट की स्पष्ट छाप है जिससे विदित होता है कि उसने अत्यन्त कठिन कार्य किये हैं और

सफलता प्राप्त की है। वह वर्दी पहने हुए था और एक हाथ की मुट्ठी कुछ बन्द है मुर्दा अवस्था में भी वह डिक्टेटर जान पड़ता है।

लेनिन की समाधि की यात्रा के लिये दूर दूर से लोग आते हैं। हर शाम को कुछ घण्टों के लिये समाधि के द्वार खुल जाते हैं और किसानों तथा मजदूरों की पंक्तियां क्रमशः उसकी कब्र के सामने से गुजरती हैं, जिनके लिए वह जीता रहा और मरा और जो उससे स्नेह रखते थे। ईसाई धर्म रूस में ह्रास को प्राप्त कर रहा है परन्तु लेनिन की सब स्थानों पर पूजा होती है। प्रत्येक दुकान प्रत्युत प्रत्येक कमरे में उसका चित्र या कान्स्त विद्यमान है। मैक्सम गोर्की लिखता है कि वह किसी धार्मिक युग में होता तो उसे वली समझा जाता और हिन्दुस्तान में तो अवश्य ही उसे अवतार समझा जाता। परन्तु सोवियत के क्षेत्रों में वलियों या महात्माओं का कोई सम्मान नहीं और रूसियों ने अपने में से एक समझकर स्नेह वश उसको सर्वोच्च सम्मान दिया है। वह प्रत्येक रूसी के निकट एक भाई और एक साथी था जो उनकी परिस्थितियों को अच्छी तरह जानता था और उनकी भलाई के लिये प्रयत्न करता था और उन्हें कोई कष्ट होता, वह उसी के पास दौड़ कर जाते थे।

लेनिन का उल्लेख करते हुए गोर्की लिखता है—मैंने वे आँखें देखी हैं जो लोगों के कष्टों के संताप से सदा भीगी रहती थीं। यह दुःख अन्तिम स्वाँस तक उसके हृदय से दूर न हुआ। उसने उसे उग्ररूप दे दिया और उसकी संकल्प शक्ति को इतना दृढ़ कर दिया कि वह पूर्ण धैर्यवान रहा और अन्त में उसने सफलता प्राप्त की। परन्तु अपने देश-भाइयों के कष्ट के सन्ताप ने उसे उदासीन, शोक ग्रस्त या चिड़चिड़ा नहीं बना दिया था। उसका हृदय जीवन से किनारों तक भरा हुआ था और अत्यन्त चिन्ता तथा शोक की घड़ियों में भी वह खुलकर ठहके लगा सकता था।

जब लेनिन सतरह वर्ष का था तो उसका बड़ा भाई जार पर घातक आक्रमण करने के अभियोग से फाँसी पर लटका दिया गया था। इस घटना का उसके हृदय पर बड़ा प्रभाव पडा। परन्तु उस समय भी उसका यह विचार था कि हिंसात्मक या विप्लवात्मक तरीकों से कोई लाभ नहीं प्राप्त हो सकता। उसने कहा कि इस प्रकार से हमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। यह ठीक तरीका नहीं है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं था कि उसने प्रयत्नों से हाथ खींच लिया और उसने अपने तरीक़े पर तैयारी आरम्भ की। यह बड़ा लम्बा और थका देने वाला मार्ग था। परन्तु मौन रहकर बड़े धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ तीस वर्ष तक उसने इसके लिए निरन्तर कार्य किया। वह मज़दूरों का नेता एकाएक ही नहीं बन गया था। उसने जनता में भाषण करने या लेख लिखने की ओर बहुत कम ध्यान दिया। प्रत्युत जनता की परिस्थितियों के समझने तथा उनकी छान बीन करने में व्यस्त हो गया। बाद के वर्षों में प्रभावशाली भाषण करने वालों और वाग्मी व्यक्तियों से वह बहुत घृणा करता था। बहुत सी बातें बनाने वालों से वह घबराता था। क्योंकि इससे क्रियात्मक कार्यों में अन्तर पड़ता है। उसके निकट कर्म ही सब कुछ था। उसका विचार था कि क्रांति की योजनाएँ केवल कागजों ही पर नहीं लिखी रहनी चाहिएं प्रत्युत उन्हें कार्यान्वित किया जाना चाहिए। सोवियत एशिया के अस्तित्व को बनाए रखने के लिये एक साधारण सुझाव या योजना को कार्यान्वित करना भी दस प्रस्ताव पास करने से अच्छा है। गोर्की के कथनानुसार लेनिन की वीरता में प्रत्येक्ष कोई चमक दमक न थी। उसमें वीतराग या संसार से विरक्त लोगों का उत्साह और जोश था। वह एक क्राँतिकारी था जो इसी संसार में न्याय होने की संभावना पर विश्वास रखता था। वह उस व्यक्ति की भाँति वीर पुरुष था, जिस ने अपने उच्च उद्देश्य के लिए समस्त सांसारिक सुखों का त्याग कर दिया।

अत्यन्त कष्टों के समय वह बड़ा शान्त रहता था और जिस समय सरकार घोर संकट में पड़ी थी तब भी वह छोटी छोटी बातों के विस्तार पर अपना ध्यान देने में विलम्ब न किया करता था। १६२१ ई० के संकट पूर्ण समय में, जबकि मास्को पर शत्रुओं ने आक्रमण करने का इरादा किया था और प्रायः लोगों का विचार था कि सोवियत वालों की शक्ति की समाप्ति होने वाली है, उस समय लेनिन गाँवों में बिजली का प्रकाश पहुँचाने की चिन्ता में लगा हुआ था और कई क्षेत्रों में शीघ्र ही बिजली का प्रकाश पहुंचा देने का आदेश उसने जारी किया।

लेनिन को अत्यन्त धैर्यवान, दृढ़-संकल्पी और ठंडे हृदय व मस्तिष्क का व्यक्ति समझा जाता था। वह कभी जोश में न आता था और अपने सर्वश्रेष्ट मित्रों की जिद्द के सामने कभी न झुकता था, चाहे उनसे मित्रता टूट ही क्यों न जाए। वह ऐसे सहानुभुति करने वालों की परवाह न करता था, जो उसके कार्य में सक्रिय सम्मिलित न होते थे। वह केवल उन लोगों को पसन्द करता था जो पूरे उत्साह के साथ उसके काम में जुट जाएं और अपना तन मन धन सब कुछ उद्देश्य के लिए बलिदान कर दें। क्राँति विशेषज्ञों को खामोशी और सतर्कता के साथ शिक्षा देकर क्राँति की तैयारियां की गईं। अर्थात् ऐसे व्यक्ति, जिनका पेशा ही क्राँति-कारिता था, वे लोग नहीं जो केवल खयाली सहानुभूति प्रकट करते थे। उसने यह बात समझ ली थी, जिसे हिन्दुस्तान में हमने कुछ-कुछ समझना आरम्भ किया है कि अनुभव शून्य लोगों के लिए, जो अपने दैनन्दन काम से बहुत कम अवकाश निकाल सकते हैं, और जिन्हें कोई विशेष प्रकार की शिक्षा नहीं दी गई है, उन लोगों के साथ युद्ध करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है, जो वर्तमान सरकार के शासन की रक्षा करने के काम में दक्ष हैं और सारा समय अपने काम में लगे रहते हैं। उसने लिखा "कि हमारे

साथियों को पूर्णरूप से सिद्धहस्त होना चाहिए। क्योंकि जब मैं अपर्याप्त तैयारियों का उल्लेख करता हूँ तो मैं स्वयं भी दोष से मुक्त नहीं रह सकता। मैंने उन लोगों के साथ काम किया है, जिन्होंने बहुत कठिन उत्तरदायित्व का बोझ अपने सिर लिया। परन्तु इस अनुभव से हमें बहुत हानि पहुँची कि हम अनाड़ी हैं, जितनी इस बात के स्वीकार करने में मुझे लज्जा आती है उतना ही उन भाड़े के समाजवादियों पर मुझे क्रोध आता है, जो इस बात को समझने में असमर्थ हैं कि हम क्रांतिकारियों को अनाड़ियों के स्तर पर लाने का साहस नहीं कर सकते।

यह बात अधिक सच्चाई के साथ हम में से सब लोगों पर लागू होती है जो राजनीति में अधूरे हृदय से हस्तक्षेप करते हैं।

लेनिन समय को टाल देने के लिये किए गये मिलाप या गठजोड़ में विश्वास नहीं रखता था, जिसकी हमारे देश में बहुत कुछ चर्चा है। १९०३ ई० में लेनिन ने क्रियात्मक कार्यवाही के लिए अनुरोध किया और जब दूसरे लोगों ने न माना तो उसने पार्टी को तोड़ दिया। उस समय ट्राटस्की ने उस पर अभियोग लगाया कि वह पार्टी को तबाह करने वाला है। लेनिन ने इस बात पर जोर दिया था कि पार्टी के नियमों और अनुशासन में यह धारा (नियम) भी सम्मिलित की जाए कि प्रत्येक सदस्य दल के काम में सक्रिय भाग ले। यह काफ़ी नहीं कि वह आर्थिक सहायता दे। दल का अल्पमत यह चाहता था कि केवल आर्थिक सहायता दे और मौखिक सहानुभूति प्रदान करे। परन्तु लेनिन यह बात स्वीकार न करता था। वह केवल कर्म करने की प्रार्थना करता था। परिणाम यह हुआ कि क्रियात्मक काम करने वाले, आर्थिक सहायता देने और जुबानी सहानुभूति रखने वालों से पृथक् हो गए और बाद में जब लेनिन के सामने यह सुझाव रखा गया कि पार्टी के दोनों भागों में गठजोड़ होना चाहिए तो उसने मुसकुराते हुए उत्तर दिया

कि राजनीतिक विरोधियों के साथ मैं एक प्रकार का समझौता करना चाहता हूँ कि उन्हें कुचल देना चाहिए। यह शब्द उसने बिना किसी उत्तेजना के प्रकट किए थे। धीरे धीरे उसके साथी उससे पृथक हो गये। परन्तु उसने तनिक परवाह न की और अपने नियमों अथवा सिद्धाँतों से एक इञ्च भी पीछे न हटा। उसने कहा कि शायद मैं अकेला रह जाऊँ, परन्तु मैं अपनी राय तबदील नहीं करूंगा। मैं सदा अपनी राय का प्रचार करूंगा और सीधा मार्ग ग्रहण करूंगा।

यद्यपि वह बड़ा हटी और कभी न झुकने वाला था, फिर भी कभी आवश्यकता पड़ती तो वह अपनी नीति बदलने पर सहमत हो जाया करता था। लोना करस्की, जो लेनिन का मित्र था और आजकल रूस में शिक्षा-मंत्री है, उसे समय की गति समझने वाले बुद्धिमान की उपाधि से याद करता है। एक बार नियम के सम्बन्ध में समझौता करने के विषय में लेनिन ने लिखा था कि "यह सर्वथा बच्चों की सी बात है," और फिर एक अवसर पर जब उस पर यह आरोप थोपा गया कि वह समाजवाद के एक नियम से मुँह मोड़ रहा है तो उसने लिखा कि तुम मुर्गियों से भी गए गुजरे हो। मुर्गी में यह साहस नहीं होता कि चाक से खिंची हुई रेखा का उलंघन कर सके, परन्तु वह अपने आपको कम से कम यह कहकर सच्ची ठहरा सकती है कि चाक का दायरा किसी दूसरे व्यक्ति ने खींचा है। परन्तु तुमने अपने दायरे (वृत्त) स्वयं बनाये हैं और अब सच्चाई पर दृष्टि रखने की बजाय दायरे की ओर देख रहे हो।

सम्भवतः हिन्दुस्तान में भी हमारी अपनी बनाई हुई चाक की बहुत सी रेखाएँ हैं, जो हमें सच्चाई को देखने से वंचित रखती हैं। लेनिन ने अपने साथियों को १९०५ ई० की असफलता के बाद बहुत आश्चर्य-चकित कर

दिया। उस पराजय से हृदय न हार कर सशस्त्र विद्रोह के समर्थक ने एकाएक इस बात की सिफ़ारिश की कि ड्योमा के चुनाव में भाग लिया जाए, जो माडरेटों (नर्म दल वालों) की और अर्ध सरकारी पार्लियामेंट थी और अपने साथियों से कहा कि ड्योमा के अधिवेशनों की विस्तृत रिपोर्टों का अध्ययन करें। इसका यह मतलब नहीं है कि वह अपने सिद्धान्तों को त्याग देने की इच्छा रखता था और उन्नति के तरीके अपनाना चाहता था। प्रत्युत उसने यह अनुभव किया था कि क्रांतिकारी प्रचार ड्योमा के द्वारा ही किया जा सकता है। लोगों ने उसे दुर्बल विचारशील समझा। परन्तु इस फटकार की परवाह न करके वह अपने मार्ग पर चलता रहा, तो भी सशस्त्र विद्रोह को उसने अपना मौलिक उद्देश्य बनाए रखा। भारत में भी कौंसिलों में प्रवेश करने के सम्बन्ध में वाद विवाद होते रहे हैं इस लिये रूसी क्राँतिकारियों का यह मोर्चा-परिवर्तन दिलचस्पी से खाली न होगा।

हिन्दुस्तान में आजकल एकता की काँफ्रेंसों और समझौतों-सन्धियों का समय है। अतः इस मामले में लेनिन की राय रुची के साथ पढ़ी जाएगी। १६१४ ई० में एक मित्र को उसने पत्र में लिखा कि "पूँजीपति और उदारदल वाले और सामाजिक क्राँतिकारी, जो बड़ी समस्याओं पर गंभीरता के साथ कभी विचार नहीं करते, प्रत्युत दूसरों के बनाये हुए समझौतों या प्रतिश्रुतियों पर चलते हैं, वे सदा मतभेद और भीतरी झगड़ों का रोना रोते रहते हैं। सामाजिक स्वाधीनता और इन सबके मध्य यही अन्तर है। समाजिक क्षेत्रों की श्रेणियों के मध्य जो युद्ध होता रहता है, उसका कारण विचारों की बहुत गहराई में छिपा है। ऊपर ऊपर इनके मतभेदों पर पोता-पाती करने की चेष्टा की जाती है जबकि भीतरी रूप में ये सर्वथा खाली होते हैं। अस्तु सामाजिक स्वतन्त्रता के विभिन्न विचारों के प्रबल युद्ध को मैं किसी मूल्य पर भी सामाजिक या समय को टालने वाली एकता या गठजोड़

से तब्दील नहीं करूँगा ।"

इस प्रकार लेनिन ने एक बड़े दिन के लिये तैयारी की । और जब १९१७ ई० के आरम्भ में वह दिन आया तो उसे क्राँति के नेतृत्व के लिए स्विटज़रलैंड से बुलाया गया । चलते हुए स्विटज़रलैंड के मज़दूरों के लिए वह एक सन्देश छोड़ गया । इस संदेश में उत्तेजना की कहीं चर्चा नहीं है । न आयु भर के परिश्रमों के फल लाने का समय निकट आ जाने पर किसी प्रकार के हर्ष की अभिव्यक्ति है । उसने एक वैज्ञानिक की भाँति केवल यह बताया कि रूस की स्थिति क्या है और मैं क्या करना चाहता हूँ ।

हममें से प्रायः लोगों के लिये अपने आदर्शों और अपने सिद्धान्तों पर सच्चाई के रङ्ग में विचार करना कठिन है । हमने वर्षों तक स्वराज्य की समस्या पर विचार विमर्श किया है और असंख्य लेख लिखे हैं । परन्तु जिस समय स्वराज्य आयगा, संभवतः एकाएक आएगा । हमने काँग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास किया है, परन्तु हममें कितने हैं, जो पूरे रूप में इसके अर्थों को समझते हैं । कई लोग अपने कार्यों और गति विधियों से इसकी हँसी उड़ाते हैं । उनके निकट वह कोई ऐसी वस्तु है जो लम्बे समय के बाद होगी, ऐसी वस्तु नहीं जो आज या कल प्राप्त हो । वे अपनी कांफ्रेंसों में स्वराज्य और स्वाधीनता की चर्चा करते हैं, परन्तु उनके दिलों में कुछ और है और उनकी कार्यवाहियाँ बहुत दुर्बल और अधूरे हृदय से होती हैं ।

रूस में भी पुरानी पीढ़ी के क्राँतिकारी अनुमानों के संसार में रहते थे और अपने आदर्शों के प्राप्त करने पर बहुत थोड़ा विश्वास रखते थे, परन्तु लेनिन सच्चे भाव तथा उद्देश्य को लेकर आया और पुराने समय के समाजवाद और क्रांति के भवन को उसने हिला दिया, उसने लोगों को यह विचार करना सिखाया कि जिस आदर्श का वे स्वप्न देख रहे हैं और जिसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं वह केवल कल्पित बात नहीं है प्रत्युत ऐसी वस्तु है,

जिसको इसी समय में प्राप्त किया जा सकता है । उसने अपनी आश्चर्य जनक संकल्प-शक्ति से जाति की जाति पर जादू कर दिया और अल्पसाहसी तथा बिखरे हुए लोगों के हृदयों में साहस और दृढ़ संकल्प भर दिया तथा उच्च उद्देश्य के लिये कष्ट उठाने तथा संकट सहने की शक्ति उन में पैदा कर दी।

इस आश्चर्यजनक विजय में बहुत से नेताओं ने पूरा भाग लिया था। विशेषतः ट्राटस्की ने, जो आजकल सायबेरिया में है। परन्तु लेनिन का दर्जा सबसे ऊंचा है। वह पापी था या महात्मा (वली), परन्तु यह चमत्कार अधिकतर उसी का था और हम रोमन रोलाँ के साथ मिलकर उचित रूप में यह कह सकते हैं कि इस शताब्दी में लेनिन सबसे बड़ा कर्मयोगी मनुष्य था और साथ ही अत्यन्त निःस्वार्थी।

आठवाँ परिच्छेद

अन्य पुस्तकें

मैंने लिखा है कि आजकल के रूस को समझने के लिए साम्यवाद के सिद्धान्त और रूस की क्रांति का अध्ययन करना चाहिए। इस विषय में मेरी जानकारी अत्यन्त सीमित है। इसलिये मैंने कुछ पुस्तकों का नाम लिया है, जो इस खोज में हमें सहायता दे सकती हैं। परन्तु क्रांति की सफलता न तो सिद्धान्त में है न रूसियों के उत्साह और साहस में और न लेनिन की महानता में। यह भी नहीं कहा जा सकता कि क्रांति असफल रही है क्योंकि बाल्शेविकों ने अपने विरोधियों को निर्दयता के साथ मिटा दिया और लाल खतरे को सफेद खतरे का सामना हुआ। सफलता की सच्ची कसौटी जनता की प्रसन्नता का मानदण्ड है। यह किसी सीमा तक तो लोगों की मनोवृत्ति का प्रश्न है। परन्तु एक हद तक भौतिक अवस्था और आंकड़े भी ठीक ठीक अनुमान बता सकते हैं। किसी जाति की मनोवृत्ति, उसकी परिस्थितियों की पूरी पूरी जानकारी प्राप्त किये बिना जानी नहीं जा सकती। यह संभव है कि अत्याचार के हाथों से मुक्ति अत्यन्त सुन्दर होती है चाहे कुछ समय के लिये भौतिक भलाई का मानदण्ड कम हो जाए। रूस को जाने वाले यात्री बताते हैं कि क्रांति के प्रारम्भिक वर्षों में, जब भीतरी युद्ध और नाकाबन्दी के कारण रूस की जनता भूखी रह

रही थी, तो खाद्य के अभाव और दूसरे कष्टों के अनुभव को नई स्वतन्त्रता ने बहुत कुछ कम कर दिया। परन्तु मनोवृत्ति के प्रश्न को अलग रख कर हमें इन भौतिक स्थितियों का अध्ययन करना चाहिए, जो क्रांति से उत्पन्न हुईं तथा वर्ष प्रति वर्ष जो कुछ परिवर्तन होते रहे। केवल इसी तरीके से भावी उन्नति या अवनति का ठीक ठीक अनुमान हम कर सकेंगे।

इस छानबीन के लिये पर्याप्त सामग्री विद्यमान है। परन्तु दुर्भाग्य से इस विषय में मेरी जानकारी अत्यन्त सीमित है। मैं यहाँ कुछ पुस्तकों का उल्लेख करूँगा, जो मैंने पढ़ी हैं या जिनकी मैंने चर्चा सुनी है। कोपन हैगन विश्व-विद्यालय के प्रोफ़ेसर अनेटन कार्ल ग्रीन की पुस्तक "बाल्शेविक रशिया", ऐसी पुस्तक है जो बाल्शेविकों के विरुद्ध प्रचारार्थ लिखी गई है। इस पुस्तक की मैंने इस कारण से चर्चा की है कि विषय का दूसरा पहलू भी भली प्रकार स्पष्ट हो जाए। बर्टेण्ड रुसल की पुस्तक "थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस आफ बाल्शेविज़्म" में भी सोवियत शासन पद्धति पर आलोचना की गई है। यद्यपि बर्ट एण्ड रुसल और उसकी पत्नी दोनों रूस गए थे, पर आश्चर्य यह है कि विभिन्न अनुभव लेकर वापस आए जो कुछ उसने देखा वह उससे बहुत दुःखी हुआ। परन्तु उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुईं। उस की पत्नी का विश्वास है कि बाल्शेविक एक अत्यन्त आनन्द से भरपूर जीवन की नीवें रख रहे हैं। ये दोनों उन दिनों रूस की यात्रा को गए थे, जब रूस गृहयुद्ध के अन्धकारपूर्ण समय से पूरे रूप से होश में नहीं आया था।

एक और देखने के योग्य पुस्तक, जो यदि सुन्दर चित्रों के विचार से देखी जाये, रेनीफिलप मिल्लर की लिखी हुई है। उसका नाम है "माइण्ड एण्ड फेस आफ बाल्शेविज़्म"। इस में रूस का सांस्कृतिक पहलू दिखाया गया है और यद्यपि यह पुस्तक विरोधात्मक है, परन्तु इससे वर्तमान रूस की प्रायः मनोवृत्तियों का पता लगता है।

हाल ही की एक पुस्तक, जिसकी प्रशंसा सुनी गई है परन्तु जो मेरी दृष्टि से नहीं गुजरी, मोरस डायस की लिखी है। इसका नाम है "क्रांति के पश्चात् रूस की आर्थिक उन्नति।" डायस अर्थनीति का एक प्रकाण्ड पंडित है, जिसे क्रांति के आधारभूत नियमों या सिद्धांतों से सहानुभूति है, परन्तु इस पुस्तक में वैज्ञानिक ढंग से आलोचना की गई है।

हाल की एक और पुस्तक अंग्रेज मज़दूरों के उस शिष्ट-मण्डल की रिपोर्ट है, जो पिछले वर्ष दसवें स्वाधीनता-दिवस के उत्सव में सम्मिलित हुआ था। इस पुस्तक का नाम आजकल "सोवियत रूस" है। यह खुले रूप में रूस के मित्रों की रिपोर्ट है। फिर भी इसमें मूल्यवान जानकारी का वर्णन है। इस पर इङ्गलैंड और स्काटलैंड की बानवे मज़दूर सभाओं के प्रति-निधियों के हस्ताक्षर हैं। अतः इसकी उपेक्षा आसानी से नहीं की जा सकती और इस प्रकार की कोई दस्तावेज़ चाहे वह कैसी ही पक्षपात पूर्ण हो, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसमें अधिक आलोचना नहीं है और जो कुछ उन्होंने देखा उसका वर्णन अत्यन्त उत्साह से किया गया है। वे लिखते हैं कि जो कुछ हमने एक एक दिन में देखा, वह पूर्ण रूप में लेखबद्ध नहीं हो सकता। यह बात विचारनीय है कि रूस देश में पूंजीवाद और जागीरदारी का भारी भोझ, जो साधारण जनता को कुचल रहा था, दूर कर दिया गया है और मज़दूरों के लिये कला और विद्या के भण्डार खोल दिए गए हैं।" मज़दूर नेताओं के हृदय पर रूस की स्थिति के निरीक्षण से इस प्रकार का प्रभाव पड़ना स्वयं विचारनीय बात है। इससे प्रकट होता है कि विभिन्न देशों के मज़दूरों के दिलों में रूस की क्रांति प्रभाव डाल रही है और मास्को मज़दूरों का मक्का बन रहा है। सोवियत रूस ने अपने स्वप्न को सत्य में प्रकट करके उनके हृदय में नई आशाओं और नए साहस को पैदा कर दिया है।

मुझे याद है कि एक हब्शी मज़दूर से मेरी भेंट हुई थी, जो साम्राज्यवाद

के विरुद्ध बर्सल्ज में होने वाली कांग्रेस में भाग लेने के उद्देश्य से दक्षिणी अफ्रीका से आया था। यह व्यक्ति संसार के हालात से अधिकतर जानकारी नहीं रखता था और उसका अध्ययन भी व्यापक न था। यह सर्वथा सीधा सादा मजदूर था। इसने कांग्रेस में वक्तव्य दिया था कि यद्यपि रूस के विरुद्ध मुझसे बहुत कहा गया है परन्तु मेरा हृदय कहता है कि ये बातें सच्ची नहीं हैं। मैं और मेरे साथी रूस के साथ सहानुभूति रखते हैं और आशा भरे दिलों से रूस को देखते हैं।

ब्रिटेन के मजदूर शिष्ट मंडल की यह रिपोर्ट हमें संक्षिप्त रूप में बहुत से प्रभावों का परिचय देती है। यह कारखानों और काम करने वालों की स्थितियों, उनकी मजदूरी के दरों और मकानों के किरायों, मकानों की दशा, शिक्षा, जेल खाने, किसानों की परिस्थितियों और सहयोग के हालात बताती है। इस रिपोर्ट के पढ़ने के बाद मनुष्य ऐसा अनुभव करता है कि जो कुछ इसमें लिखा है, यदि उससे आधी बातें भी सच्च हों तो रूस बड़ा भाग्यवान देश है।

पुस्तकों का एक और क्रम न्यूयार्क का वेनगार्ड प्रेस प्रकाशित कर रहा है। प्रत्येक प्रति का मोल ५० सेण्ट है और इसमें १३ पुस्तकें शामिल हैं। इनमें रूस के जीवन और हालात के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला गया है। इन पुस्तकों के लेखक सुप्रसिद्ध लेखक हैं, जिन्हें इस देश का विशेष ज्ञान प्राप्त है। इनमें से पहली पुस्तक का नाम है, "सोवियतों में किस तरह काम होता है।" यह एन० एन० वर्लस्फोर्ड द्वारा लिखित है। दूसरी पुस्तकों में रूस की विदेशनीति, उसके धर्म, देहाती जीवन, आर्थिक व्यवस्था, परिवारों का प्रबन्ध, स्कूलों की व्यवस्था, नागरिक स्वाधीनता, ट्रेड यूनियनों, अल्प संख्या वाले लोगों, ललित कलाओं और संस्कृति का वर्णन है। ये पुस्तकें रूस से संबद्ध साहित्य में मूल्यवान संवर्द्धन करती हैं।

रूस में क्रांति हुए दश वर्ष हो गये हैं परन्तु याद रखना चाहिए कि इनमें से पहले पांच वर्ष बाह्य और आन्तरिक शत्रुओं, दुर्भिक्ष और नाकाबन्दी के विरुद्ध प्रयत्नशील रहने में गुजर गए। कई एक शत्रुओं ने आक्रमण करके विदेशों से खाद्य-सामग्री के आयात के मार्ग रोक कर उसका गला घूंटना चाहा, वर्षों तक क्रांति डगमगाती हुई अवस्था में रही और देश का आर्थिक जीवन खण्ड खण्ड हो गया। केवल पिछले पांच वर्ष में इसे शांति प्राप्त हुई, और अपने उत्पादन के साधनों को उन्नति देने का अवसर मिला है। परन्तु इस अवधि में भी यूरोप की कई एक सरकारें उसके विरुद्ध रही हैं तथा पूंजीपतियों का सबसे बड़ा देश अमेरिका इसके विरोध पर कटिबद्ध रहा है। अपने साधनों को उन्नत करने के लिये रूस के पास रुपया न था और दूसरे देशों ने ऋण देने से इन्कार कर दिया। अतः इन पांच वर्षों में उसने कुछ उन्नति की है तो इन कठिनाइयों के बावजूद की है। गम्भीर दृष्टि से देखने वालों की यह राय है कि निःसन्देह उसने उन्नति की है और आठ वर्ष के युद्ध में जितनी हानियाँ हुई हैं वे उसने पूरी कर ली हैं। आजकल रूस में इतनी उपज होती है, जो १९१४ ई० की उपज से अधिक है, जब जर्मन के साथ युद्ध आरम्भ हुआ था और अब यह उपज तेजी से बढ़ रही है।

संयुक्त राज्य अमेरिका ने सरकारी तौर पर सोवियत सरकार को स्वीकार नहीं किया। परन्तु इस सरकारी विरोध के होते हुए भी रूस की उपज की उन्नति के कारण अमेरिकन व्यापारियों का ध्यान उसकी ओर खिंच रहा है और बहुत से प्रोफेसर और विद्यार्थी रूस के हालात को देखने के लिये उस देश में जा रहे हैं। रूस में आजकल यात्री भारी संख्या में आते हैं। और विद्यार्थी तथा अनुसन्धानकों की संख्या भी कुछ कम नहीं। यह केवल समाजवादी विचारों के लोग रूस की नई

स्थितियों की प्रशंसा करने जाते हैं अपितु पूंजीपति भी व्यापार की खोज में जाते हैं और यह देखने कि उनके विचारों से विभिन्न विचार रखने वाले लोग किस प्रकार के हैं। इन यात्रियों में पूर्वी देशों के लोग भी कुछ कम नहीं होते—जैसे चीन, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के लोग भी भारी संख्या में जाते हैं। वे विशेषतः वहाँ की शिक्षा प्रणाली, कृषि सहकारिता और सैनिक संगठन का अध्ययन करने जाते हैं। जिस समय हम मास्को में शिक्षा विभाग के कमिश्नर से मिलने गये तो वहां अफगानिस्तान के शिक्षा मन्त्रिमण्डल के दो उच्च अधिकारियों को देखकर चकित हो गये, जिनमें एक अलीगढ़ का पुराना विद्यार्थी था।

क्या ही अच्छा हो यदि हमारे प्रोफ़ेसर और छात्र भी रूस में यात्रा के उद्देश्य से जाएं और वहां की शिक्षा और कृषि की उन्नति का अध्ययन करें। राजनितिज्ञों के जाने की अपेक्षा उन लोगों की यात्रा से हमें अधिक लाभ पहुंचेगा। हमारे विश्वविद्यालय इस उद्देश्य के लिये छोटे छोटे शिष्टमण्डल आसानी से भेज सकते हैं।

हमारे विश्वविद्यालय और अन्य शिक्षा संस्थाएं, यदि ब्रिटेन सरकार बाधा न डाले, तो रूस के शिक्षा और साहित्य-केन्द्रों के साथ पत्रव्यवहार के द्वारा मेल जोल पैदा कर सकती हैं और पुस्तकों का विनिमय कर सकती हैं। रूसी इस सहयोग का समादर करेंगे और प्रत्येक प्रकार की जानकारी बड़े हर्ष से पहुँचाएंगे। वे पम्फलेट और छोटी छोटी पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में, जिनमें अंग्रेजी भी सम्मिलित है, प्रकाशित करते रहते हैं। इन छोटी छोटी पुस्तकों में प्रकट किया जाता है कि किन बातों में रूस ने कितनी उन्नति की है। इसमें संदेह नहीं कि इन पुस्तकों में एक पक्षीय बयान होंगे, परन्तु इससे सरकारी दृष्टिकोण प्रकट हो जाएगा और इनसे ताजा आँकड़े ज्ञात होते रहेंगे।

मास्को शिक्षा विभाग का सूचना विभाग शिक्षा सम्बद्ध उन्नति के आंकड़े नियमित रूप से और वार्षिक रिपोर्टें प्रकाशित करता रहता है।

विदेशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्धों की सभा रूसी, अंग्रेजी और जर्मन भाषाओं में एक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित करती है, इस सभा का पता यह है मलायान्स्काया नं० ६, मास्को।

———

नवाँ परिच्छेद

कृषि

मास्को में जिन भवनों को हमने देखा, उनमें सबसे अधिक आकर्षक कृषकों का 'केन्द्रीय होम' है। यह सबसे बड़ा भवन है, जिसके भीतर अजायब-घर, प्रदर्शनियों के कमरे, व्याख्यानों के कमरे और ३५० व्यक्तियों के निवास स्थान हैं। प्रत्येक वस्तु, जो कृषकों के लिए लाभदायक हो, वहाँ विद्यमान है। कृषि द्वारा होने वाली उपज की सर्वश्रेष्ट प्रदर्शनी की गई है। कई हाल नवाविष्कृत कृषि-यन्त्र, मशीनरी और स्वास्थ्य रक्षा के ताजा बताजा मॉडलों और फार्मों के यन्त्रों से भरे हुए हैं। इस भवन का दूसरा भाग स्वास्थ्य रक्षा के प्रचार के लिए निश्चित है। चित्रों, पोस्टरों और मॉडलों के द्वारा बताया गया है कि रोगों से किस प्रकार बचाव हो सकता है और घरों को स्वच्छ और स्वास्थ्यजनक अवस्था में रखा जा सकता है।

एक बड़ा विशाल हाल केवल बिजली ही के लिये निश्चित है और उसमें भाँति भाँति के मॉडल काम करते हुए दिखाए गए हैं, जिनसे पता चलता है कि प्रकाश और कृषि सम्बद्ध उद्देश्य के लिए बिजली से किस प्रकार काम लिया जाता है। विभिन्न मापों के वाटर-पम्प, जो बिजली की शक्ति से चलते हैं, अधिकतर दिखाए गये हैं। एक बड़ा सा मानचित्र प्रकट करता है कि सारे रूस के भीतर विद्युत-शक्ति के स्टेशन इतनी

जल्दी बनाए गए हैं। ये समस्त प्रदर्शन कृषकों को समझाने के लिए किये गये हैं कि बिजली उन कामों में कहाँ तक सहायता दे सकती है।

बहुत से कृषक इस भवन में आते हैं और विभिन्न प्रदर्शन कक्षाओं में समस्त यन्त्रों का विस्तृत वर्णन तथा उपयोगिता की व्याख्या उनके सामने आ जाती है। कृषकों के सामने शिक्षा-सम्बद्ध मामलों पर प्रतिदिन व्याख्यान दिये जाते हैं और कानूनी पारिभाषिक परामर्श मुफ्त दिये जाते हैं। कृषि-कर्म की शिक्षा के लिये कृषकों को अधिक से अधिक दो महीने वहाँ रहने की आज्ञा है। इस भवन के साथ एक होटल भी है, जहाँ बहुत थोड़े खर्च पर खाना दिया जाता है। हमने देखा कि वहाँ बहुत नवागन्तुक देहाती लोग खाना खा रहे थे।

यह बहुत सुन्दर प्रतिष्ठान, इन्स्टिट्यूशन है और प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव करता है कि ऐसे एक मात्र केन्द्र ही से कृषकों को बहुत लाभ पहुँचता होगा। परन्तु हमें बताया गया कि समस्त यूनियन में इस प्रकार के होम स्थान स्थान पर बनाये जा रहे हैं, यद्यपि उनमें से प्रायः केन्द्रीय होम की अपेक्षा बहुत छोटे हैं। इस प्रकार का एक होम मास्को नगर में मास्को जिला के लिए बनाया गया है। और ऐसे ३५० होम केवल रूस ही में अवस्थित हैं। यूक्रेन और ऐशियायी रूस को छोड़कर, रूस में जहाँ ऐसे बहुत से होम हैं इन सैंकड़ों होमों ने कृषकोंके दृष्टिकोण को बहुत थोड़े से समय में बदल दिया होगा।

रूस, जैसाकि सबको ज्ञात है, कृषकों का देश है तो भी क्रांति का सारा बोझ इसकी प्रारम्भिक स्थितियों में कारखाने के मज़दूरों पर पड़ा था। लेनिनग्राद और मास्को के नागरिक मज़दूर क्रांति की आत्मा या प्राण थे और कुछ समय तक सोवियतों में कृषकों का प्रतिनिधित्व बहुत ही कम था। परन्तु सोवियत ने जब भूमि को राष्ट्रीय सम्पत्ति निश्चित करने का आदेश

जारी किया तो कृपकों ने इसका शीघ्र ही लाभ उठाया और केन्द्रीय आदेशों के हस्तक्षेप के बिना ही उन्होंने जमींदारों को निकाल दिया और उनकी भूमि आपस में बाँट ली। ऐसा करने के पश्चात् समृद्धिशाली कृपक संतुष्ट होगये तथा और भी परिवर्तनों और क्रांति के इच्छुक न रहे। उनमें प्रायः लोग साम्यवाद के सम्बन्ध में कुछ न जानते थे और धीरे धीरे वे सोवियत की शक्ति के विरोधी हो गये, जो अनाज के भण्डार जमा करने और उनको अधिक लाभ उठाकर बेचने के विरुद्ध थे। अधिक लाभ उठाकर बेचने का कार्य धनाढ्य कृपक कर रहे थे। यूरोप के पश्चिमी इलाके ने रूस की नाकाबन्दी कर रखी थी और दक्षिण के उपजाऊ प्रदेश, जहाँ अनाज प्रचुर परिमाण में उपजता था, विरोधी शक्तियों के अधिकार में चले गये थे। इससे बड़े बड़े नगरों में बड़ी कठनाई का सामना हुआ। लाल सेनाओं को भूखों रहना पड़ा। परन्तु सोवियत सरकार ने धनाढ्य कृपकों के अन्न,भण्डारों को छीनकर काम चलाया।

इससे कठिनाई तो दूर हो गई परन्तु नगर के स्वतन्त्र विचार वाले मजदूरों और पुराने विचार के कृपकों के मध्य विरोध चलता रहा और कृपकों का पल्ला भारी रहा। लेनिन के संकेत से सरकार की सारी नीति एकाएक बदल गई और नई आर्थिक नीति लागू हो गई। यह कहना कठिन है कि आया स्थितियों ने लेनिन को नई नीति ग्रहण करने पर विवश किया या जैसा कि लोग कहते हैं, उसकी नीति का यह स्वभाविक परिणाम था। साम्यवाद के नियमों का कठोरता से पालन करने (पाबन्दी) का समय अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकता था, परन्तु जिस प्रकार वह एकाएक समाप्त हो गया, उससे प्रकट होता है कि सरकार पर बड़ा भारी दबाव पड़ा था। लेनिन ने परिस्थितियों के अनुसार, प्रत्युत साम्यवाद के कुछ नियमों का वलिदान करके भी नीति ग्रहण की। उसने कृपकों और छोटे दुकानदारों की बात मानली। परन्तु

उसके मस्तिष्क ने कृषकों के मध्य औद्योगिक प्रगति जारी करने की एक योजना सोच ली। लेनिन ने एक बार प्रश्न किया कि साम्यवाद क्या है ? और स्वयं ही उसका अद्भुत उत्तर दिया कि वह सोवियत गणतन्त्र धनात्मक विद्युत है। उसने कहा कि सारे रूस में विद्युत फैला देनी चाहिए। यह बहुत बड़ी योजना थी क्योंकि रूस बड़ा विशाल देश है, परन्तु इस मामले में बहुत बड़ी उन्नति हो चुकी है और रूसी लोग बड़े संतोष और गौरव के साथ उन मानचित्रों की ओर संकेत करते हैं, जो विद्युत शक्ति के बड़े बड़े स्टेशनों के द्योतक हैं और जो समस्त देश में बने हुए हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि रूस में कृषकों की शक्ति बढ़ रही है, सरकार के प्रायः अधिकारपूर्ण पदों पर चाहे मजदूरों और शिक्षित लोगों का कब्जा हो, परन्तु कृषक किसी बात को स्वीकार न करें, तो कुछ पेश नहीं चलती। साम्यवादी दल में लेनिन और ट्राटस्की के मध्य जो झगड़ा उत्पन्न हुआ, उसका आधार अधिकतर कृषकों की समस्याओं पर है। स्टालिन का दल, जिसे आजकल प्रभुत्व प्राप्त है, दूसरे दल की अपेक्षा कृषकों को प्रसन्न रखना चाहता है।

कुछ लोग कहते हैं कि धीरे धीरे धनाढ्य कृषकों का प्रभुत्व होता जाता है। सम्भव है इस प्रकार का झुकाव हो परन्तु यह विश्वास करना कठिन है कि यह अधिक उन्नति कर सकेगा। क्योंकि सरकार की सारी मशीनरी इसके विरुद्ध है। जनसाधारण की राय इसे सहन नहीं कर सकेगी और साथ ही निर्धन श्रेणियों को भी बड़ी शक्ति प्राप्त है। वे किसी श्रेणी को धन और आर्थिक शक्ति का ठेकेदार नहीं बनने देंगे। सरकार कर इस प्रकार से लगाती है जिससे प्रत्येक क्षेत्र के लोगों की आमदनियाँ बराबर हो जाएं। कृषकों के खेतों का ५ प्रतिशत भाग भूमिकर से मुक्त है और अब यह

सुझाव है कि दस प्रतिशत भाग मुक्त किया जाए। यह सुविधा इस कारण से दी जाएगी कि उनकी आमदनी से उनका गुजारा कठिनाई से होता है। मालदार श्रेणियों पर कर का बोझ बहुत भारी है।

यह फ़र्ज किया गया है कि भूमि सरकार की सम्पत्ति है और नियम यह है कि देहाती सोवियत भूमि को स्थानीय लोगों में बाँट देती है और प्रायः एक व्यक्ति को उतनी भूमि दी जाती है जितका कृषिकर्म उसके परिवार के व्यक्ति कर सकें। कई स्थानों पर जनसंख्या अधिक है, इसलिये नई बस्तियाँ बसाने की योजनाएं जारी हैं, ताकि जनसंख्या सब जगह समान हो जाए। कोई व्यक्ति या उसका परिवार जितनी भूमि पर कब्ज़ा रखता है, यह कब्ज़ा जारी रहता है, परन्तु यदि परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ जाए या कम हो जाए तो उसके अनुपात से उसकी भूमि को बढ़ा या कम कर दिया जाता है। कृषि की उपज के संबन्ध में चलते वर्षों के कुछ आँकड़े दिलचस्पी से खाली न होंगे। याद रखना चाहिए कि रूस में ६ वर्ष तक युद्ध और गृहयुद्ध होते रहे हैं। उसकी नाकाबन्दी की गई है। उसकी आन्तरिक शान्ति को भंग किया गया है। दुर्भिक्ष और सर्दी के कष्ट उसने सहन किये हैं। उसकी सामाजिक स्थितियों में प्रबल परिवर्तन हुए हैं। सरकार की सारी मशीनरी को तोड़फोड़ कर नये सिरे से बनाया गया है। १९२१–२२ ई० तक उपज में लगातार कमी होती रही है। उस समय में कृषकों के ३० प्रतिशत युवक कम हो गए और पशुओं तथा खेतीबाड़ी के यन्त्रों की भारी तबाही हुई। पशुओं की संख्या ४० प्रतिशत रह गई और कृषि के आधीन भूमि, जो १९१४ ई० में १०९ मिलियन थी, १९२२ ई० में ७५ मिलियन डसयाटायन रह गई। ये आंकड़े रायकाफ की रिपोर्ट से लिये गये हैं, जो कौंसिल आफ पीपल्ज़ कम्मिसर का प्रधान है। वह कृषि की उपज के मोल के सम्बन्ध में लिखता है—

१९१३ ई०	में	११७९०	मिलियन	रोबल	उपज	की कीमत	थी।
१९२१ ई०	,,	६६००	,,	,,	,,	,,	,,
१९२६,२७ ई०	,,	१२७७६	,,	,,	,,	,,	,,
१९२७-२८ ई०	,,	१३१८६	,,	,,	,,	,,	,,

सारॉश यह है कि १९२१ई० मे उपज में जितनी कमी हुई थी अब युद्ध के समय के परिमाण तक उन्नत हो चुकी थी और पिछले वर्ष में उपज इससे भी बढ़ गई थी। कृषि के आधीन भूमि और पशुओं की पैदायश का पैमाना १९२७ ई० मे युद्ध से पहले के पैमाने तक आ पहुँचा था। केन्द्रीय सरकार कृषि सम्बद्ध उन्नति में बहुत भारी पूँजी लगा रही है। १९२६-२७ ई० में ४१८ मिलियन रोबल खर्च किये गए थे और १९२७ ई० में ५२८ मिलियन रोबल खर्च करने की योजना थी।

इन रकमों अथवा ऑकड़ों से उन्नति की गति का अनुमान हो सकता है। यदि बहुत सी कठिनाइयों का और बाहर से सहायता न मिलने का विचार किया जाए तो यह उन्नति अत्यन्त पर्याप्त है।

दसवाँ परिच्छेद

दण्ड विधान

रूस के हालात का अध्ययन करने वालों के लिये इससे अधिक परेशान करने वाली और कोई बात नहीं है कि वहाँ कैदियों के साथ बर्ताव किए जाने के विषय में एक दूसरी से विपरीत रिपोर्टें सुनी जाती हैं। हमें लाल खतरे की कहानियां सुनाई जाती हैं। और अत्यन्त भीषण और निर्दयता पूर्ण बर्ताव की बातें सुनने में आती हैं। इसके विपरीत हमें बताया जाता है कि रूसी जेलखाने (कारागार) रहने के आदर्श मकान हैं, जहां कैदी बड़े सुख-सुविधा से रहते हैं और उनपर कम प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं। मास्को के बड़े जेलखाने को हमने स्वयं जाकर देखा और हम उनके सम्बन्ध में बहुत अच्छा अनुभव लेकर आए। अनुमानतः दोनों प्रकार की कहानियों में कुछ सच्चाई है। परन्तु इससे पहले कि हम वहाँ की कार्यवाही पर विचार करें, यह उचित है कि रूस के फौजदारी कानून के सिद्धान्त का अध्ययन किया जाए, संभव है कि कथन और कर्म में बहुत कुछ अन्तर हो। परन्तु सिद्धान्त के अध्ययन से कम से कम यह पता चल जाएगा कि रूसियों ने अपने सामने क्या आदर्श रखे हैं।

नया दण्ड विधान पहली जनवरी १६२७ ई० से रूस के विशेष प्रदेश में लागू हुआ। मुझे यह मालूम नहीं कि यूनियन के दूसरे

गणतन्त्र राज्यों में यही कानून (विधान) जारी है या नहीं। १६२७ ई० से पहले न्यायालय साधारण समझ बूझ के अनुसार कार्यवाही किया करते थे। उन न्यायालयों के न्यायकारी मजदूर और किसान हुआ करते थे। नए विधान के अनुसार न्यायाधीश (जज) और न्यायकारी मण्डल (ज्यूरी) के सदस्य उन लोगों मे से चुने जाते हैं, जिन्हें रूस के संविधान के अनुसार राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं अर्थात् वह शारीरिक या बौद्धिक श्रम करने वाले मज़दूर होने चाहिएं पूंजीपति या किराये की आय पर निर्वाह करने वाले इन अधिकारों से वंचित हैं। न्यायालय के न्यायाधीशों को मजदूर और किसान की स्थानीय सोवियत एक वर्ष के लिए चुनती है और इस प्रकार से दो निर्वाचित सदस्य उनकी सहायता के लिए नियुक्त किए जाते हैं। इस निर्वाचन में उस प्रदेश के समस्त वोटर भाग लेते हैं। ज्यूरी के सदस्य शीघ्र शीघ्र बदलते रहते हैं क्योंकि ज्यूरी का प्रत्येक सदस्य वर्ष में केवल ६ दिन काम करता है और इस प्रकार न्यायालय की कार्यवाही में मजदूरों की बहुत बड़ी संख्या सम्मिलित हो सकती है। अनुमान किया गया है कि १६२६-२७ ई० में पांच लाख से अधिक मजदूर और किसानों ने समस्त रूस में ज्यूरी के रूप से जजों को सहायता दी।

लेनिन की यह इच्छा थी कि जहाँ तक सम्भव हो, बहुत से व्यक्ति विशेषतः ऐसे व्यक्ति जो बहुत गरीब हों उन्हें न्याय करने में सहायता देनी चाहिए ताकि वे देश के प्रबन्ध में भाग ले सकें और इस प्रकार से वे राजनीतिक उन्नति के विज्ञान को साविलम्ब सीख लें। सोवियत के फौजदारी विधान में दण्ड का विचार पसन्द नहीं किया गया है और उस स्थान पर सामाजिक रक्षा के सुझावों की परिभाषा लिखी गई है। शारीरिक दण्ड देना वर्जित है या ऐसा दण्ड देना वर्जित है जिससे मानवी सम्मान की क्षति हो। फौजदारी विधान की धारा ६ में लिखा है—

"सामाजिक रक्षा (सोशल डेफेन्स) के सुझावों का यह उद्देश्य न होना चाहिए कि अपराधियों को शारीरिक कष्ट दिया जाए या जिससे मानवी शान को बट्टा लगे और न इसका उद्देश्य प्रतिशोध लेना या कष्ट देना होना चाहिए"।

सोवियत के फौजदारी विधान के अनुसार अपराध इसके सिवा कुछ नहीं है कि समाज विभिन्न श्रेणियों में बटा है और उनमें मतभेद के कारण एक दूसरे का विरोध विद्यमान है। अपराध सदा दोष-युक्त सामाजिक व्यवस्था या खराब हालात से आवेष्ठित होने के कारण होता है।

दण्ड और अपराध के सम्बन्ध में इन विचारों पर सबसे पहले इनरेकोफेरी नामक एक इटैलियन ने बहस की है। परन्तु आज तक किसी सरकार ने इनको, रूस के सिवा, फौजदारी विधान में समाविष्ट नहीं किया। कैदियों को नज़रबन्द किया, जा सकता है। रूस में इन नज़रबन्दों से सामूहिक रूप से काम लिया जाता है। दूसरा तरीका यह है कि पूर्णरूप से स्वाधीनता जब्त किए बिना कैदियों के लिए काम करना आवश्यक होता है। पिछला तरीका प्रायः प्रयोग में आता है केवल उन कैदियों को छोड़ कर, जिनके अपराध भीषण हैं। प्रत्येक अपराध के लिए दण्ड नहीं दिया जाता। वास्तव ही में कोई खतरा न हो और अपराधी को समाज के लिए खतरनाक न समझा जाए तो उसे दण्ड नहीं दिया जाता। ऐसा भी हो सकता है कि जो अपराध हुआ हो, वह पहले भीषण समझा गया हो परन्तु अब भीषण नहीं रहा, जैसाकि १६२२ ई० की नाकाबन्दी के समय में जबकि खाद्यसामग्री का अभाव था, रोटी प्राप्त करने के लिये जाली कार्ड पेश करना भीषण अपराध समझा जाता था, परन्तु १६२७ ई० में खाद्य सामग्री का कोई अभाव न था, इसलिए

यह अपराध भीषण न था और कोई न्यायालय अब किसी को इस अपराध के लिये दण्ड नहीं देता।

सब बाल्शेविकों ने शासन की बागडोर संभालते ही मृत्यु दण्ड को हटा दिया था, परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् उन्हें विद्रोह के अपराधों की रोक थाम के लिए यह दण्ड पुनः लागू करना पड़ा। रिशवत लेना और जनता के कोष से धन के गबन करने के लिये भी यही दण्ड निश्चित है। रूस के दण्ड-विधान की धारा २१ में लिखा है—

"मृत्यु दण्ड अत्यन्त भीषण अपराध के लिए एक अस्थायी सुझाव है। ऐसे अपराध के लिए, जो सोवियतों की शक्ति की नींवों को दुर्बल करे, यह दण्ड असाधारण स्थितियों में दिया जाता है। अन्त में इस दण्ड को रद्द कर दिया जाएगा।

"कोई गर्भवती स्त्री या वह व्यक्ति, जिसकी आयु अपराध करते समय १८ वर्ष से कम हो, मृत्यु दण्ड का भागी नहीं ठहराया जा सकता। सरकार की ओर से अपराधियों को तीन प्रकार के दण्ड दिए जाते हैं—

(१) बल पूर्वक।
(२) डाक्टरी इलाज।
(३) सुधारात्मक युक्तियाँ।

सुधारात्मक युक्तियाँ केवल नवयुवकों और बच्चों के लिए ही प्रयोग की जाती हैं। चौदह वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए किसी प्रकार की अदालती कार्यवाही वैध नहीं है और चौदह से सोलह वर्ष तक की आयु वालों के लिये विशेष कमेशन की रिपोर्ट पर, जिसमें एक डाक्टर और शिक्षा-विशेषज्ञ सम्मिलित होता है, कोई दण्ड निश्चित किया जाता है। यह भी उस अवस्था में, जब यह सिद्ध हो जाए कि किसी डाक्टरी (चित्कासात्माक) या

सुधारात्मक उपाय से कार्य सिद्धि नहीं होगी। दण्ड जो दिए जाते हैं, वे निम्नलिखित हैं —

(१) मृत्यु दण्ड।

(२) अपराधी को मजदूरों का शत्रु निश्चित किया जाता है और उसे यूनियन आफ सोशलिस्ट सोवियत रिपब्लिक के नागरिकता के अधिकार से वंचित करके निर्वासित कर दिया जाता है। जो लोग इस प्रकार न्यायालय के फैसले के अनुसार निर्वासित किए जाते हैं, वे यूनियन आफ सोशलिस्ट सोवियत रिपब्लिक में अपनी इच्छा से वापस नहीं आ सकते और यदि वे ऐसा करें तो मृत्यु दण्ड दिया जा सकता है।

(३) कुछ समय के लिये, जो दस वर्ष से अधिक न हो, स्वतन्त्रता से वंचित रखना। पहले यह अवधि पाँच वर्ष थी परन्तु १९२२ ई० में दस वर्ष तक बढ़ा दी गई। वास्तव में बहुत कम कैदी और नजरबन्द लोगों को पूरे दस वर्ष तक जेल में रहना पड़ता है। और जो काम वे जेल में करते हैं उसको दृष्टिगत करते हुए दसवर्ष में से दो तीन वर्ष कम कर दिए जाते हैं।

(४) स्वतन्त्रता से वंचित हुए बिना बेगार के रूप में कार्य करना। जिन लोगों को यह दण्ड दिया जाता है, वे सारा समय कोठरी में बन्द नहीं रखे जाते, प्रत्युत वे छुट्टी पर जा सकते हैं। कृषकों को, फसल काटने के दिनों में या अन्य अवसरों पर जब कि कृषि का काम करना होता है, अनिवार्य रूप में छुट्टी दे दी जाती है।

(५) नागरिकता के अधिकारों से वंचित कर देना।

(६) कुछ समय के लिये देश निकाला।

(७) खास रूस या संघ के गणतन्त्र राज्य के किसी और प्रदेश से किसी

विशेष स्थान में निवास रखने के प्रतिबन्धों के साथ या उनके बिना देश निकाला।

(८) सरकारी पद से हटा देना, जिसके साथ यह शर्त होती है कि वह किसी विशेष आसामी पर नियुक्त न हो। कई बार यह प्रतिबन्ध नहीं होता।

(९) कोई विशेष पेशा करने का निषेध।

(१०) माल असबाब की पूर्णरूपेण या आँशिक रूप में जब्ती।

(११) खुले आम अर्थात् घोषित रूप में अपमान या धुत्कार फटकार किया जाना।

(१२) जुर्माना।

रूस के दण्ड विधान में लिखा है कि जुर्माने के बदले में कैद का दण्ड न दिया जाए और कैद के बदले में जुर्माना न किया जाए।

विधान में यह भी लिखा है कि क्रांति के विरुद्ध अपराधों में किसी दूसरे मजदूर की सम्पत्ति पर अधिकार कर लेना भी दण्डों मे सम्मिलित है चाहे वह सम्पत्ति किसी रूसी मजदूर ही की क्यों न हो। क्योंकि रूसियों का जातीयता सम्बन्धी विचार अत्यन्त उदार या व्यापक है। वे मजदूरों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन और एकता में विश्वास रखते हैं। उनका नारा यह नहीं कि "रूसी सङ्गठित हों," प्रत्युत यह है कि "संसार भर से मजदूर संगठित हों।

———

ग्यारहवाँ परिच्छेद

कारागार (जेलखाना)

मोस्को में निवास रखने की अवधि में हमें एक कारागार (जेलखाना) देखने का भी अवसर मिला। कारागार नगर से बाहर अवस्थित है। हमें बताया गया, यह कारागार केवल भीषण अपराध करने वालों ही के लिए निश्चित है। इसका भवन पुराना है। जार के शासन काल में भी यहां कारागार था। इसका भवन कुछ शानदार नहीं है। भीतर प्रविष्ट होने पर हमने अपने आपको एक बरामदे में पाया, जिसमें बहुत सी ड्योढ़ियाँ थीं और दोनों ओर कोठरियाँ बनी हुई थीं जो तिमंजिला बनी हुई थीं। जेल के गवर्नर ने हम से कहा कि जो कोठरियाँ आप देखना चाहें, चुन लें ताकि आप यह न समझें कि हमें केवल विशेष कोठरियाँ दिखाई गई हैं। गवर्नर का इस बात के लिए अनुरोध करना कि निरीक्षण के लिये कोठरियाँ हम स्वयं चुनें, आश्चर्य-जनक था और इससे यह सन्देह होता था कि सारा कारागार एक प्रदर्शनी के रूप में बनाया गया है और केवल यात्रियों के दिलों पर अच्छा प्रभाव डालने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है।

हम कुछ कोठरियों के भीतर गए। वे संकीर्ण थीं और सुख सुविधा जनक प्रतीत नहीं होती थीं। प्रत्येक कोठरी में दो या तीन खाटें थीं। वहाँ वायु

का आना जाना कम था। संभव है कि ऐसा इस कारण से हो कि सर्दी कड़ाके की थी। कोठरियाँ विशेष रूप से साफ न थीं। वहां कुछ पुस्तकें भी थीं और दो कोठरियों में हमने रेडियो के यन्त्र भी देखे। हमें बताया गया कि ये यन्त्र इन कोठरियों में रहने वाले कैदियों ने स्वयं लगाए हैं।

इस जेल में ४५० से अधिक कैदी थे, जिनमें से प्रायः भीषण अपराधों के अपराधी थे। अधिक से अधिक दस वर्ष कारावास के दण्ड के कैदी थे। इस दण्ड की अवधि में अच्छा काम करने पर या सदाचार के कारण अपराधी को दो तीन वर्ष की माफी मिल जाती है। कारागार के स्टाफ में ५२ या ५३ व्यक्ति थे, जिनमें गवर्नर, डाक्टर और उनके सहायक(असिस्टेंट) भी सम्मिलित थे। स्टाफ के लोग तीन टोलियों में बटकर आठ-आठ घण्टे काम करते हैं अर्थात् एक समय में सतरह या अठारह से अधिक व्यक्ति ड्यूटी पर नहीं होते।

स्टाफ की संख्या कम जान पड़ती है। विशेषतः इस कारण से कि वहां कोई कैदी वार्ड न था। हमें बताया गया कि कैदियों को कैदियों की देख रेख के लिये नियुक्त करना वहाँ आपत्तिजनक समझा जाता है। हमने देखा कि वार्डरों के पास कोई शस्त्र न था। लाठियाँ तक न थीं। केवल प्रधान द्वार पर सिपाहियों के पास संगीनें थीं।

जेलखाने के गवर्नर ने हमसे कहा कि रूस में अपराधियों को दण्ड देने या पराश्चित कराने का विचार नहीं है प्रत्युत उनको समाज से विलग करने का उद्देश्य है और नियम के अनुसार काम लेकर उनके सुधार को सामने रखा जाता है। रूस में जेलखाने का शब्द भी पसन्द नहीं किया जाता, क्योंकि इससे कष्ट और यातना देने के पुराने तरीकों की याद ताजा हो जाती है। इसके स्थान पर जेल के लिए एक बड़ा लम्बा नाम रखा गया है, जो मुझे याद नहीं रहा।

परन्तु उसका अर्थ यह है कि वह स्थान जहाँ काम लेने के बहाने लोगों का सुधार किया जाता है। उद्देश्य यह है कि कैदियों में भद्रता और मानवता की भावना कुचली न जाए। कैदियों को कोई नम्बर नहीं दिया जाता और जहाँ तक हमने देखा है कि किसी विशेष प्रकार की वर्दी भी नहीं दी जाती। हमने पच्चीस से तीस तक कैदियों को उनके काम के घण्टों से छुट्टी के बाद जेल के आंगन में टहलते हुए देखा। वेशभूषा के देखने से वे कैदी नहीं जान पड़ते थे। इस आंगन में कुछ खेलों का भी प्रबन्ध था, जिनमें बास्केटबाल भी सम्मिलित है। हमने प्रश्न किया कि यहाँ बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ भी प्रयोग की जाती हैं। गवर्नर ने ठहका लगाया और कहा कि ये चीजें हम अजायबघरों में रखते हैं और यदि आप को ये चीजें देखने की इच्छा हो, तो पूँजीवादी देश में जाकर देखनी चाहिए। कैदियों को जब बाहर ले जाया जाता है, उस समय भी बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ नहीं लगाई जातीं।

समस्त कैदियों को प्रतिदिन आठ घण्टे काम करना पड़ता है। कई कैदी विशेष प्रकार का काम करते हैं, जो वे पहले ही से सीखे हुए होते हैं। परन्तु अधिकांश कैदी कपड़ा बुनने के एक कारखाने में काम करते थे, जो जेल से संलग्न था। जेल का बड़ा भाग सूत कातने और कपड़ा बुनने के कारखाने में परिवर्तित कर दिया गया था। मशीनें पूरे जोर से काम कर रही थीं। कारखाने के भीतर जेलखाने का कोई चिह्न या लक्षण नहीं दिखाई देता था, सिवाय इसके कि प्रत्येक हाल के द्वार पर एक शस्त्रहीन वार्डर (पहरेदार विद्यमान रहता था, जो द्वार को ताला लगाए रखता था।

हमें बताया गया कि जेल के कैदियों के काम के सम्बन्ध में ट्रेड यूनियन के नियमों के अनुसार काम किया जाता है, अर्थात् उन से उतने ही घण्टे काम लिया जाता है जितना कि दूसरे कारखानों में। और ट्रेड यूनियन

वाले समय समय पर जेल का निरीक्षण करके अपनी तसल्ली कर लिया करते हैं।

कैदियों को मज़दूरी भी मिलती है, जो बाहर के कारखानों की मजदूरी के अनुपात से ३० प्रतिशत से ५० प्रतिशत होती है। इन उजरतों का दो तिहाई भाग कैदियों के लिए रिज़र्व फण्ड में रखा जाता है और उसमें से खर्च करने का उन्हें अधिकार नहीं होता। कैदी के रिहा होने पर उसे रिज़र्व फण्ड का रुपया उस धन राशि के साथ, जो उसकी जमा होती रहती है, दिया जाता है ताकि नया जीवन आरम्भ करने के लिए उसके पास कुछ पूँजी विद्यमान हो। अपनी कमाई के एक तिहाई भाग में से कैदी वे चीजें खरीद सकते हैं, जो जेल के स्टोर या बाहर से मिल सकती हैं। हमने उस स्टोर को देखा। उसका इन्चार्ज एक कैदी था। वहाँ सिगरेट, खाने पीने की चीजें और साबुन लवेण्डर आदि रखे हुए थे। पुस्तकें भी खरीदी जा सकती हैं। कैदियों को कोई नकदी नहीं दी जाती। चीजें खरीदते समय वे वौचरों पर हस्ताक्षर कर देते हैं और जेल के कार्यालय में हिसाब लिख लिया जाता है। बाहर से मित्र और सम्बन्धी भी कैदियों के लिये चीजें या रुपया भेज सकते हैं।

कैदियों को सिगरेट पीने की आज्ञा है और वे एक दूसरे से बात चीत कर सकते हैं। जेल के भीतर एक नाई की दुकान भी है, जैसाकि शहर में मजदूरों के मुहल्लों के अन्दर नाइयों की सस्ती दुकानें होती हैं। इस दुकान का मालिक एक कैदी था, जो हजामत बनाकर रुपया कमाता था। जो कैदी हजामत बनवाते हैं, वे अपनी कमाई में से उसे उजरत देते हैं। हमने एक कैदी को दाढ़ी मुण्डवाते देखा। दाढ़ी मूण्डने के पश्चात् यू० डी० क्लोन के फव्वारे से उसके मुँह पर छींटे दिये गये।

हमने प्रश्न किया, कि क्या यहाँ राजनीतिक कैदी भी होते हैं ? हमें

दो कैदियों के पास ले जाया गया। उनमें से एक ने हमें बताया कि उसे दस वर्ष कारावास का दण्ड मिला है। अपराध यह है कि वह चेकोस्लावाकिया की ओर से रूस में जासूसी किया करता था। वह अच्छा पढ़ा लिखा व्यक्ति था और संगीत कला में निपुण था। इसलिए जेल में उसे संगीत का डायरेक्टर बनाया गया था। जब हम उसकी कोठरी में प्रविष्ट हुए, तो वह एक गीत के नोट लिख रहा था। उसने अपनी कोठरी में वायरलैस के यन्त्र लगा रखे थे। इन यन्त्रों के लगवाने का सारा खर्च उसने अपनी कमाई से किया था।

दूसरा राजनीतिक कैदी जिससे हमें मिलाया गया, एक रूसी था। उसके विरुद्ध बड़ा भीषण अपराध लगाया गया था। वह लाल सेना में हवाबाज था और आन्तरिक लड़ाइयों के दौरान में, जबकि रूस के पुराने जनरलों ने मित्र सरकारों की सहायता से सोवियत की शक्ति को कुचलने के लिये असंख्य आक्रमण किये तो वह लाल सेना से विश्वासघात करके अपने विमान उड़ाकर शत्रुओं से जा मिला था। अन्त में वह गिरफ्तार किया गया और उसके विरुद्ध मृत्यु दण्ड का फैसला दिया गया। अन्त में यह दण्ड दस वर्ष कारावास में बदल दिया गया। वह तीन चार वर्ष काट चुका है और आशा रखता है कि तीन चार वर्ष के पश्चात् मुक्त हो जाएगा। वह जेल के बिजली के सामान का इन्चार्ज है। उसकी कोठरी में रेडियो के यन्त्र भी लगे हुए हैं। उसके पास कुछ पुस्तकें भी थीं।

हमारे पास समय थोड़ा था। अतः हम जेलखाने को, पूरी तरह से जैसे हम चाहते थे, न देख सके। हमें दिल में ऐसा अनुभव हुआ कि जेल के जीवन का हमें प्रकाशमय अंश दिखाया गया है, तो भी दो बातें सर्वथा स्पष्ट थीं, एक यह है कि पुराने तरीके में जो अब भी बहुत से देशों में प्रचलित है, बहुत कुछ परिवर्तन किये गये हैं। दूसरी बात यह थी कि जेल के

अधिकारियों और सरकार के उच्च पदाधिकारियों की मनोवृत्ति जेल के सम्बन्ध में बहुत अच्छी थी। वास्तविक स्थिति या हालात चाहे अच्छे हों या न हों, परन्तु जेलों के सम्बन्ध में साधारण नियम, जो निश्चित किये गये हैं, वे उनसे बहुत अच्छे हैं, जो हमने किसी और जगह देखे हैं। प्रत्येक व्यक्ति, जिसे भारत के जेलों की जानकारी प्राप्त है और उन पाशविक तरीकों का, जिनसे हथकड़ियाँ, बेड़ियाँ लगाई जाती हैं और अन्य दण्ड दिए जाते हैं, वह इस अन्तर की कद्र करेगा। मास्को के कारागार का गवर्नर, जिसने हमें कारागार का निरीक्षण करवाया, जेल के जीवन के मानवी पहलू पर बहुत जोर देता रहा। वह कहता था कि हम सदा इन नियमों को दृष्टि के सामने रखते हैं और कैदियों को कभी अनुभव नहीं होने देते कि वह कम दर्जे का मानव बन गया है या गिर गया है। काश, कि भारत में हम लोग इस नियम को याद रखें और जेल के बाहर भी अपने दैनन्दन जीवन में इसका पालन करें।

जो कारागार हमने देखा, वह भीषण अपराधों के लिए दण्डित कैदियों का सण्ट्रल जेल था अर्थात् जिन लोगों ने हत्या या विद्रोह के अपराध किये थे। वहाँ प्रायः अधिक से अधिक दण्ड के भुगतने वाले कैदी थे, जो मृत्यु दण्ड से उतरकर दस वर्ष कारावास होता है। हमें बताया गया, जहाँ कम भीषण अपराधों के लिए दण्डित कैदी रहते हैं, वहाँ अवस्था और भी अच्छी है और कैदियों को अधिक स्वतन्त्रता दी जाती है। वे मचलके लिख कर कुछ दिनों के लिये घर भी जा सकते हैं। किसानों को यह छुट्टी फ़सल काटने के दिनों में दी जाती है, ताकि वे छुट्टी के दिनों में पूरा लाभ उठा सकें।

मिस फ्रेडएटली ने "सोशलिस्ट रिव्यू" के मार्च के अंक में एक रोचक लेख लिखा है और जारजिया में एक बाल्शेविक जेल का वृत्तान्त

लिखा है। यह जेल तफलिस में अवस्थित है। वह लिखती है कि कैदियों के साथ बड़ा मानवता का वर्ताव होता है और सबको शिक्षा दी जाती है। जिस बात पर दार्शनिक लोग वर्षों से बहस कर रहे हैं, रूसी उसको कार्यान्वित करने का प्रयत्न कर रहे हैं और उनके जेलखाने के अपराधियों को वहशी बनाने के स्थान पर अच्छे नागरिक बना रहे हैं। वहाँ अपराध का कारण शिक्षा की कमी या बुद्धि में दोष होना या आसपास खराब स्थितियाँ होना समझा जाता है। इसलिये अपराधियों के साथ आर्थिक परिस्थितियों के शिकार या रोगी या मूढ़ लोगों से ऐसा वर्ताव किया जाता है, जिन्हें समाज में रहने के योग्य बनाने के उद्देश्य से शिक्षा देने के लिए एक कांस्टिट्यूशन में ले जाया जाता है।

यदि यह वृतान्त सत्य है और जो कुछ हमने देखा है, वह रूस के जेलखानों की वास्तविक अवस्था है तो बिना किसी सन्देह के यह कहा जा सकता है कि रूस के कारागार में कैदी होना भारत के किसी कारखाने में काम करने से हजार दर्जा अच्छा है, जहाँ दस ग्यारह घण्टे प्रतिदिन काम करना पड़ता है, और इस पर एक अन्धेरे और रुद्ध (जिसमें हवा का गुजर न हो) मकान में, जहाँ बहुत से व्यक्ति रहते हों, तथा जो पशुओं के रहने के योग्य भी नहीं है, रहना पड़ता है। केवल यही बात कि वहाँ कुछ ऐसे कारागार हैं, जैसा कि हमने एक देखा, सोवियत सरकार के लिए गौरव का कारण हो सकती है।

इस प्रश्न पर विचार करते हुए हमें दो बातों को ध्यान में रखना चाहिए। सोवियत सरकार अपने राजनीतिक विरोधियों के साथ, जिन पर क्राँति के विरुद्ध प्रत्याक्रमणात्मक कार्यवाहियाँ करने का संदेह हो, अत्यन्त निर्दयता पूर्ण वर्ताव करती है। साधारण फौजदारी के नये नियम उन लोगों के साथ नहीं बरते जाते। क्योंकि उन्हें समाज का शत्रु समझा जाता है।

उन लोगों के साथ बहुत बुरा वर्ताव होता रहा है और विगतकाल में बहुत निर्दयता वर्ती गई है और इस कारण लाल खतरे और बाल्शेविक अत्याचार की कहानियाँ विख्यात होती हैं। सम्भव है कि इस प्रकार का वर्ताव अब न किया जाता हो, सिवाय उन अवसरों के जबकि मास्को युद्ध के खतरों के विचार से प्रभावित हो। परन्तु अब भी सोवियत सरकार अपने राजनीतिक विरोधियों पर कड़ा अंकुश रखती है। अस्तु साधारण कानून जनसंख्या के बड़े भाग अर्थात् ६५ प्रतिशत के साथ कोमल वर्ताव करता है और पाँच प्रतिशत जनसंख्या सन्दिग्ध समझी जाती है। उसकी बड़ी देख रेख की जाती है और उसके साथ कठोर व्यवहार होता है। सम्भवतः साधारण मजदूरों और किसानों के साथ अच्छा वर्ताव होता है और जार से सम्बन्धित और उन लोगों के साथ जो सरकार के विद्रोही हैं, कठोर वर्ताव के भागी समझे जाते हैं।

यह भी याद रखना चाहिए कि बाल्शेविकों के पास रुपया बहुत कम है। जो कुछ उनके पास है, उसे वे औद्योगिक और कृषि की उन्नति तथा शिक्षा प्रचार पर खर्च करना चाहते हैं। वह बड़े-बड़े जेलखानों के भव्य भवनों पर रुपया खर्च करना नहीं चाहते। वे कहते हैं कि समाज के उत्तम संगठन अथवा व्यवस्था करने से आशा है कि ऐसी स्थितियाँ पैदा हो जाएं कि बहुत से जेलखाने तोड़ देने पड़ें। इसलिए जेलखानों पर क्यों रुपया नष्ट किया जाए। अभी वे जार के समय के जेलखानों से काम चला रहे हैं। मास्को और बड़े बड़े नगरों में ये जेल-खाने अच्छे हो सकते हैं परन्तु प्राँतों में संभवतः वे ऐसे अच्छे नहीं हैं और सोवियत सरकार उन्हें उन्नत करने में रुपया नहीं लगाएगी और शायद इसी कारण से कई कारागारों की दुर्दशाएँ सुनने में आती हैं।

परन्तु एक जेलखाने में और उसके बाहर यदि उत्तम सामाजिक विधान या व्यवस्था के आदर्श को तथा फौजदारी क़ानून में मानवता के विचार को दृष्टिगोचर रखा जाए, तो यह चूने और ईंटों के जेल की सुन्दर इमारतों से अच्छा है। यदि यह आदर्श बना रहा तो सारी कठिनाइयों के होते हुए भी रूस उन्नति करेगा।

बारहवाँ परिच्छेद

अल्प-संख्या वालों की समस्या

हम में से प्रायः लोगों का यह विचार है कि भारत इस विषय में अत्यन्त अभागा देश है कि इसे अल्प संख्या वालों और विभिन्न श्रेणियों की उलझी हुई समस्या का सामना है। परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि बहुत से देशों को इस समस्या का सामना था और उन्होंने इसे हल कर लिया। विशेषतः रूस ऐसा देश है जहाँ बहुत से अल्पसंख्या वाले रहते हैं, जहाँ विभिन्न बोलियाँ बोली जाती हैं और विभिन्न प्रकार की सभ्यताएँ फैली हुई हैं। अस्तु हमारे लिए उन उपायों का अध्ययन करना लाभदायक होगा, जो बाल्शेविक लोग अल्पसंख्या वालों के सम्बन्ध में कार्य में लाए।

ज़ार के समय में १४० विभिन्न जातियाँ रूस में बसती थीं, जो रूसी भाषा नहीं बोलती थीं। बीस जातियाँ दस दस लाख व्यक्तियों की थीं। तातारियों की संख्या दो करोड़ थी और युक्रेनियों की २½ करोड़ से तीन करोड़ तक, पोल की ८० लाख और यहूदियों की जनसंख्या ७० लाख थी। रूसी भाषा न बोलने वाली जातियों की समस्त जनसंख्या ५७ प्रतिशत थी।

ज़ार के समय की सरकार की प्राचीन नीति यह थी कि एक जाति को दूसरी जाति से लड़ाया जाता था। बाहर के जो लोग रूस में स्थायी रूप से बस गए थे, उन्हें रूसी चर्च में दाखिल करके रूसी बनाने की चेष्टा की जाती थी। जो व्यक्ति इस अल्पसंख्यक श्रेणियों से सम्बन्ध रखता था,

वह प्रोफेसर बनना चाहे तो उसे रूढ़ीवादी चर्च में प्रविष्ट होकर अपना धर्म परिवर्तन करना पडता था। अल्पसंख्या वालों की बोली की प्रोत्साहना नहीं की जाती थी, प्रत्युत कई बार उनकी बोली को कुचला जाता था। १८३१ ई० में ज़ार के एक आदेशानुसार समस्त पोलिश विद्यालय बन्द कर दिए गए थे केवल यहूदी और मुसलमानों के धार्मिक विद्यालय जारी रखने की आज्ञा दी गई थी। इस प्रकार अल्पसंख्या वाली श्रेणियाँ पिछड़ कर रह गईं।

अक्तूबर १९१७ ई० की क्राँति के बाद सोवियतों की अखिल एशिया काँग्रेस के दूसरे अधिवेशन में निम्नलिखित घोषणा की गईः—

(१) रूस के निवासियों को स्वतन्त्रता और समता प्राप्त है।

(२) स्वराज्य (स्वायत्त शासन) का अधिकार प्राप्त है चाहे इसके लिए पृथक और अन्य स्वाधीन सरकार स्थापित करनी पड़े।

(३) प्रत्येक जाति की जातीय और परम्परागत तथा धार्मिक उच्चता रद्द की जाती है।

(४) जातिगत अल्पसंख्या वालों तथा पीढ़ियों को स्वतन्त्रता पूर्वक उन्नति करने के अवसर प्राप्त होंगे।

यूनियन सोशलिस्ट सोवियत रिपब्लिक छः गणतन्त्र राज्यों का फेडरेशन है। इन गणतन्त्र राज्यों में से कई स्वयं ही फेडरेशन हैं और इनके अतिरिक्त बहुत से प्रदेश खुदमुख्तार हैं अर्थात् प्रत्येक क्षेत्र में बहुत सी अल्प संख्या वाली श्रेणियाँ हैं और उनको खुदमुख्तारी (स्वायत्त शासन) प्राप्त है। वे अपनी बोलियों और सभ्यताओं को उन्नत कर सकती हैं। केन्द्रीय सरकार की नीति यह है कि न केवल इन गणतन्त्रों और खुदमुख्तार प्रदेशों को अपने तौर पर काम करने की आज्ञा दी जाए प्रत्युत उनके साधनों और उन

की संस्कृति को उन्नत करने में सक्रिय सहायता दी जाए। स्थानीय भाषाओं की शिक्षा के लिए स्कूल खोले जाते हैं और उन प्रदेशों की भाषा में सोवियत का काम किया जाता है और अपनी भाषाओं में समाचार पत्र छापे जाते हैं।

किसी बहुसंख्या वाली श्रेणी के राजनीतिक अधिकारों और सांस्कृतिक अधिकारों में विवेक से काम लिया जाता है। उनको वही अधिकार प्राप्त होते हैं जो अल्पसंख्या वाली श्रेणियों को होते हैं। उनके अधिकारों की विशेष रक्षा नहीं की जाती या अनुपात से अधिक मेम्बरी या पृथक प्रतिनिधित्व नहीं दिया जाता। साँस्कृतिक मामलों में उनको बहुत अधिक स्वतन्त्रता दी जाती है और उसके अधिकारों की विशेष रूप से रक्षा की जाती है। केन्द्रीय सरकार समझती है कि जब तक यूनियन में पिछड़ी हुई श्रेणियाँ रहेंगी, समस्त यूनियन की उन्नति रुकी रहेगी। इसलिए समस्त श्रेणियों को एक स्तर, पर लाने की कोशिश की जाती है।

१६२६ . २७ ई० में रूसी सोशलिस्ट फेडरेशन सोवियत रिपब्लिक के एक क्षेत्र में निम्नलिखित प्रायमरी स्कूल थे—

तुर्कों के लिये ११६७।
अगरोफन्ज के लिए १८१०।
पश्चिमी सभ्यता रखने वाले लोगों के लिये १२७२।
मंगोलियन और मञ्चोरियन पीढ़ी के व्यक्तियों के लिये २३३।
उत्तरी क़फ़कार के लिये ७८८।
उत्तर के निवासियों के लिये ३६।

स्कूल की पाठ्य पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में तैयार की जाती हैं। यूनियन में प्राइमरी शिक्षा ६२ विभिन्न भाषाओं में दी जाती है और ५२

भाषाओं में पुस्तकें तथा समाचार पत्र छापे जाते हैं। १६१७ ई० में सोवियत यूनियन की अल्प संख्यावालों के समाचार पत्रों की संख्या २१० थी, जिनकी सामूहिक प्रतियों की संख्या ६२८५८ थी।

क्राँति से पहले प्रायः जातियों की कोई नियमित रूप से लिखी जाने वाली भाषा न थी। अतः मोर्डो और कलमुक्स, ओराट तथा दक्षिणी सायबेरिया के निवासियों की कोई लिपी न थी। सोवियत सरकार ने अब १६ भाषाओं की लिपियाँ तैयार की हैं और उसने बहुत सी दूसरी भाषाओं की वर्णमाला में सुधार किया है और उन्हें अधिक सरल तथा वैज्ञानिक बना दिया है।

पूर्वी गणतन्त्री राज्य में ऐसे विद्यालय बनाए गए हैं जो देशी भाषाओं में शिक्षा देते हैं और उन भाषाओं को स्थानीय सोवियतों और पब्लिक इन्स्टिट्यूशनों में प्रचलित किया गया है। इस मामले में तातारस्तान में बहुत सफलता हुई है। तातारस्तान की देहाती सोवियतों में तातारी भाषा निम्नलिखित गति से प्रचलित की गई है —

१६२२ ई०	१६२३ ई०	१६२४ ई०	१६२५ ई०
२०	५०	८०	८५

देहाती सोवियतों ने भी इसी प्रकार की उन्नति की है। विगत दो तीन वर्ष के भीतर गैररूसी भाषाओं में शिक्षकों के तैयार करने की विशेष चेष्टा की गई है। इस उद्देश्य से बड़े स्कूलों में गतवर्ष में भाषाओं के २८ विभाग खोले गए। इन विभागों से कुछ वर्षों के उपरान्त सनातक नियमित रूप से निकला करेंगे।

शिक्षा विभाग भी शिक्षित युवकों के लिए कुछ असामियाँ सुरक्षित रखता है। विगत कुछ वर्षों में उन असामियों की निम्नलिखित संख्या थी।

१९२३ ई० में ९२१।

१९२४ ई० में १०३४।

१९२५ ई० में १७७५।

१९२६ ई० में १२८३।

इनमें २३६ व्यक्ति तातारी तुर्क थे।

इन पूर्वी गणतन्त्री राज्यों में महिलाएं उन्नति कर रही हैं। क्रांति से पहले अजबकस्तान में महिलाओं की बहु-संख्या पर्दानशीन थी। शिक्षित महिलाओं का अत्यन्त अभाव था और अर्ध-पराधीनता की अवस्था में थीं। अब मध्य एशिया के इस गणतन्त्री राज्य में २७६ महिला शिक्षा-गृह हैं, जिनमें १३२०० छात्राएं पढ़ती हैं। जातीय अल्पसंख्या वालों के छात्रों की सामूहिक संख्या में पिछले वर्ष २० प्रतिशत महिलाएं थीं। वे शिक्षा सम्बन्धी काम या डाक्टरी की ओर अधिक रुची रखती हैं।

रूसियों के किसी मामले के सम्बन्ध में इस अवसर पर किसी निश्चयात्मक परिणाम पर पहुँचना कठिन है परन्तु विगत पाँच वर्षों में जो कुछ उन्नति हुई है उससे विदित होता है कि अल्पसंख्या वालों का प्रश्न बहुत कुछ निपट चुका है। इसके यह अर्थ नहीं हैं कि पूर्ण समता स्थापित हो गई है और कोई खराबी शेष नहीं रही। रूसी यूनियन के प्रधानमंत्री रायकाफ ने पिछले वर्ष कहा था कि यद्यपि बहुत कुछ उन्नति हुई है परन्तु अभी बहुत कुछ करना शेष है और अविद्या तथा पक्षपात् या द्वेष की जड़ें उखाड़ने में हम अभी पूर्णरूपेण सफल नहीं हुए। कानून के अनुसार हमने यूनियन में समस्त जातियों की समता स्थापित कर दी है, परन्तु क्रियात्मक रूप में अभी तक वह साम्य देखने में नहीं आया। पूर्ण साम्य आर्थिक और सांस्कृतिक मतभेद दूर होने ही पर दूर हो सकता है तथा

महिलाएं भी स्वतन्त्र नहीं हो सकतीं, जब तक आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त न करें।"

रायकाफ का यह वक्तव्य निश्चय ही उन सफलताओं के सम्बन्ध में, जो अब तक प्राप्त नहीं हुई, ठीक है। परन्तु जो सफलताएं अब तक मिल चुकी हैं वे बड़ी हैं और उनसे विदित होता है कि यदि ठीक तौर पर काम किया जाए तो अल्पसंख्या वालों की समस्या सुगमता से शीघ्र ही सुलझ सकती है। इसके साथ यदि हिन्दुस्तान में ब्रिटेन के डेढ़ सौ वर्ष के शासन का मुकाबला किया जाए तो ब्रिटेन का शासन बहुत कम दर्जे का प्रतीत होता है। परन्तु हम धीरे से कहेंगे कि ब्रिटेन इस समस्या को हल करना ही नहीं चाहता।

———

तेरहवाँ परिच्छेद

शिक्षा

नए रूस का अध्ययन बहुधा पहलुओं से रोचक है। एक हिन्दुस्तानी के लिये रूसियों की नई नीति और व्यवस्था का एक अत्यन्त शिक्षाप्रद और दिलचस्प पहलू है और वह है शिक्षा की उन्नति और अविद्या के विरुद्ध रूस का शौर्यपूर्ण युद्ध। बड़े बड़े कृषि-प्रधान-क्षेत्र जहाँ लगभग अनपढ़ किसान रहते हों, वहाँ शिक्षा के प्रसार की एक ऐसी समस्या है, जो हिन्दुस्तान से विभिन्न नहीं। एक अमेरिकन शिक्षा-विशेषज्ञ डाक्टर लोसी एल० डब्ल्यू० डिक्सन ने एक छोटी सी पुस्तक 'नए रूस के नए विद्यालय'' लिखी है। उससे पता लगता है कि सोवियत सरकार इन समस्याओं को हल करने का किस प्रकार प्रयत्न कर रही है। यह पुस्तक उन पुस्तकों में से है, जो सोवियत रूस के सम्बन्ध में अत्यन्त सुन्दर जानकारी से भरी हैं, जिन्हें न्यूयार्क का वेनगार्ड प्रेस प्रकाशित कर रहा है। बाल्शेविक नेता और उनके अनुयायी, युवकों की शिक्षा को बहुत महत्व देते हैं। सारा संसार इस बात को समझता है कि केवल यथार्थ शिक्षा पद्धति ही एक ऐसा साधन है, जिससे अच्छे समाज का निर्माण किया जा सकता है। रूसी, युवकों की शिक्षा पर बहुत शक्ति और साहस लगा रहे हैं और यह काम योग्यतम पुरुषों और महिलाओं को सौंपा गया है। अक्तूबर की क्रांति के पश्चात् कुछ दिनों के भीतर ही, जब कि पेत्रोग्राद में गृह-युद्ध हो रहा

था और प्रत्येक व्यक्ति समझता था कि बाल्शेविकों का अब पतन होगा ऐसे नाज़ुक समय में भी उन्हें इस बात का अवकाश मिल गया कि अपने शिक्षा-कार्यक्रम की घोषणा करे। बाद को उन्होंने विज्ञप्ति निकाली कि वे दस वर्ष के भीतर सारे देश से अविद्या का नाम व निशान मिटा देंगे। यह कल्पित आकांक्षा न थी, प्रत्युत उन्होंने न केवल नौजवानों की शिक्षा के लिए एक निश्चयात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, प्रत्युत बड़ी आयु के व्यक्तियों की शिक्षा का कार्यक्रम भी बनाया।

वे अपने प्रयत्नों में असफल रहे। भाग्य उनके विरुद्ध था। गृह-युद्ध निरन्तर चलता रहा और बाहरी या विदेशी हस्तक्षेप, दुर्भिक्ष और नाकाबन्दी की लड़ाइयों ने देश को ध्वस्त कर दिया और उस दशा को दयनीय बना दी। यद्यपि वे सारे देश से अविद्या मिटाने में सफल न हुए तो भी इस दस वर्ष की अवधि में उन्होंने बहुत कुछ कर दिखाया।

रूसी शिक्षा-पद्धति का दूसरा विशेष पहलू विद्यालय और दैनन्दिन जीवन का मध्यवर्ती सम्बन्ध है। शिक्षा कोई आकाश की वस्तु नहीं है कि विद्यार्थियों का दैनन्दिन जीवन से कोई सम्बन्ध न रहे। प्रत्युत स्वीकार किया गया है कि सच्ची शिक्षा की नींव बच्चे की आस पास की स्थितियों और उसके अपने अनुभवों के अनुसार होनी चाहिए और उसे इस काम के योग्य बना दे, जो उसे बाद के जीवन में करना पड़ेगा। अस्तु शिक्षा का एक यथोचित कोर्स निश्चित करने के लिये एक बड़े शिक्षा विशेषज्ञ ने औद्योगिक कारखानों और कृषि-प्रधान प्रदेशों की स्थितियों का भली प्रकार से अध्ययन किया। अध्यापकों पर सदा जोर डाला जाता है कि अपने शिष्यों के जीवन की स्थितियों से अनभिज्ञ न रहें ताकि उनके अनुसार कोर्स या शिक्षा-क्रम बनाया जा सके।

स्थितियों के अनुसार यह आवश्यक था कि शिक्षा मातृ-भाषा में दी

जाए। सोवियत यूनियन में भारत की अपेक्षा बहुत अधिक विभिन्न प्रकार के व्यक्ति बसते हैं और अनेक विभिन्न बोलियां बोली जाती हैं। परन्तु कठिनाइयों के बावजूद इस नियम का कठोरता से पालन किया गया है कि प्रत्येक बच्चे को उसकी मातृभाषा में शिक्षा दी जाए। कई बार एक ही नगर में विभिन्न विद्यालयों में विभिन्न भाषाओं के द्वारा शिक्षा दी जाती है। स्थानीय भाषाओं की उन्नति के लिये यथा संभव प्रयत्न किये जाते हैं। विभिन्न क्षेत्रों की सोवियतों को यह आदेश है कि वह अपनी कार्यवाही उस क्षेत्र की भाषा में करें। सरकारी समाचार पत्र और पुस्तकें उन भाषाओं में छापी जाती हैं और लेनिन कैरेक्टर और मास्को में और दूसरे स्थानों पर स्थानीय भाषाओं की शिक्षा देने के लिये अध्यापकों को ट्रेनिंग दी जाती है। अभी वहां इस प्रकार के ४५ विद्यालय हैं। बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटियों में जातिगत अल्पसंख्या वालों के लिये विशेष फेक्लिटियां स्थापित हैं। अल्पसंख्या वालों की संस्कृति को उन्नति देने की इच्छा यहाँ तक है कि जहां ऐसी भाषाएं हैं जो केवल बोली जाती हैं, लिखने में नहीं आतीं; उनके लिये नई लिपियां बनाई गई हैं। जब मास्को में हमने शिक्षा विभाग का कार्यालय देखा तो हमें विद्यालयों की कुछ ऐसी पुस्तकें दिखाई गईं, जो विभिन्न लिपियों में छपी हुई थीं। कुछ भाषाओं की लिपियाँ फारसी लिपि से मिलती जुलती थीं और कुछ ऐसी थीं जिनको हम नहीं जानते।

सोवियत सरकार इस नीति पर कहाँ तक कार्यप्रायण है, वह इससे प्रकट होगा कि सायबेरिया के प्रदेश आर्क्टिक में एक छोटा सा कबीला बसता है। उस कबीले का नाम है कारागास। उसकी कुल जन-संख्या बच्चों के सहित ४०५ है। वे तुर्की बोली से मिलती जुलती बोली बोलते हैं। वह खाना-बदोश लोग हैं, जो अधिकतर शिकार पर निर्वाह करते हैं। उन लोगों के

बच्चों के लिये एक विशेष विद्यालय खोला गया है । यह विद्यालय केवल सर्दी के मौसिम में खुला रहता है क्योंकि लड़के गर्मी के मौसिम में अपने माता पिता के साथ घूमते रहते हैं। एक और भी खाना बदोश जाति जिप्सियों की है । उनके तीन विद्यालय हैं और प्रयत्न किया जा रहा है कि उनकी बोली को लिपि-बद्ध किया जाए । यह सुगम काम नहीं है। क्योंकि जिप्सियों की भाषा में वर्णमाला नहीं है।

सोवियत संघ में समस्त अल्पसंख्या वालों की गणना रोचकता मे शून्य नहीं, जिनमें यूक्रेनियन, लटावियन, अस्थोनियन जर्मन, फिनिस, अर्मेनियन, सुफेद रूसी, समोयड, आस्टियाक्स, मंगोलियन, याकूत, तातारी, बशकीर, तुन्गस बर्यात, याकागीर, काम 'छडोल, अस्कीमो, करगैस, हकासेन, अदरेत, चोदाश, कोमा मारी, काल्मक, अंगश, मोर्दवान्ज, उत्तरी कफ़कार के असायरीन और कोरियन सम्मिलित हैं । याद रहे कि यह सूची पूर्ण नहीं है।

जिस समय यह लेख लिखा जा रहा है, समाचार पत्र लिखते हैं कि लेनिन ग्राद की एकडेमी आफ सायंस ने बौद्ध साहित्य अथवा संस्कृति के अध्ययन के लिए एक प्रतिष्ठान अर्थात् इंस्टिट्यूट स्थापित किया है, जो बौद्धधर्म का इंसायक्लोपेडिया तैयार कर रहा है और अनुसंधान के लिए बौद्धों की एक अंतर्राष्ट्रीय कॉग्रेस बुलाई जाएगी।

यह बात भी बड़ी दिलचस्प है कि रूसी संघ की बहुत से दूर अवस्थित गणतान्त्रिक राज्यों में, जैसे तातार और बशकीर में महिलाओं को, जो अभी थोड़े दिन हुए पर्दे में रहती थीं, अध्यापिकाओं के रूप में तैयार किया जा रहा है।

सोवियत शिक्षा का तीसरा पहलू जन साधारण का संगठन है, जो

साम्यवाद के नियमों का अनिवार्य परिणाम है। प्रायः देशों के निजी स्कूलों में अच्छी प्रकार की शिक्षा केवल धनाढ्य लोगों के लड़कों को दी जाती है, परन्तु रूस में सबको अच्छी प्रकार की शिक्षा देने का प्रयत्न किया जाता है, जो इस नियम पर आधारित है कि शिक्षा साम्यवादात्मक और आपस की सहायता से होनी चाहिए। क्योंकि उद्देश्य यह नहीं कि कोई एक व्यक्ति अपने लिए शिक्षा प्राप्त करे या व्यक्तिगत रूप में कलाकार या विद्वान बन जाए प्रत्युत उद्देश्य यह है कि उसमें यह योग्यता उत्पन्न हो जाए कि दूसरों तक विद्या पहुँचा सके और उनसे विद्या प्राप्त कर सके। लेनिन की विधवा क्रोपस्काया ने, जो एक प्रतिभायुक्त शिक्षा-विशेषज्ञा है, कहा है कि "प्रत्येक प्रकार की शिक्षा का अन्तिम लक्ष सामूहिक नियम है। बच्चों के सामूहिक संगठन के सिवा सामाजिक शिक्षा और किसी प्रकार से नहीं दी जा सकती। यही नियम इसकी नींव है और यही इसका निचोड़ है।

उप-ज़ार के समय में शिक्षा का प्रबन्ध अधिकतर पादरियों के हाथ में था, जिसका उद्देश्य यह था कि ज़ार और धर्म की भक्ति सिखाई जाए और ठीक जैसा कि उद्देश्य हिन्दुस्तान में है कि सरकारी कार्यालयों के लिए क्लर्क जुटाए जाएँ। छोटी श्रेणियों को अपनी हैसियत से बढ़ कर उन्नति करने का अवसर नहीं दिया जाता था। ज़ार के समय में एक शिक्षा मन्त्री ने यह नियम बनाया था कि कोचवानों, बावर्चियों, धोबियों और घरेलू नौकरों को उनकी हैसियत से बढ़कर उभरने का अवसर न दिया जाए। उस समय में बच्चों को निम्नलिखित कथोपकथन सिखाया जाता था:—

प्रश्न- ज़ार के सम्बन्ध में हमारे कर्तव्यों के विषय में धर्म क्या सिखाता है?

उत्तर—पूजा, भक्ति, कर देना, सेवा, प्रेम और प्रार्थना ये सब बातें पूजा और भक्ति (वफ़ादारी) के शब्दों में आ जाती हैं।

सोवियत के शिक्षा विभाग ने सब से पहले ये आदेश जारी किए कि

विद्यालयों का धर्म से कोई सम्बन्ध न रहे और गैर-रूमी श्रेणियों को अपनी भाषाओं में विद्यालय स्थापित करने के लिये तैयार किया जाए। तीन वर्ष से सात वर्ष तक के बच्चों को भी शिक्षा दी जाए और आठ वर्ष से बारह वर्ष तक प्रारम्भिक शिक्षा, तेरह से सोलह वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा दी जाती है। यह सारी शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य तथा देश व्यापी होती है। यह भी घोषणा की गई है कि प्रत्येक रूस-निवासी उच्च शिक्षा का अधिकारी है। पन्द्रह या सोलह वर्ष की आयु तक बच्चों को सामाजिक शिक्षा देना परिवार ही का कर्तव्य नहीं अपितु सरकार का भी कर्तव्य है। इस शिक्षा का उद्देश्य यह बताया गया है:—

"प्रत्येक व्यक्ति सब प्रकार की उन्नति करे। वह स्वस्थ्य, सुदृढ़, चुस्त साहसी, दलेर हो तथा विचारों और कर्म में स्वतन्त्र हो। वह कई प्रकार से भद्रता रखता हो। और एक ऐसा योग्य व्यक्ति हो, जो सदा मजदूरों की भलाई का इच्छुक रहे क्योंकि इसी में मानव जाति की भलाई का रहस्य छिपा है।"

शिक्षा तीन वर्ष की आयु से आरम्भ होती है। इससे पहले बच्चा प्रत्युत उसकी गर्भवती माँ स्वास्थ्य रक्षा विभाग की देख रेख में होती है। गर्भवती मजदूर स्त्रियों को बच्चा जनने से तीन चार महीने पहले और बाद में प्रत्येक प्रकार के कार्य से छुट्टी दे दी जाती है और वेतन पूरा मिलता है तथा डाक्टरी सहायता मुफ्त मिलती है। माताओं को, काम के घण्टों के समय में से बच्चों को, दूध पिलाने के लिये पर्याप्त अवकाश दिया जाता है, जो कारखाने के निकट झूलों में पड़े रहते हैं।

प्रत्येक कारखाना और ट्रेड यूनियन कलचर फण्ड (संस्कृति कोष) में चन्दा देती है। इस फण्ड से झूले (पालने), धायागृह, स्कूल, किण्डर

गार्डन का सामान खिलौने आदि और बच्चों के खेलों के मैदानों के लिये सहायता दी जाती है। उसमें सफ़ाई, खुराक और नींद पर विशेष ध्यान दिया जाता है। और शिक्षा के कोर्सों में खेल कूद, कहानियाँ, यात्रा संगीत, चित्र-कारी और ड्रामा सम्मिलित हैं। इस छोटी ही आयु में बच्चों में सहकारिता का स्वभाव (टेव) पैदा किया जाता है। विगत कुछ वर्षों के भीतर छोटे बच्चों के विद्यालय दस हज़ार तक खुल चुके हैं।

ट्रेड यूनियन अपनी आय का दस प्रतिशत भाग युवकों की शिक्षा के लिये देती है और मालिकों के साथ इसका समझौता है कि जितने वेतन सामूहिक रूप में मज़दूरों को वे देते हैं उसका एक प्रतिशत भाग इस फण्ड में देंगे।

आरम्भिक और बाद की शिक्षा एक ही प्रकार के विद्यालयों में दी जाती है और उन्हें संयुक्त लेबर विद्यालय कहते हैं। आरम्भिक शिक्षा को पहला दर्जा और बाद की शिक्षा को दूसरा दर्जा कहते हैं। पूरा कोर्स सात वर्ष से नौ वर्ष तक का होता है। प्रवेश के समय कोई परीक्षा नहीं ली जाती और वर्ष के काम के बाद जाति (स्त्री जाति और मनुष्य जाति) के अनुसार श्रेणी में उन्नति दी जाती है, जिसका अनुमान उस श्रेणी में उसके सामूहिक काम से किया जाता है। निश्चित समय के पश्चात् लड़कों का डाक्टरी निरीक्षण होता है और बच्चों के स्वास्थ्य पर व्यक्तिरूप में ध्यान दिया जाता है। दुर्बल बच्चों से भारी काम नहीं लिया जाता। जिनकी दृष्टिशक्ति दुर्बल हो, उन्हें पहली पंक्ति में बिठाया जाता है। अधिकतर डाल्टन-शिक्षा-पद्धति व्यवहार में लाई जाती है और व्याख्यान नहीं दिए जाते।

विद्यालयों में लड़कों के शासन प्रबन्ध की प्रोत्साहना की जाती है और विद्यार्थियों की बहुत सी सभाएँ हैं तथा विद्यालय का कार्यक्रम बनाने में विद्यार्थी बड़ा भाग लेते हैं। साम्यवादी लोग वर्गीय-युद्ध में बड़ा विश्वास

रखते हैं। परन्तु जहाँ तक विद्यालयों का सम्बन्ध है, लेनिन की विधवा क्रोपस्काया कहती है कि विद्यार्थियों का स्वराज्य जवान व्यक्ति के राजनीतिक जीवन की नक्ल नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बच्चों के जीवन में न तो श्रेणी-गत संघर्ष होता है न श्रेणी-प्रभुत्व होता है। विद्यालय भावी युग के समाज का एक निशान है, जिसमें विभिन्न प्रकार के वर्ग या भेद-भाव न होंगे। परन्तु इस प्रशंसनीय आदर्श के बावजूद विद्यालयों के भीतर बहुत कुछ झगड़े और विरोध पाए जाते हैं।

विद्यालयों में यात्रा का तरीक़ा बहुधा प्रयोग में लाया जाता है। इस का कारण यह है कि आरम्भिक विद्यालयों में साज़ समान और पुस्तकों का अभाव था। विद्यार्थियों को छोटी छोटी मण्डलियों में बाँट कर अजायबघरों, (संग्रहालयों) ऐतिहासिक स्थानों. आर्ट गैलरियों और प्रकृति के अध्ययन के लिए बाहर ले जाया जाता है। यदि फण्ड पर्याप्त न हो तो मार्ग में रुपया प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है।

शिक्षा का दूसरा महत्त्वपूर्ण तरीका किसी उद्देश्य को क्रियात्मक रूप में प्राप्त करना होता है। उस उद्देश्य को समस्त सरगर्मियों का केन्द्र बना लिया जाता है जैसे किसी गाँव को उन्नत करना है, तो उसके जीवन के प्रत्येक पहलू के लिए काम किया जाएगा। उदाहरणार्थ गाँव की फसल और कृषि की उपज, स्वास्थ्य रक्षा, स्थानीय व्यापार, सामाजिक जीवन, गांव और नगर के मध्य आपस के संबन्ध, देहाती जीवन में त्रुटियों का पता लगाना, उनके कारण और निराकरण के उपायों को कार्यान्वित करना, गाँव की शासन व्यवस्था और पब्लिक कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त करके काम करना। ऐसे उद्देश्यों के लिये विद्यार्थियों को देहात में काम करने पर इच्छुक बनाया जाता है ताकि जो कुछ उन्होंने पढ़ा है उसे कार्य रूप में लाकर देखें।

स्वास्थ्य रक्षा की क्रियात्मक शिक्षा इस प्रकार दी जाती है कि छात्रों को

व्यक्तियों और परिवारों के तथा समस्त आबादी के स्वास्थ्य को उन्नत करने के काम पर लगाया जाता है। शरीर के अंग किस प्रकार काम करते हैं, खुराक (भोजन) क्या होनी चाहिए। पाचन शक्ति कैसे ठीक रह सकती है ये सब बातें सिखाई जाती हैं और शराब के बुरे प्रभावों का दिग्दर्शन प्रदर्शनों द्वारा कराया जाता है।

इसी प्रकार प्रकृति के दृश्यों, बच्चों के जीवन मानवी सम्बन्धों, राष्ट्रीय जीवन आदि अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती है। अभिप्राय यह है कि समष्टि रूप से समस्त राष्ट्र और जाति की सेवा का विचार उत्पन्न हो और जो विद्या विद्यार्थी ने प्राप्त की है, उसे न केवल निजी लाभ व हित के लिये प्रत्युत जनता की भलाई और हित के लिये काम में लाएँ।

अध्यापकों के लिए शिक्षा के इसी प्रकार के कार्यक्रम प्रकाशित किये जाते हैं। परन्तु यह बात स्पष्ट कर दी गई है कि ये केवल उनके साधारण पथ प्रदर्शन के लिये हैं। प्रत्येक अध्यापक को दूसरे अध्यापकों और लड़कों की सहायता से अपने नये कार्यक्रम बना लेने चाहिएं। खाली बातें बनाने और बनावटी मनोभाव पैदा करने की चेष्टा न करें। लड़कों में स्वयं सोच विचार करने की टेव डाली जाती है ताकि वे स्वयं परिणाम निकालें।

विद्यालयों पर उनके आस पास के इलाके का, जहां वे अवस्थित हैं, बहुत प्रभाव पड़ता है और वह इलाका क्रियात्मक रूप से परीक्षागार का काम देता है। देहाती इलाकों में गाँव की स्थितियों को ध्यान में रखा जाता है। यदि विद्यालय किसी कारखाने के निकट है, तो उसके कारण कई प्रकार के लेख या निबन्ध पढ़ाने पड़ेंगे, जैसे भूगोल, सांइस और गणित।

नागरिक प्रदेशों में शिक्षा का अच्छा प्रसार है, परन्तु देहाती प्रदेशों में अभी बहुत कुछ करना शेष है, तो भी किसान लोग शिक्षा के प्रचार

में बहुत रुची लेने लगे हैं और कई स्थानों पर उन्होंने विद्यालय स्वयं अपने हाथों से बनाये हैं। वैज्ञानिक के परीक्षणों के अनुसार एक अद्भुत बात यह मालूम हुई है कि प्रायः देहाती लड़का नागरिक लड़के की अपेक्षा बुद्धि और प्रतिभा में अधिक तेज होता है। इसका कारण सम्भवतः यह है कि वह प्रकृति के साथ अधिक निकट सम्बन्ध रखता है और विद्यालय का कोर्स इसके प्राकृतिक विकास को सहायता देता है।

रूस के कई भागों में भूमि इतनी उपजाऊ नहीं है कि किसान के निर्वाह के लिए पर्याप्त उपज हो सके। इसलिए उन्हें कोई और काम भी करना पड़ता है। अस्तु हाथ की खड्डियों पर वे कपड़ा बुनते हैं और घर की खड्डी पर निरन्तर काम होता रहता है, जिस पर परिवार के सदस्य अपने बच्चों के सहित काम करते रहते हैं।

देहाती शिक्षा की उन्नति का थोड़ा सा अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि १९१३ ई० में देहाती लैटरबक्सों की संख्या केवल २८०० थी और १९२६ में ६४००० थी, वह भी यात्री अर्थात् चलते फिरते डाकखानों को छोड़ कर, जो दूर दूर के गांवों के लिए हैं। इन यात्री डाकखानों के ड्राइवर कृषि-सम्बन्धी सामान वितरण करते हैं। १९२३ ई० में 'किसानों का ग़ज़ट" जारी हुआ था, जिसकी (प्रति संस्करण की) संख्या दस लाख तक पहुँच गई है। इसमे खेती बाड़ी के सम्बन्ध में प्रत्येक विषय पर बहस की जाती है। इस अखबार के कार्यालय में लाखों चिठ्ठियां आती हैं, जिनमें प्रश्न पूछे जाते हैं, अधिकारियों की शिकायतें की जाती हैं और उनकी जाँच की जाती है तथा जहाँ कहीं आवश्यक हो शिकायतों को दूर किया जाता है।

सोवियत सीनेमा फिल्मों को शिक्षा सम्बद्ध उद्देश्यों से बहुधा प्रयोग

में लाते हैं। उनके एक नाट्यकार ने हाल में एक फिल्म "देहाती पॉलिसी" के नाम से तैयार की है। उसमें किसानों के जीवन के समस्त पहलू, विशेषतः किसानों की सच्ची समस्याएँ और कठिनाइयाँ दिखाई गई हैं और यह प्रयत्न किया गया है कि दर्शक लोग इन कठिनाइयों पर विचार करके इनके समाधान की खोज करें।

क्रांति प्रारम्भ में नगर के मजदूरों का काम था और किसान उसमें धीरे धीरे या बाद में सम्मिलित हुए। लम्बे समय तक शहरियों और देहातियों के मध्य खुल्लम खुला विरोध था, और किसानों की ओर से दबाव पड़ने ही पर लेनिन ने नई आर्थिक नीति ग्रहण की, जिसमें साम्यवाद के मूल नियमों की उपेक्षा की गई है। दोनों आदर्शों के मध्य अभी तक विरोध या मतभेद चल रहा है और रूस की गृह-नीति (आन्तरिक नीति) का यह एक महत्त्व-पूर्ण पहलू है। अधिकारी वर्ग गाँवों और शहरों के मध्य पूर्ण रूप से समझौता कराने के पक्ष में हैं। लेनिन ने इस उद्देश्य के लिए एक विशेष शब्द घड़ा था, जिसका अर्थ है, "बतख की दुम"। शहरों और देहात की एकता के लिए एक संस्था १६२३ ई० में बनाई गई थी। अब उसमें लाखों सदस्य सम्मिलित हैं और उसकी शाखाएँ सारे देश में फैली हुई हैं। कारखानों की सभाएँ और मजदूरों के क्लब इसी उद्देश्य से बनाए गए थे कि देहाती क्षेत्र के साथ मेल जोल रखें और देहात की स्थितियों को सुलझाएँ अथवा ठीक करें।

अविद्या के विरुद्ध विभिन्न उपायों से युद्ध किया गया। ट्रेड यूनियन के मजदूरों के क्लब, किसानों की सभाएँ, कोआपरेटिव सोसायटियाँ, जेलखाने, ये सब शिक्षा केन्द्रों के रूप में काम में लाए गए। जवानों को कृषि और उद्योग की शिक्षा देने के लिए प्रतिदिन और केवल रविवार को खुलने वाले विद्यालय जारी किए गए। अविद्या दूर करने के लिए एक असाधारण

कमेशन नियुक्त हुआ और अविद्या का बेड़ा ग़र्क करने वाली संस्था स्थापित हुई, जिसमें बहुत से सदस्य थे। उद्देश्य यह नहीं था कि साधारण लिखना पढ़ना या हिसाब किताब सिखा दिया जाए, प्रत्युत उद्देश्य यह था कि लोगों में सामाजिक ज्ञान पैदा किया जाए, ताकि देश को उन्नति देने के लिए मिलकर काम करने की इच्छा उत्पन्न हो। लायब्रेरियों (पुस्तकालयों) की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है और प्रत्येक लायब्रेरी के साथ एक या एक से अधिक स्टडीसर्कल (अध्ययन मण्डल) हैं। चलते फिरते पुस्तकालय भी हैं। छोटी छोटी सस्ती पुस्तकें, जिनमें किसानों और मज़दूरों की दैनन्दन समस्याओं पर बहस होती है, लाखों की संख्या में छापी जाती हैं।

इन सब प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ है कि शहरी क्षेत्रों और कारखानों के मज़दूरों के मध्य क्रियात्मक रूप से अविद्या दूर हो गई है। परन्तु किसानों पर अभी तक कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ा। अन्य कई उपायों के अतिरिक्त लाल सेना के द्वारा भी किसानों को शिक्षा दी जाती है। इस सेना में अधिकतर किसान ही भर्ती होते हैं। दो वर्ष तक किसानों को इस सेना में काम करना पड़ता है। इस अवधि में उन्हें एक शैक्षिक कोर्स पढ़ाया जाता है और सेना से नाम कटने से पहले एक विशेष क्रियात्मक शिक्षा कोर्स उन्हें गाँव में शिक्षा सम्बन्धी तथा संस्कृति सम्बन्धी कार्य करने के योग्य बना देता है। बहुत से लोगों को सेना में शिक्षा प्राप्त करना होता है। जब शिक्षा पाकर अपने घर वापस आते हैं, तो वह गाँवों की परिस्थितियों को ठीक करने और शिक्षा प्रसार में सहायता देते हैं।

विशेष प्रकार के विद्यालय और शिक्षागृह तथा अनुसंधान प्रतिष्ठान, औद्योगिक विद्यालय, मज़दूरों की फेकल्टियाँ, किसानों के विद्यालय, बहरे और अन्धों के विद्यालय, चित्रकारी और संगीत के विद्यालय प्रचुर संख्या में पाए जाते हैं। एक अत्यन्त महत्त्व पूर्ण विद्यालय अन्धों, गूंगों और बहरों के

मनोविज्ञान के सम्बन्ध में हैं। बच्चों के स्वभाव का निरीक्षण करने के लिए बड़े बड़े दार्शनिक, डाक्टर और शिक्षा-विशेषज्ञ इस विद्यालय में काम करते हैं।

उच्च शिक्षा के लिए बीस के लगभग विश्वविद्यालय हैं। उनके अतिरिक्त मास्को में साम्यवादियों के दो विशेष विश्वविद्यालय हैं, जिनमें से एक का नाम पूर्वी विश्वविद्यालय है और दूसरे का नाम सन यत सन विश्वविद्यालय है। इनमें साम्यवादियों के नियम, सिद्धान्त और प्रचार के तरीके सिखाए जाते हैं।

क्रांति के पश्चात् प्रायः यह झुकाव पाया जाता था कि पुराने शासन काल से सम्बन्ध रखने वाली जो भी वस्तु है, उसे नष्ट कर दिया जाए। प्राचीन समय के सुविख्यात और प्रामाणिक रूसी लेखकों की कृतियों (पुस्तकों) को भी घृणा के साथ पूंजीवादियों की कृतियाँ कहा जाता था और उन्हें पढ़ाई में नहीं लिया जाता था। धर्म पर बड़े जोर शोर से आक्रमण किये जाते थे। परन्तु धीरे धीरे यह झुकाव [मनोवृत्तियां] कम हो रहे हैं। विद्यालयों में धर्म के विरुद्ध सरगर्मी से प्रचार नहीं किया जाता, यद्यपि शिक्षा में धर्म का कोई संकेत भी नहीं होता।

मेक्सिम गोर्की ने रोलाँ को जो पत्र लिखा था और जो वर्तमान में समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है, उसमें लिखा है कि जार के समय के रूसी लेखकों की पुस्तकें बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं और उनका आदर किया जाता है। रूसी चाहे वह साम्यवादी ही हो परन्तु ललित कलाओं से उसको विशेष लगाव होता है और अच्छे साहित्य, कारीगरी और संगीत का वह आदर करता है।

लेनिन स्वयं भी विख्यात रूसी लेखकों की कृतियों [पुस्तकों] को बड़े

चाव से पढ़ता था और अच्छे संगीत का उसके हृदय पर बड़ा प्रभाव था।

रूस के वर्तमान शिक्षा-मंत्री के सम्बन्ध में एक कहानी बताई जाती है, जिससे उसके विचारों का पता चलता है। क्रांति के प्रारम्भिक दिनों में, जबकि गृह युद्ध हो रहा था, समाचार मिला कि मास्को में क्रेमलिन दुर्ग का एक भाग ध्वस्त कर दिया गया। यह समाचार बाद को मिथ्या सिद्ध हुआ। उस समाचार का लोना चारस्की पर बड़ा प्रभाव हुआ था। वह भीगी आँखों के साथ लेनिन के पास दौड़ा दौड़ा गया और अपना त्यागपत्र सामने रख दिया। उसने कहा कि मैं सहन नहीं कर सकता कि विगतकाल में जो सुन्दर भवन बनाए गए थे, वे सब नष्ट और ध्वस्त कर दिए जाएं। उसे त्याग पत्र वापस लेने पर राजी कर लिया गया, परन्तु उस समय जबकि रूस की ललित कलाओं का इञ्चार्ज बना दिया गया। अब वह शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारी के रूप में पुस्तकालयों, अजायबघरों, संगीत, सिनेमाओं आदि की देख रेख करता है। वह एक कवि और नाट्यकार है और मानव जाति से पूरी सहानुभूति रखने वाला मनुष्य है और साथ ही एक क्रांतिकारी तथा साम्यवादी है। उसने रूस में एक ऐसी शिक्षा-पद्धति चलाई है, जिसका ध्येय अत्यन्त विशाल है।

एक और नेत्री, रूस की शिक्षा जिसकी ऋणी है, श्रीमती करपस्काया है, जो अपने पति लेनिन के संकट के दिनों में और सफलता के दिनों में उस के साथ रही है, देश निकाले के दिनों में भी शिक्षा की समस्याओं पर उसका विशेष ध्यान केन्द्रित रहा। उस समय उसने एक पुस्तक लिखी थी, जिसका नाम है "जन-शिक्षा और स्वतन्त्रता"। वह अत्यन्त सादा वस्त्र पहनती है। वह सुन्दर नहीं है। परन्तु कुछ क्षणों की बातचीत के बाद ही उसके गुण प्रकट होने लगते हैं। लेनिन की मृत्यु के बाद सोवियत कांग्रेस

में भाषण करते हुए उसने जो कुछ कहा था, उससे उसके विचारों का अनुमान हो सकता है। उसने कहा—

साथियो, मर्द व औरत मजदूरो ! स्त्री व पुरुष किसानो ! लेनिन के व्यक्तित्व का दिखावे का आदर न करो, उसकी स्मृति में बुत मत बनाओ। उसने अपने जीवन में इन चीजों की कभी इच्छा नहीं की थी। याद रखो कि इस देश में अत्यन्त दरिद्रता और तबाही विद्यमान है। यदि तुम लेनिन के नाम का आदर करना चाहते हो तो बच्चों के होम किण्डरगार्टन, विद्यालय, पुस्तकालय, चलते फिरते औषधालय, हस्पताल, लंगड़े लूलों के निवास-गृह आदि बनाओ।"

———

चौदहवाँ परिच्छेद

कृषक और भूमि

सोवियत यूनियन में मास्को का बड़ा प्रभाव है। वह सारे रूस पर छाया हुआ है और संसार के दूसरे देशों पर प्रभाव डालता है। परन्तु मास्को और लेनिनग्राद तथा अन्य नगर देहात के समुद्र में कुछ द्वीपों से अधिक हैसियत नहीं रखते। क्योंकि हिन्दुस्तान की भाँति रूस में भी असंख्य देहात हैं वह कृषि-प्रधान-देश है। उसकी ८० प्रतिशत जनसंख्या देहात में बसी हुई है और उसके मजदूरों की ७५ प्रतिशत संख्या कृषि कार्य करती है।

देश में औद्योगिक उन्नति करने के अत्यन्त प्रयत्न किये गये। परन्तु अभी लम्बे समय तक रूस अधिकतया कृषि-प्रधान-देश ही रहेगा। अस्तु रूस के समझने के लिए उसके देहात में जाना चाहिए और किसानों को काम करते हुए देखना चाहिए तथा सोवियत सरकार की लाभ हानि जाँचने के लिए उस अन्तर को देखना चाहिए, जो नई सरकार ने किसानों की स्थिति में उत्पन्न किया है।

परन्तु देश की असीम विशालता इस जाँच को कठिन बना देती है। देहाती स्थितियाँ एक दूसरों से बहुत विभिन्न हैं। मास्को के निकट ही देहात का जो हाल है, सम्भव है कि दूर दूर के देहात में इससे

विभिन्न हो। एक दो वर्ष का समय हुआ यह समाचार मिला था कि सायबेरिया के जंगलों में एक देहाती दल एकाएक एक ऐसी बस्ती में पहुँचा, जहाँ पन्द्रह सौ व्यक्ति रहते थे, जिनके यातायात के साधन बाहरी संसार से सर्वथा कटे हुए थे। उन्होंने महायुद्ध की बात तक न सुनी थी। उनके विचार में जार अभी तक सिंहासन पर विराजमान था। इस सूचना पर कठिनता से विश्वास किया जा सकता है यद्यपि यह लेनिनग्राद के एक समाचार-पत्र में प्रकाशित हुई थी। परन्तु चाहे यह मन घड़न्त कहानी हो या बढ़ा चढ़ा कर लिखी गई हो, इससे सोवियट यूनियन के इलाकों में जो विभिन्न हालतें हैं, उनका कुछ अनुमान हो सकता है।

अभी अधिक समय नहीं गुजरा कि किसानों की पराधीनता अर्थात् दासता रूस में विद्यमान थी। १८६३ ई० में उन किसानों की स्वतन्त्रता की घोषणाएं प्रकाशित हुई थीं। उन दिनों किसानों की ६ करोड़ जन-संख्या में से ५ करोड़ किसान विभिन्न प्रकार के दास (गुलाम) थे, जो सरकारी भूमियों पर या शाही खानदान की जमीनों पर या बड़े जमींदारों की जागीरों में काम करते थे। उस समय भूमि के मालिकों को कानून के अनुसार पूर्ण अधिकार प्राप्त थे कि अपने किसानों या कृषकों के साथ जैसा चाहें बर्ताव करें, उन्हें घूंसों और कोड़ों के साथ दण्ड दें। उन्हें यह भी अधिकार था कि आज्ञा न मानने वाले किसानों को सायबेरिया में देश निकाला दे दें।

स्वाधीनता के आदेश से किसानों को अत्याचार के पंजे से छुटकारा नहीं मिला था। साधारणतः उनके पास बहुत थोड़ी भूमि होती थी, जो अच्छी प्रकार की न थी और भूमि का मोल तथा लगान का बोझ, जो पुराने जमींदारों को अदा करना पड़ता था, गाँव के सिर पर असह्य बोझ होता था। सरकार की ओर से जमीन खरीदने के लिये तकावी धन दिया गया।

इस नए प्रबन्ध से केवल जमींदारों को लाभ पहुँचा, जिन्हें नक़द रुपया मिला और सब प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त हो गए।

जब क्रांति का आन्दोलन गाँवों में पहुँचा, तो वहाँ उसको बहुत कम आदर दिया गया। रूस के किसान हिन्दुस्तानी किसानों की भाँति स्वतन्त्रता के अस्पष्ट विचारों को नहीं समझ सकते हैं। वे केवल यह चाहते हैं कि उनके पास भूमि हो और लगान थोड़ा हो तथा उन पर कोई अत्याचार न करे। रूस के कुछ विख्यात उपन्यासकारों ने उस समय के हालात की कहानियाँ लिखी हैं, जबकि नौजवान क्रांतिकारियों को किसान लोग संदेह की दृष्टि से देखते थे और कई बार उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया करते थे।

रूस और जापान के युद्ध के पश्चात् किसानों ने कई स्थानों पर सिर उठाया, कई स्थानों पर दंगे हुए और गड़बड़ फैली। सरकार ने उन्हें दबा दिया। परन्तु आन्दोलन पूरे रूप से बन्द न हुआ और किसानों की एक यूनियन बनाई गई, जिनका नारा यह था कि "समस्त भूमियाँ उन लोगों की होनी चाहिएं, जो उन पर काम करते हैं।"

किसानों की इस प्रकार सहायता की गई कि पुराने ढंग की गाँव-सभाएं बनाई गईं, जिन्हें मीर के नाम से याद किया जाता है। ये एक प्रकार की पंचायतें थीं, जो वर्तमान समय की स्वतन्त्रता के नियमों पर स्थापित की गईं। उनके जलसे प्रायः खुले मैदानों में होते थे, जिनमें गाँव के स्थानीय मामलों पर बहस की जाती थी। कई बार गाँव की शामलात भूमि के वे मालिक होते थे, जिसकी उपज को वे आपस में बाँट लिया करते थे। वहाँ सरकारी लोकल बाडीज़ (स्थानीय सभाएं) भी होती थीं जो जेमस्टो कहलाती थीं। उनकी मैम्बरी के लिए मतदान (वोट) का अधिकार सम्पत्ति के अनुसार प्राप्त होता

था और प्रायः जमींदारों का उनमें प्रभुत्व होता था। वे हिन्दुस्तान के डिस्ट्रिक्ट बोर्डों से सर्वथा मिलती जुलती थीं।

युद्ध से सबसे अधिक हानि किसानों को पहुँची। उनके श्रेष्टतम व्यक्ति सेना में मारे गए। कहा जाता है कि रूसी सेनाओं के लगभग सत्तर लाख व्यक्ति मारे गए या नाकारा हो गए। जमीनों में हल न चले और जहाँ बहुत समय तक जंगलों को काट कर लोगों ने हल जोतने के योग्य भूमियाँ बनाई थी, वहां फिर जंगल उत्पन्न हो गए। और कई पीढ़ियों का काम मलियामेट हो गया। लोगों में अद्भुत विचार पैदा हो गए। "शान्ति और भूमि" की पुकार चारों ओर से उठी, जिसमें लोगों ने "रोटी" की माँग भी जोड़ दी।

क्रांति के प्रारम्भिक समय में किसान लोग बाल्शेविकों से पृथक रहे, परन्तु किसानों की सहायता के बिना बाल्शेविज्म का अन्त हो जाना अनिवार्य था। अन्त में से किसानों की काँग्रेस में लेनिन सफल हो गया, परन्तु इससे पहले ही किसानों ने कानून अपने हाथ में ले लिया था और जमींदारों से भूमियाँ छीन कर उनके स्वामी बन बैठे थे।

जब गृह-युद्ध आरम्भ हुआ और कई भीतरी शत्रुओं ने बाहरी रुपये और शस्त्रों की सहायता से सोवियत सरकार पर आक्रमण किए तो वह किसानों के लिये प्रबल परीक्षा का समय था। उन्हें यह आशंका हुई कि जो जमीनें उन्होंने बड़ी आपत्तियों के बाद प्राप्त की हैं, कहीं उनके हाथ से निकल न जाएं। अस्तु वे सोवियत सरकार से मिल गए और अधिकतर उन्हीं की सहायता से सोवियत को विजय प्राप्त हुई। परन्तु युद्ध के पश्चात् दुर्भिक्ष और रोग फैले और इस विनाश तथा संकट के दिनों में नए सिरे से निर्माण का काम करना पड़ा।

सोवियत सरकार ने जो आदेश आरम्भ में जारी किए, उनके अनुसार

भूमि को राष्ट्र की सम्पत्ति निश्चित किया गया। भूमि का क्रय विक्रय या किराए पर देना या जमानत के रूप में रहन रखना वर्जित कर दिया गया। भूमि से लाभ उठाने का अधिकार बिना भेद भाव के उन समस्त लोगों को दिया गया जो कृषि कर्म करना चाहें। चाहे वे कृषि का काम स्वयं अपने परिवार या खानदान के द्वारा करें या कुछ व्यक्ति मिलकर करें और वे उस समय तक भूमि से लाभ उठा सकते हैं, जब तक कि वे काम करने के योग्य हों। उजरत देकर मजदूरों से खेतों में काम कराना वर्जित है। इस प्रकार से भूमि किसानों को मिल गई और जो ऋण भूमि पर चढ़ा हुआ था वे उससे मुक्त हो गए। उन्हें जमींदारों को जो वार्षिक लगान अदा करना पड़ता था, उससे छुटकारा प्राप्त हो गया। कई बड़ी बड़ी जागीरों को सरकार ने लेकर वहाँ नमूने के फार्म बना दिए। किसानों के मध्य भूमि की बाँट का मामला देहाती पंचायतों पर छोड़ दिया गया।

इस पुराने ढंग के कारण कि पंचायतें भूमि की मालिक हों, भूमि को राष्ट्रीय स्वामित्व में लाने का काम सुगम हो गया। खेती बाड़ी के दिनों में किसानों को खेतों के निकट रहना पड़ता है। गर्मी के मौसिम में महिलाएँ खेती के काम में सहायता देती हैं और सर्दी के दिनों में चर्खा कातने, जाली काढ़ने और सीने पिरोने का काम करती रहती हैं।

आरम्भिक घोषणाओं के द्वारा जमीन को प्रयोग में लाने का अधिकार दूसरे के हाथ में देना निषिद्ध था। परन्तु इसके बावजूद किराये पर ज़मीन देने की अवैध प्रथा चलती रही। १९२२ ई० में कानून बदल गया और एक निश्चित अल्प समय के लिए भूमि किराये पर देने की आज्ञा दे दी गई और मजदूरों से उजरत पर काम लेना पूर्ववत निषिद्ध रहा। परन्तु इस से भी लोगों की कठिनाइयाँ पर्याप्त रूप में दूर न हुईं। क्योंकि प्रायः परिवारों के पास हल जोतने के लिए घोड़े या दूसरे पशु न थे। इसलिए १९२६ ई०

में कानून में परिवर्तन किया गया। भूमियों को किराये पर देने की अवधि बढ़ा दी गई और विशेष प्रकार की भूमि पर उजरती मजदूरों से कुछ शर्तों के साथ काम लेने की आज्ञा दे दी गई। जमीनों को किराये पर देने के ठेकों का स्थानीय अधिकारियों के पास रजिस्टर होना आवश्यक है और यह भी आवश्यक है कि किराया देने वाले परिवार के आदमी जमीन पर अवश्य काम करें, यद्यपि वह अपनी सहायता के लिये मजदूर उजरत पर ले सकते हैं। किराया के मजदूरों के रहने के लिए स्थान और भोजन सर्वथा उसी प्रकार का देना पड़ता है, जैसाकि परिवार के व्यक्तियों को।

किसान लोग सरकार को केवल एक टैक्स देते हैं अर्थात् कृषि टैक्स। इसकी व्यवस्था इस प्रकार की गई है कि धनाढ्य किसान न केवल अनुपात से अधिक टैक्स (कर) देते हैं प्रत्युत उनके टैक्स का दर बढ़ता रहता है। इसके विपरीत ग़रीब किसानों की भारी संख्या को टैक्स से सर्वथा मुक्त रखा गया है। इस आधार पर कि उनकी आय बहुत कम है, उनके जीवन का मान दण्ड अपेक्षाकृत कम है और टैक्स लेकर उसे अधिक घटाना या और भी कम करना अनुचित है। इसलिए उनसे कोई टैक्स नहीं लिया जाता। पिछले वर्ष तक २५ प्रतिशत किसान कर से मुक्त थे। क्रांति की दसवीं वर्ष गाँठ पर सरकार ने घोषणा की कि वे १० प्रतिशत और भी किसानों को टैक्सों से मुक्त करना चाहती है। इसके अतिरिक्त यह सुझाव भी है कि निर्धन किसानों में से बूढ़े व्यक्तियों को सरकार की ओर से पेन्शनें दी जाएँ।

रूस बड़ा दरिद्र देश है और वहाँ शिक्षा, कृषि और उद्योगों के प्रसार के लिए रुपये की बड़ी आवश्यकता है। इसलिए यह बात आश्चर्यजनक है कि रुपये के अभाव के बावजूद टैक्सों में और भी कमी की जाए। १६२६ ई० की साम्यवादी दल की कांग्रेस में कहा गया है कि हम किसानों

को केवल टैक्स लेने का यन्त्र नहीं समझते। टैक्स में वृद्धि होने और खाने की चीज़ों के भाव बढ़ जाने से गाँव की उपज की उन्नति रुक जाएगी।

१६२४—२५ ई० में प्रत्येक किसान परिवार के टैक्स की औसत १४·२ रोबल थी। १६२५-२६ ई० में ६ ३ रोबल और १६२६-२७ ई० में ११·६ रोबल। टैक्स केवल उस भूमि पर लिया जाता है, जिस में हल जुतता और शस्य उपजता है और परिवार के सदस्यों की संख्या के अनुसार उसमें कमी और वृद्धि होती हैं।

पशुओं पर भी टैक्स लिया जाता है और उन्हें एक एकड़ भूमि का अंश समझा जाता है भूमि कर के कई दर्जे होते हैं, अतः १५५ रोबल की आय पर ४ ७५ प्रतिशत कर लगता है और २०० रोबल की आय पर ५·२५ प्रतिशत, ३०० रोबल पर ५·७५, ४०० रोबल की आय पर ८ प्रतिशत, ६०० रोबल पर १०·५ प्रतिशत, ६०० रोबल से अधिक पर १४ प्रतिशत।

कृषि-टैक्स का बहुत बड़ा भाग स्थानीय आवश्यकताओं पर खर्च किया जाता है। १६२५-२६ ई० में भूमि के लगान से २२½ करोड़ रोबल की आमदनी हुई, जिसमें से १० करोड़ रोबल स्थानीय आवश्यकताओं पर खर्च किये गये। मानो कर (टैक्स) स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों बजटों के लिए होता है। प्रायः देहात अपनी आवश्यकताओं के लिए स्वयं कर लगा लेते हैं। ये कर कई बार भूमि के लगान का ३५ प्रतिशत भाग होता है और एक स्थान पर ७० प्रतिशत तक लगाया गया था।

क्रांति के थोड़े ही समय के पश्चात् बहुत सी पंचायतें बन गईं। मजदूरों की टोलियों ने छोटी छोटी कमेटियाँ बनालें, ताकि खेतों में मिलकर काम करें और सम्मिलित जीवन बताएँ। प्रायः धार्मिक श्रेणियों ने भी ऐसा ही किया। परन्तु बावजूद इन प्रारम्भिक सफलताओं के आंदोलन डगमगा

गया। अधिकतर विषयों में मतभेद के कारण धीरे धीरे उन पंचायतों के स्थान पर "आर्टल" स्थापित हो गईं, जो किसानों की सभा थी। उन्होंने अपने साधनों को एकत्रित करके भूमि के एक सम्मिलित खण्ड में फसल बोया। इसके बाद भूमि के सम्बन्ध में आपस की सहायता के और भी तरीके जारी हुए।

मिलजुल कर खेती बाड़ी करने में बड़ा लाभ यह था कि मशीनों से काम ले सकते थे, जो व्यक्तिगत रूप में किसानों की सामर्थ्य से बाहर हैं। आजकल रूस में ट्रेक्टर का बड़ा आदर किया जाता है और उसी के कारण भूमि सम्बन्धी आपस की सहायता के उपाय बड़े व्यापक पैमाने पर जारी हुए।

कृषि बैंक और ऋण देने वाली सोसायटियाँ प्रत्येक स्थान पर स्थापित हो गईं और ऋण प्राप्त करने में बहुत सुविधाएँ हो गईं। १६२६ ई० में उन सोसायटियों के सदस्यों की संख्या ४२ लाख से ऊपर थी। इन सोसायटियों के द्वारा पूँजी के लिए ऋण के रूप में सहायता दी जाती है या बीज ऋण पर दिये जाते हैं या कृषि की मशीनों की कीमतें किस्तों में ली जाती हैं।

सोवियत सरकार अधिक घनी आबादी के किसान परिवारों को अपना प्रदेश छोड़कर देश के दूसरे भागों में आबाद होने की प्रेरणा करने की प्रत्येक सम्भव चेष्टा कर रही है। भूमियाँ मुफ्त दी जाती हैं। रेल के किराये में रियायत की जाती है। ऋण दिये जाते हैं और कुछ समय के लिये टैक्स मुआफ़ कर दिया जाता है।

रूस में घरेलू उद्योग (गृह शिल्प) बड़ी उन्नति पर थे। लाखों पुरुष और महिलाएँ उनमें व्यस्त रहती थीं। युद्ध के समय में और इसके पश्चात् वे उद्योग बहुत कम रह गए थे। परन्तु फिर उनमें उन्नति हो रही है।

उनकी प्रत्येक प्रकार से प्रोत्साहना की जा रही है और जो टैक्स उनकी उन्नति में बाधा डालते थे, उन्हें दूर किया जा रहा है। घरेलू उद्योग सर्दी के मौसम में अधिक उपयोगी होते हैं, जबकि और कुछ काम करने को नहीं होता। कपड़ा बुनना, बूट, टीन, बर्तन, लकड़ी की चीजें और बहुत सी चीजें हाथों से या सादा मशीनों से बनाई जाती हैं।

मैंने किसी दूसरी जगह किसानों की संस्थाओं और उनकी बहुत सी दूसरी सर गर्मियों का उल्लेख किया है उनके अपने समाचार पत्र निकलते हैं। मेले होते हैं। उनके विद्यालय हैं और शिल्पगृह हैं, पुस्तकालय, रीडिंग रूम और महिलाओं के क्लब हैं। अविद्या को दूर करने और आपस की सहायता की सोसायटियाँ सब जगह पाई जाती हैं और युवकों की सभाएँ भी हैं।

रूस के देहात की स्थितियों में बड़ी भारी परिवर्तन हुआ है। पादरियों का प्रभाव कम हो गया है तो भी अभी तक वे सरगर्मियों का केन्द्र बने हुये हैं और धार्मिक उत्सव मनाये जाते हैं। धार्मिक दावतें होती हैं, उत्सव या रीतियाँ मनाई जाती हैं। सिविल विवाहों में यद्यपि आसानी है, परन्तु बहुत कम लोग अब भी गिरजाओं में जाकर विवाह करते हैं।

धीरे धीरे गिरजा का स्थान फरोडनीडेम ले रहे हैं, जिन्हें पंचायत घर कहना चाहिए, जहाँ प्रायः पुस्तकालय और वाचनालय होता है तथा वहीं क्लब, विद्यालय और थियेटर भी। प्रत्येक पंचायत घर का एक कोना लेनिन के लिये निश्चित है जहाँ एक लाल कपड़ा लटका हुआ है।

———
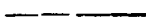
पन्द्रहवाँ परिच्छेद

महिलाएं और विवाह

रूस के सम्बन्ध में प्रायः यह प्रश्न सब से पहले पूछा जाता है, क्या सचमुच वहाँ महिलाओं को राष्ट्रीय सम्पत्ति बना लिया गया है ? यह समझना आसान नहीं है कि महिलाओं को राष्ट्रीय सम्पत्ति बनाए जाने के क्या अर्थ हैं। अनुमानतः समाचार-पत्रों के संवाददाता और सम्पादक, जिन्होंने इस समाचार के फैलाने में प्रबल प्रयत्न किया है, स्वयं नहीं समझते कि वे क्या लिखे रहे हैं, शायद उनके दिल में यह विचार समाया हुआ है कि पुरुषों और महिलाओं के अनुचित सम्बन्ध सारे सोवियत प्रदेशों में उचित निश्चित कर दिये गये हैं और वे समझते हैं तथा उनकी इच्छा है कि दूसरे लोग भी ऐसा ही समझें कि रूस में महिलाओं का दर्जा बहुत ही गिर गया है। वे पुरुषों की कामवासनाओं को पूरा करने के लिए केवल चल सम्पत्ति की हैसियत रखती हैं।

परन्तु रूस में जाने वाले यात्री या पर्यटक इस देश की स्थितियों का अध्ययन करने वाले कदापि इस प्रकार के विचार या अनुभव लेकर वापस नहीं आते। वर्तमान रूस की महिलाओं में चाहे और प्रकार की त्रुटियां हों, पर यह जांच में आई हुई बात है कि वे पुरुषों के लिए खिलौना या चल सम्पत्ति की हैसियत नहीं रखती हैं। वे स्वतन्त्र हैं और मर्दों की नौकरानियाँ या दासियां बन कर रहने से इनकार करती हैं।

मैं मास्को में महिलाओं के सम्मेलन में थोड़े समय के लिए गया था। उस अधिवेशन में लेनिन की विधवा कोपस्काया और मैडम सनयतसेन और वयोवृद्ध लेडी क्लाराजतकन और दूसरे देशों की बहुत सी महिलाएं उपस्थित थीं। यूरोप के दूसरे देशों की महिलाएं जिन्होंने वहाँ भाषण किए, अपनी रूसी बहनों की हालत देख कर ईर्षा करती थीं और उनके मन में श्लाघा के भाव उत्पन्न होते थे। क्योंकि उन्होंने देखा कि रूसी महिलाओं ने उनसे अधिक सामाजिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त की है।

इससे पहिले के शासन काल में रूसी महिलाओं की दशा अच्छी न थी। उन्हें पुरुषों की भांति समान अधिकार प्राप्त न थे। क़ानून पुरुषों के पक्ष में था। पत्नी इस बात पर विवश थी कि अपने पति का प्रत्येक आदेश माने और वह पति की इच्छा के बिना कोई नौकरी नहीं कर सकती थी। तलाक प्राप्त करना तो उसके लिए लगभग असंभव था। विवाह के पश्चात् महिलाओं की सम्पत्ति और रुपया पैसा उसके पति के अधिकार में रहता था। गाँवों में अविद्या का अन्धकार छाया हुआ था। रूसी भाषा में एक लोकोक्ति है कि अवकाश के समय रूसी किसान का सब से बड़ा दिल बहलावे का काम यह होता है कि वह अपनी बीवी को मारता रहता है।

महायुद्ध और उसके पश्चात् गृहयुद्ध ने रूस के बहुत से खानदानों का नाश कर दिया। सोवियत सरकार को इस परिवर्तित स्थिति के अनुसार कार्यवाही करनी पड़ी। उन्होंने अपने आरंभिक समय में मजदूर और विवाह के सम्बन्ध में कानून बनाए। परन्तु संविधान बनाने का यह कार्य काग़ज तक ही सीमित रहा। यद्यपि इसने जनसाधारण की मनोवृत्ति

को बहुत कुछ परिवर्तित कर दिया। क्रांति के दो वर्ष बाद लेनिन ने भाषण करते हुए एक अवसर पर कहा था।

मजदूरों की सरकार ने महिलाओं के विषय में अपने शासन काल के पहले ही महीनों में विधान बनाकर स्थिति सर्वथा परिवर्तित कर दी है। सोवियत सरकार ने उन कानूनों के रद्द करने में, जिन्होंने महिलाओं को पुरुषों की दासियाँ बना रखा था, कोई कसर न उठा रखी। अब हम गौरव के साथ और बिना किसी भ्रम के कह सकते हैं कि सोवियत रूस के बाहर संसार में एक भी देश ऐसा नहीं है, जहाँ महिलाओं को पूरे रूप में समान अधिकार दिए गए हों और जहाँ महिलाओं की दशा ऐसी हीन नहीं है, जो दैनन्दन घरेलू-जीवन में अनुभव की जाती है। हमारा यह काम सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे पहले किये जाने वाले कामों में से था। इसमें सन्देह नहीं कि केवल कानून ही पर्याप्त नहीं। केवल आदेश जारी करने पर हम एक मिनिट के लिये भी शान्त न होंगे। संसार के अत्यन्त समुन्नत देशों के विचार से सोवियत रूस में महिलाओं की अवस्था अत्यन्त ऊँची है, परन्तु हम स्पष्ट कहे देते हैं कि यह केवल प्रारम्भ ही है।"

मजदूरों के सम्बन्ध में जो कानून बनाये गये हैं, वे मजदूर महिलाओं के लिये विशेषतः लाभदायक है। इन के अतिरिक्त महिलाओं की रक्षा के लिये विशेष कानून भी बनाये गये। काम के लिये आठ घण्टों का दिन निश्चित किया गया, जिसके सम्बन्ध में अब यह सुझाव है कि सात घण्टे का कर दिया जाये। वार्षिक छुट्टियाँ मालिकों के खर्च पर, मजदूरों के जीवन का बीमा, लम्बी नौकरी पेंशनें, विश्राम गृह, रोगियों को स्वास्थ्य गृहों में रखना, चौदह वर्ष से कम आयु के लड़के लड़कियों को काम पर लगाने की मनाही, चौदह से सोलह वर्ष की आयु तक सिखलाई के रूप में केवल चार घण्टे प्रतिदिन काम लिया जाना और १६ वर्ष से अठारह वर्ष तक ६ घण्टे

काम लेने के कानून जारी किये गये। यह भी याद रखना चाहिये कि कारखानों और ट्रेडयूनियनों की कमेटियों को मजदूरों की दशा या अवस्था ठीक रखने के लिए निम्नलिखित कानून लागू हैं—

(१) जोखिम के उद्योगों और अधिक परिश्रम के कामों पर महिलाओं और अठारह वर्ष से कम आयु के लड़के लड़कियों को लगाने की मनाही है। जैसे, रसायन सम्बन्धी उद्योग और दूसरे कार्य, जिन में मजदूरों को सीसे के बुरादे से हानि पहुँचने की आशंका हो।

(२) कारखाने की मजदूर महिलाओं को और दूसरी महिलाओं को, जिनके काम थकान पैदा करने वाले हों, प्रसूता होने की अवस्था में चार मास की छुट्टी मिलती हैं और औद्योगिक कार्यालयों को छोड़ कर अन्य कार्यालयों में काम करने वाली महिलाओं को तीन महीने की।

(३) गर्भवती महिलाओं के लिये रात को कार्य करने या ओवर टायम काम करने का निषेध है।

(४) गर्भवती महिला को उस स्थान से, जहाँ वह नियमित रूप से काम करती है, उसकी इच्छा के विरुद्ध दूसरे स्थान पर नहीं भेजा जा सकता।

(५) दूध पीते बच्चों की माताओं की छुट्टी के साधारण घण्टे के अतिरिक्त प्रत्येक ३॥ घण्टे के पश्चात् बच्चों को दूध पिलाने के लिये कम से कम आध घण्टे की छुट्टी दी जाती है और यह समय काम के घण्टों में गिन लिया जाता है और उनकी पूरी मजदूरी मिलती है।

इस बात की आशंका थी कि गर्भवती महिलाओं को, जो सुविधाएँ दी गई हैं, संभव है कि उन के कारण से कारखानों के मालिक किसी उचित कारण के बिना ही उन्हें काम से हटा दिया करें। इस लिये कानून में एक

ऐसी धारा भी रखी गई है कि किसी गर्भवती महिला को लेबर इन्स्पेक्टर की स्वीकृति के बिना मौकूफ़ न किया जाए।

रात के स्वास्थ्य गृह भी बनाये गये हैं, जो उन मजदूरों के लिए हैं, जो इतने बीमार हों कि काम न कर सकें। परन्तु इनकी परिचर्या करने और अच्छा भोजन देने की आवश्यकता है। काम से निपट कर मजदूर लोग वहाँ चले जाते हैं और अवकाश के समय में तथा रात को वहीं रहते हैं।

कारखानों में महिलाओं की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है, यद्यपि पुरुष अब भी अधिक हैं और प्रत्येक प्रकार के कामों में उन्हें ले लिया जाता है। परन्तु कुछ समय से यह विचार उत्पन्न हुआ है कि महिलाओं के समान अधिकारों के अर्थ ये नहीं हैं कि उनको ऐसे कामों पर भी लगा दिया जाए, जिनके करने की शारीरिक रूप से सामर्थ्य उन्हें प्राप्त नहीं है।

सोवियत यूनियन में महिलाएँ उच्च से उच्च पदों पर आरूढ़ अथवा नियुक्त हैं। वह रूसी महिला ही थी, जिसका नाम कोलिनटे है और जो संसार में सबसे पहली महिला-राजदूत थी। रूसी सोशलिस्ट फेडरेटिड सोवियत रिपब्लिक की देहाती सोवियतों में १६२६ ई० में एक लाख महिलाएँ सदस्य चुनी गई थीं और १६६ किसान महिलाएँ आल युनियन कांग्रेस आफ सोवियत (सोवियत की अखिल संघ कांग्रेस) की सदस्या हैं। सायबेरिया का प्रदेश अत्यन्त पिछड़ा हुआ समझा जाता है। वहाँ भी देहाती सोवियत की ८ हज़ार महिलाएँ सदस्या हैं, जिनमें से ४५ अपनी अपनी सोवियत की प्रधाना हैं। संघ के सम्बन्ध में महिलाओं के अधिकार समान हैं। दस लाख महिलाएँ अपने खानदानों की अभिभाविका होने की हैसियत से अपनी भूमियों में कृषि का काम करती हैं।

साम्यवादी दल का महिलाओं के लिए एक विशेष विभाग है, जिसे

जनोतदल कहते हैं, जो महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के सम्बन्ध में बड़ी सरगर्मी से काम करता है। यह विभाग समाचार-पत्र भी प्रकाशित करता है और स्वास्थ्य रक्षा, बच्चों का पालन, सहकारिता तथा राजनीति के सम्बन्ध में व्याख्यानों का काम करता है। ८ मार्च के दिन समस्त रूस में महिलाओं का अन्तःराष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है।

सोवियत रूस में विवाह और तलाक के कानून भूतपूर्व परम्परा से सर्वथा विभिन्न हैं। जो समस्याएँ उनके सामने आई, कुछ तो उनके सदृश्य थीं, जो यूरोप और अमेरिका के दूसरे देशों के सामने आ चुकी हैं और कुछ इस कारण से कि युद्ध के पश्चात् खानदानों के जीवन भंग हो चुके थे। डेनमार्क और तुर्की में भी विवाह के सम्बन्ध में इस प्रकार के कानून प्रचलित हैं। अस्तु रूस इस मामले में दूसरे देशों से विभिन्न नहीं है।

परन्तु एक मामले में रूस दूसरे देशों से सर्वथा विभिन्न है। परम्पराओं या प्राचीन रीति प्रथाओं को वहाँ समादर प्राप्त नहीं है, प्रत्युत उनके विरुद्ध चलने की मनोवृत्ति पाई जाती है क्योंकि उनका सम्बन्ध उस समय के समाज से है, जो आजकल के रूस के विचार में दासता के चिह्न थे। एक साम्य-वादी समाज में विवाह का आदर्श क्या होना चाहिए इस सम्बन्ध में राय क़ायम करना कठिन है। क्योंकि साम्यवाद के सिद्धान्त के दार्शनिकों के विचार इस विषय में विभिन्न हैं। उनमे से प्रायः खानदानों के स्थिर रहने को अच्छा समझते हैं, परन्तु खानदानों का रूप इससे सर्वथा विभिन्न होगा, जो इस समय है।

धार्मिक रीति के रूप में विवाह करना निषिद्ध नहीं है और प्रायः व्यक्ति ऐसा ही करते हैं, विशेषतः देहात में। यह देखकर आश्चर्य होता है कि अदालती विवाह में भी कई रीतियों का समावेश होता जाता है, जैसे—

पंखों का लटकाया जाना, दुल्हा दुल्हन के मध्य प्रतिज्ञाओं का होना तथा व्याख्यानों का किया जाना। एक से अधिक विवाह करने वर्जित हैं और दूसरे विवाह के समय पहले विवाह की घटनाओं को छिपा रखना अपराध निश्चित किया गया है। तलाक की खुली आज्ञा है और इसके लिए आसान शर्तें रखी गई हैं। विवाह से सम्पत्ति में किसी का अनुचित दखल नहीं हो जाता। पति-पत्नी एक दूसरे की सहायता करने के लिए समान रूप से उतरदायी हैं। नाजायज़ बच्चों को भी वही अधिकार प्राप्त होते हैं, जो जायज बच्चों को। पति और पत्नी को अधिकार होता है कि वे दोनों में से किसी का नाम लेकर सांझा नाम रख लें या अपने नाम पृथक पृथक रखें। बच्चों को चौदह वर्ष की आयु के बाद यह फैसला करने का अधिकार होता है कि वे अपने पिता का नाम ग्रहण करें या माता का। उन्हें यह भी अधिकार प्राप्त है कि अपने धर्म और नागरिकता का निश्चय करें। माता पिता कानून के अनुसार अपने बच्चों को अपने साथ रख सकते हैं और उनका पालन पोषण कर सकते हैं, उत्तराधिकारी या दत्तकपुत्र बनाने की आज्ञा नहीं है।

वसियत के द्वारा सम्पत्ति के बटवारे की आज्ञा विशेष विशेष अवस्थाओं में दी जाती है और वह भी उचित वारिसों के पक्ष में, प्रायः पत्नी और वे सम्बन्धी, जिनका निर्वाह स्वर्गीय की आयु पर था, समान हिस्से प्राप्त करते हैं। यदि सम्पत्ति इतनी कम हो कि समस्त उचित अधिकारियों को उससे पर्याप्त सहायता न मिल सके, तो जो सम्बन्धी सबसे अधिक जरूरतमंद (आवश्यकता रखने वाले) हों सबसे पहले उनका अधिकार समझा जाता है। प्रारम्भ में यह कानून था कि स्वर्गीय की बीवी को दस हजार रोबल (एक हजार पौंड) से अधिक विरसा (सम्पत्ति) न मिले, शेष सारी विरसे की सम्पत्ति सरकार ले ले। परन्तु दो वर्ष से यह कानून बदल गया है और अब वारिसों के लिये धन-राशि का कोई परिमाण या सीमा निश्चित नहीं है।

परन्तु दिवंगत लोगों की सम्पत्ति पर सरकारी टैक्स दर्जों के हिसाब से बढ़ा दिया गया है। अस्तु पाँच लाख रोबल से अधिक की सम्पत्ति पर ६० प्रतिशत टैक्स है।

सारॉश यह है कि कुछ वर्ष पहले विवाह का कानून ऐसा था। १९२५ ई० में उसमें परिवर्तन करने का प्रयत्न किया गया। परन्तु सफलता प्राप्त न हुई और इस सुझाव को स्थगित कर दिया गया। इसके पश्चात् महीनों तक प्रस्तावित परिवर्तनों पर रूस में विचार विनिमय होता रहा। सारे देश में अनेक जलसे हुये और समाचार पत्र इसी विषय के लेखों से भरे रहते। बड़े बड़े साम्यवादी नेताओं ने इसमें भाग लिया और बड़े गर्मागर्म वाद-विवाद हुए। प्रायः किसान लोग नागरिक लोगों से अधिक रूढ़ीवादी सिद्ध हुए।

कानून में परिवर्तन इस विचार से सुझाया गया था कि वहाँ एक लाख के लगभग स्त्री-पुरुष इस प्रकार के हैं जो पत्नी और पति के रूप में रहते हैं। परन्तु उन्होंने अपने विवाह रजिस्टर्ड नहीं कराये। सुझाव यह था कि इन विवाहों को कानून के अनुसार उचित निश्चित किया जाए। इस सुझाव का प्रबल विरोध हुआ। और भी कुछ धाराओं पर आपत्ति उठाई गई, जिनके अनुसार पति यदि बहुत गरीब हो तो सारे खानदान को स्त्री के निर्वाह की व्यवस्था करनी चाहिए। परन्तु महिलाओं की सभाएँ गैर-रजिस्टर्ड विवाहों को उचित निश्चित किए जाने के पक्ष में थीं।

सबसे बड़े वाद विवाद के पश्चात् विवाह का नया कानून नवम्बर १९२६ ई० में पास हुआ। उसमें लिखा है कि विवाहों के रजिस्टर्ड करने का उद्देश्य यह है कि पत्नी और बच्चों की सम्पत्ति और उनकी व्यक्तिगत रक्षा का प्रबन्ध करने में आसानियाँ उत्पन्न हों। रजिस्टर कराना विवाह का

प्रमाणित प्रमाण होता है। रजिस्टर कराना विवाह करना नहीं है प्रत्युत उसका केवल प्रमाण है। विवाह इसके बिना भी हो सकता है, परन्तु फिर इसका सिद्ध करना कठिन हो जाएगा। रजिस्टर्ड और ना-रजिस्टर्ड विवाहों के लिए समान रूप से रक्षा का प्रबन्ध किया गया, परन्तु ना-रजिस्टर्ड जोड़ों से अदालतों ने यह माँग की कि इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करो कि वास्तव में विवाह हो चुका है। यदि कोई ना-रजिस्टर्ड जोड़ा है तो उसका पुनः विवाह नहीं हो सकता।

पत्नी के निर्वाह का उत्तरदायित्व पति के खानदान पर डाला गया। परन्तु केवल उसी सीमा तक जहाँ तक कि खानदान में पति का भाग है। तलाक को अधिक सुगम बना दिया गया। यदि एक पक्ष तलाक लेना चाहे तो दूसरे पक्ष की सहमति प्राप्त किए बिना भी ले सकता है। कहा जाता है कि तलाक की इस आसानी के बावजूद प्रति वर्ष तलाकों की संख्या प्रति दस हजार ग्यारह से अधिक नहीं है। कहते हैं कि यह संख्या उन समस्त अन्य देशों से कम है जहाँ तलाक ऐसी आसानी से प्राप्त नहीं की जा सकती। यह भी कहा जाता है कि नए कानून ने यद्यपि विवाहों के बहुत से प्रतिबन्धों को दूर कर दिया है किन्तु इससे विवाह करने की रीति को सहायता मिली है क्योंकि प्रत्येक सम्बन्धी पर स्त्री को गुजारा देने का उत्तरदायित्व डाला गया है।

नए कानून के अनुसार दत्तक पुत्र या पुत्री लेने की आज्ञा दे दी गई है। पुराना कानून, जिसके अनुसार दत्तक बेटा लेने का निषेध था, सफल सिद्ध नहीं हुआ। ऐसे यतीमों की पर्याप्त संख्या थी, जिनका कोई संरक्षक न था और जिन्हें कृषकों ने अपनी सहायता के लिये रखा था तथा उनके साथ अपने बच्चों का सा बर्ताव करते थे।

प्रारम्भ में विवाह के लिए लड़कियों की कम से कम १६ वर्ष और लड़कों की १८ वर्ष आयु निश्चित की गई थी। परन्तु महिलाओं के अनुरोध पर लड़कियों के लिए भी १८ वर्ष की आयु निश्चित कर दी गई।

विवाह का कानून केवल रूसी सोशलिस्ट फेडरेटेड सोवियत रिपब्लिक में लागू है। यूनियन के दूसरे गणतांत्रिक राज्यों में इस से कुछ विभिन्न स्थिति है। अस्तु रूस में केवल रजिस्टर्ड विवाह ही स्वीकार किए जाते हैं।

किसी विषय के सम्बन्ध में निश्चयात्मक रूप से कुछ कहना कठिन है कि वह सदाचार के अनुसार है या इसके विपरीत है। क्योंकि विभिन्न देशों में और विभिन्न समयों में सदाचार के सम्बन्ध में विभिन्न विचार होते हैं। रूस में बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं, जो विवाहित जीवन में पति-पत्नी सम्बन्ध के अटूट रखने को बहुत कम महत्व देते हैं। परन्तु ऐसे भी बहुत हैं, जो पूरे सदाचारी (प्योरिटीन) कहलाते हैं और मर्द तथा औरत की प्रत्येक प्रकार की अनुचित काम-वासना की प्रवृत्ति के विरुद्ध हर समय आवाज़ उठाते या आंदोलन करते रहते हैं। एक सुप्रसिद्ध प्रोफेसर इस आंदोलन का नेता है, जिसने यह नियम बनाया है कि स्त्री और पति का सम्बन्ध स्थायी रहना चाहिये और पति पत्नी का समागम केवल बच्चे जनने के उद्देश्य से हो। वह सन्ततिनिरोध के आन्दोलन के विरुद्ध है और सरकार भी इस पक्ष में नहीं है। इस कारण से नहीं कि उसे इसके विरुद्ध कोई नैतिक आपत्ति है, प्रत्युत इस विचार से कि रूस सरकार रूस की जन-संख्या की वृद्धि की इच्छुक है।

साम्यवादी दल के कई एक बड़े बड़े नेता लेनिन, बखारन, लोना, चरास्की आदि ने इस विषय में दोनों पक्षों के उग्रवादियों की मनोवृत्तियों पर बड़ी चिन्ता प्रकट की है कि एक ओर तो कई लोग इस बात के समर्थक हैं कि

स्त्रियों और पुरुषों के सम्बन्ध बिना किसी रोक टोक के होने चाहिए। दूसरी ओर सदाचार के समर्थक इस बात पर जोर देते हैं कि गैरमर्द और औरतें आपस में हाथ तक न मिलायें और हँसी दिल्लगी की बातचीत न करें। नेताओं ने प्रतिबन्धों के पहलू का समर्थन किया है और उन्होंने प्रत्येक प्रकार की विलासिता (अय्याशी) की घोर निन्दा की है, चाहे वह सुरापान हो या तम्बाकू नोशी या स्त्रियों से सम्बन्ध हों।

लेनिन ने १६२० ई० में कलारा उजटेकन के साथ इन विषयों पर एक भेंट में अपने विचारों को प्रकट किया था। उसने कहा—"मुझे बहुत आशंका अनुभव हो रही है कि भावी पीढ़ियों का खियाल मुझे बहुत परेशान रखता है। वे क्राँति का एक अंश हैं। यदि पूँजीपति समाज के दोष क्रांतिकारी जगत् में आरम्भ होने लगें, जिस प्रकार कि कई पौदे अपने आप उत्पन्न हो जाते हैं तो आवश्यक है कि इन दोषों या खराबियों के विरुद्ध समय पर कार्यवाही आरम्भ की जाये।" उसने यह भी कहा कि "दाम्पत्य जीवन के विषय या मामलों के सम्बन्ध में युवकों के व्यवहार या आचरण में जो परिवर्तन उत्पन्न हुआ है, वह एक नियम की नींव पर है। उनमें से प्रायः अपनी स्थिति (हालत) को क्राँतिकारी या साम्यवादात्मक कहते हैं और वे सच्चे हृदय से ऐसा ही समझते हैं, परन्तु इससे मेरी संतुष्टि नहीं हुई। मुझे यह नया दाम्पत्य जीवन पूँजीवादियों के समाज की नक़ल प्रतीत होता है और उन देशों के वेश्यालयों या विलास-गृहों का बदला हुआ रूप दिखाई देता है"। उसने कहा, "कई लोग यह आपत्ति उठाते हैं या बहाना प्रस्तुत करते हैं कि कामवासनाओं के पूरा करने के लिए ऐसी ही आसानियाँ होनी चाहिएँ, जैसी कि एक ग्लास पानी पीने में। निःसन्देह प्यास अवश्य बुझानी चाहिए, परन्तु साधारण व्यक्ति साधारण अवस्थाओं या स्थितियों में बाजार में लेट कर एक गंदे चौबच्चे से पानी पियेगा और क्या ऐसे ग्लास में पानी

पीना पसन्द करेगा, जिससे बीसियों व्यक्ति पी चुके हों ? इसके अतिरिक्त इस मामले का सामाजिक पहलू और भी अधिक महत्व रखता है। पानी पीना एक व्यक्तिगत मामला है, परन्तु जब दो व्यक्ति प्रेम में सम्मिलित होते हैं, तो उससे एक तीसरा नया जीवन प्रकट होता है और यहाँ से समाज के हित का सम्बन्ध उत्पन्न हो जाता है तथा सम्मिलित या सामूहिक कर्तव्यों का विचार करना अनिवार्य हो जाता है।"

उसने कहा "मैं एक मिनिट के लिये भी ईश्वरत्व या भगवत-भक्ति का व्याख्यान करना नहीं चाहता। साम्यवाद से जीवन की वे समस्त प्रसन्नताएँ, आनन्द और शक्ति प्राप्त होनी चाहियें, जो प्रेम या स्नेह के जीवन की सम्पन्नता या पूर्णता से प्राप्त हुआ करती हैं। आजकल के समय में मजदूरों और स्त्रियों के समागम में जो प्राचुर्य देखने में आता है, मेरी राय में इससे जीवन के आनन्द और शक्ति प्राप्त नहीं होती, प्रत्युत इसके विपरीत इससे उनमें ह्रास उत्पन्न हो जाता है। क्रांति के समय में यह बात बहुत बुरी, अत्यन्त ही बुरी है।

"युवकों को स्वास्थ्यप्रद खेलों, तैरने, यात्रा व प्रयटन तथा प्रत्येक प्रकार की शारीरिक विकास सम्बन्धी शिक्षा और बौद्धिक व्यस्तता, अध्ययन, वैज्ञानिक अनुसंधान आदि की आवश्यकता है। सुदृढ़ शरीर ही से प्रबल मस्तिष्क बनता है। हमें न सन्तों की आवश्यकता है न डोन जोन्ज़ की और न हम जर्मन दार्शनिक बनना चाहते हैं।"

इन दूषित मनोवृत्तियों से, जिनसे लेनिन परेशान रहता था, युद्ध करने के लिए पुरुष और स्त्री के हद से अधिक सम्भोग, सुजाक आतशिक आदि रोगों की ओर आशंका के विरुद्ध प्रचार करने के विशेष प्रयत्न किए जा रहे हैं। खेल कूद और शारीरिक पोषण के आंदोलन भी चल रहे हैं और बहुत शीघ्र फैल गए हैं। वेश्या वृत्ति की औरतों की रोक थाम

के लिए भी प्रबल कार्यवाही हो रही है कि यदि दल का कोई सदस्य किसी वेश्या या आचार हीन औरत से सम्बन्ध रखता होगा तो उसे दल से निकाल दिया जाएगा।

परन्तु व्याख्यानों और प्रचार से बढ़कर, आशा है, जीवन की नई परिस्थितियाँ लोगों को संयम तथा सदाचार की शिक्षा देंगी तथा जीवन के दूसरे आनन्दों की ओर ध्यान आकर्षित हो रहा है। विलासता और आलस्य धनाढ्य श्रेणियों में उन्नति करते हैं, जिन्हें कुछ काम करने को नहीं होता और यही श्रेणी दूसरों के लिये एक नमूना होती है और फैशन प्रचलित करती है। रूस में यह श्रेणी नहीं रही और बहुत कम लोगों को इतना अवकाश मिलता है कि अपने काम तथा दूसरी व्यस्तताओं को छोड़ कर किसी और बात का विचार करें।

मास्को में माताओं की शिक्षा के लिए नदी के किनारे एक बहुत बड़ा महल है। माता और बच्चे के स्वास्थ्य के लिए, जिन जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वहाँ उनकी प्रदर्शनी की व्यवस्था की गई है। रोगों और मृत्युओं के विरुद्ध युद्ध करने के लिए वहाँ अनुसंधान का काम होता है और डाक्टरों तथा धायाओं और नरसों को वहाँ शिक्षा देकर बाहर काम के लिए भेजा जाता है। सुन्दर चित्र और विज्ञापन-पत्र दूर दूर के देहात में अपना संदेश पहुँचाते हैं। पिता को शिक्षा देते हैं कि बच्चे की माता के साथ किस तरह बर्ताव करे और पुरुष तथा स्त्री दोनों को सिखाया जाता है कि घर को कैसे स्वच्छ और सुन्दर रखा जाता है और बच्चों के स्वास्थ्य की कैसे रक्षा की जाती है। माँ को बताया जाता है कि बच्चे को स्वयं अपनी छातियों से दूध पिलाए। एक पोस्टर में दिखाया गया है कि एक छोटा सा बछड़ा एक मानवीय शिशु को बोतल से दूध पीते देख कर कटाक्ष या विद्रूप भरी नजर से देखता है और पूछता है कि तुम मेरी माँ का दूध क्यों पीते हो ?"

माताओं और बच्चों का विभाग माताओं और बच्चों से सम्बद्ध समस्त कामों का इन्चार्ज है । इस विभाग ने गाँवों के भीतर हजारों धाया-गृह खोल रखे हैं। १६२६ ई० में किसानों ने अपनी सभाओं के द्वारा इन धाया-गृहों के लिए साढ़े छः लाख रोबल दिए थे। इन धाया-गृहों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है क्योंकि किसान लोग इनके लाभों तथा उपयोगिता को समझने लग गये हैं।

परन्तु सोवियत यूनियन का इलाका बहुत विशाल है । इसलिए यह समस्त उन्नतियाँ अभी समुद्र में बून्द के समान हैं । प्रायः पुरुष और महिलाएं, जैसे कि प्रत्येक स्थान पर होते हैं, रूढ़ीवादी हैं और नए विचारों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। तो भी नए प्रबन्ध ने पुरानी भूमि में अपनी गहरी छाप लगा दी है और तुर्कस्तान तथा आर्क्टिक और आज़र बायजान में, जहाँ अभी थोड़े दिन हुए महिलाएं बुर्का पहना करती थीं, अब गणतन्त्रों की संसदों में वे पुरुषों के साथ समान दर्जा रखती हैं।
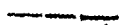
सोलहवाँ परिच्छेद

रूस और भारत

मैंने इन लेखों में आजकल के रूस के कुछ पहलुओं का उल्लेख किया है। यह वर्णन मैंने साधारण रूप से इसलिए किया है कि मुझे रूस के सम्बन्ध में विशेष जानकारी रखने का दावा नहीं है और बहुत से रोचक विषयों पर मैंने भी विचार नहीं किया। न मैंने सोवियत संघ की भावी स्थितियों पर विचार किया है कि वह अपने प्रबल साम्यवादात्मक रूप को स्थिर रखेगा या कि धीरे धीरे वहाँ कोई ऐसा शासन प्रबन्ध स्थापित हो जाएगा, जो उसके पड़ोसी देशों के साथ ताल मेल रखता होगा। क्रांति के बाद ही लेनिन ने लिखा था कि "क्रांति की स्पष्ट व प्रबल सफलता यह है कि रूस ने अपनी राजनीतिक व्यवस्था के कारण कुछ महीनों के भीतर ही समुन्नत देशों के बराबर का दर्जा प्राप्त कर लिया है। परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। इस संघर्ष में समझौते की कोई संभावना नहीं है। या तो इसे असफलता प्राप्त होगी या रूस को आर्थिक पहलू से भी समुन्नत देशों के बराबर का दर्जा प्राप्त हो जाएगा या उससे भी आगे बढ़ जाएगा या वह पीछे हटेगा या पूरी तीव्र गति से आगे बढ़ेगा। इतिहास का यही निर्णय है।" निःसंदेह संघर्ष चल रहा है, परन्तु प्रबल साम्यवाद का दौर समाप्त हो चुका है और डेप्लोमेसी (कूटनीति) के

कोमल तरीके प्रति दिन प्रयोग में आ रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि साम्यवादियों की इस इच्छा के बावजूद कि देश में केवल एक ही दल हो, संघ के भीतर धीरे धीरे नए दल बन रहे हैं। भविष्य में चाहे कुछ हो, परन्तु आज यह कहा जा सकता है कि बावजूद आंशिक परिवर्तनों के इस संघर्ष में समझौते या राज़ीनामे का कोई दख़ल नहीं है, जैसा कि लेनिन ने कहा है कि रूस या तो पीछे हटेगा या पूरे गतिवेग के साथ आगे बढ़ेगा। बीच का कोई मार्ग नहीं है और दस वर्ष की अवधि ने सिद्ध कर दिया है कि रूस पीछे हटने से इन्कार करता है।

ये कुछ प्रश्न हैं, जो संसार के मामलों, राजनीति, अर्थ-नीति और इतिहास का अध्ययन करने वालों के लिए बहुत ही दिलचस्प हैं। १९१७ ई० की क्रांति ने जो शक्तियां जगा दी थीं, वे अपने आप समाप्त नहीं हो गईं, प्रत्युत उन्होंने इतिहास बनाया है और वे इतिहास बनाती रहेंगी और कोई व्यक्ति उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। हम हिन्दुस्तानी लोग तो कदापि उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। रूस हमारा पड़ोसी है और बहुत बड़ा पड़ोसी है जो आधे एशिया और आधे यूरोप पर छाया हुआ है और ऐसे दो पड़ोसियों के मध्य या तो मित्रता हो सकती है या शत्रुता, ५ शून्यता कदापि नहीं हो सकती।

हमने उन परम्पराओं के मध्य विकास प्राप्त किया है, जो इङ्गलैण्ड ने होशियारी से रूस के विरोध के सम्बन्ध में फैलाई हैं। कई वर्षों से आक्रमण के भूत से हमें डराया जा रहा है और उसको हमारे फौजी साज व समान में भारी व्यय का बहाना बनाया गया है। जार के समय में हम से कहा जाता है कि रूस दक्षिण की ओर दिन प्रति दिन आगे बढ़ता आता है और वह समुद्र में निकलने के लिए किसी मार्ग की खोज में है और शायद भारत में आ कूदे। जार के शासन का अन्त हो गया। परन्तु

इङ्गलैण्ड और रूस के मध्य शत्रुता पहले ही की भांति चल रही है और अब हमसे कहा जाता है कि सोवियत सरकार से भारत को खतरा है।

यह बात कहाँ तक सच्च है ? इसमें तो ज़रा संदेह नहीं कि ब्रिटेन की साम्राज्यवादी नीति और सोवियत के मध्य भीषण शत्रुता है और ऐसी शत्रुता का परिणाम प्रायः युद्ध हुआ करता है। इस दृष्टिकोण से सचमुच ही युद्ध की आशंका विद्यमान है। परन्तु क्या रूस इस युद्ध का इच्छुक है या इङ्गलैण्ड लड़ना चाहता है ? हाल ही में रूस को अन्तःराष्ट्रीय युद्ध, गृहयुद्ध, दुर्भिक्ष और नाकाबन्दी के संकटों से गुजरना पड़ा है और सबसे बढ़कर यह कि अपनी आर्थिक अवस्था को सुदृढ़ बनाने तथा अपने प्रबन्धों या व्यवस्था की नींव को पक्का करने के लिए वह शान्ति का इच्छुक है। वह बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर चुका है और अपने विशाल प्रदेशों को शान्ति के साथ उन्नत करने के लिए पूरी तेजी से कार्य कर रहा है। युद्ध चाहे, उसमें सफलता हो, इस कार्य में निश्चय ही बाधा डालेगा और उसके लिए प्रबन्ध को सुदृढ़ करने में देर लगाएगा। अस्तु वह युद्ध का स्वागत नहीं कर सकता। और विगत कुछ वर्षों में हमने देखा कि उत्तेजना दिलाए जाने और अनादर किए जाने पर भी उसने युद्ध करने से इन्कार कर दिया है। चीन में, कहा जाता है कि इङ्गलैण्ड और कुछ अन्य शक्तियों के संकेत से रूसी दूतावास पर छापा मारा गया और इसके दूत का घोर अपमान किया गया। इंगलैण्ड में आर्कस का छापा साधारण अवस्थाओं में युद्ध के लिए पर्याप्त अवसर जुटा देता है। उसके दूतों को निर्दयता के साथ गोलियों से उड़ाया गया और अपमानित किया गया। परन्तु क्रोध और रोष को पीकर युद्ध से हाथ खींच रखने में रूस सफल रहा। वर्तमान युग के इतिहास के प्रत्येक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को अच्छी तरह से ज्ञात है कि रूस लड़ाई करना नहीं चाहता है।

इसके विपरीत इङ्गलैण्ड युद्ध की तैयारियां कर रहा है और शस्त्रास्त्रों के कम किये जाने या अनिवार्य मध्यस्थता के सुझाव को स्वीकार नहीं करता। राष्ट्रों की लीग में उसने सदा इस प्रकार के सुझावों का खुल्लम खुल्ला विरोध किया है। वह इस प्रकार के सुझावों में सम्मिलित होकर अपने साम्राज्य को खतरे या संकट में नहीं डालना चाहता। वह अपनी साम्राज्य शाही नीति को परिवर्तित करने पर सहमत नहीं है। अभी कुछ ही दिनों की बात है कि उसने इस बात का और भी प्रमाण दिया कि वह अपने साम्राज्य से अपने पञ्जे को ढीला न करने या संसार की शान्ति के लिए अपनी प्रबल साम्राज्य शाही नीति में परिवर्तन न करने का दृढ़ संकल्प रखता है। अमेरिका के इस सुझाव पर कि युद्ध के कारणों को दूर किया जाए, इंगलैण्ड की ओर से अत्यन्त रूखा उत्तर दिया गया था। यद्यपि वह उत्तर अत्यन्त सुन्दर शब्दों में लिपटा हुआ था। उसने लिखा कि इंगलैण्ड शान्ति के प्रत्येक सुझावों को मानने के लिए तैयार है, शर्त यह है कि उसे अपनी साम्राज्य शाही नीति और उच्च इरादों के लिए युद्ध करने का अधिकार प्राप्त रहे। यह अद्भुत प्रकार की स्वीकृति है। ब्रिटेन ने जो पत्र इस विषय में अमेरिका को लिखा उसके असली शब्द ये हैं—

"संसार के कई प्रदेश ऐसे हैं, जिनका स्थायित्व, सुदृढ़ता और भलाई हमारी शान्ति और रक्षा के हितार्थ आवश्यक है। पहले भी हिज मैजेस्टी की सरकार ने यह बात स्पष्ट रूप में प्रकट कर दी है कि उन प्रदेशों में हस्तक्षेप सहन नहीं किया जा सकता। उन प्रदेशों की आक्रमणों से रक्षा करना ब्रिटिश राज्य के लिए अपनी रक्षा करने के समान है। यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि ब्रिटेन की सरकार ने प्रतिश्रुति को इस समझौते के साथ स्वीकार किया है कि इस विषय में उसके कर्म-स्वातन्त्र्य में कोई बाधा न पड़ने पाए।"

स्पष्ट शब्दों में इसका यह अर्थ है कि ब्रिटेन सरकार जब कभी और जहाँ कहीं उसकी इच्छा हो युद्ध करने के लिए पूर्णस्वाधीनता स्थिर रखना चाहती है, और शायद यह बात पर्याप्त नहीं थी कि ब्रिटेन ने अपने पत्र में अपने लिए एक और सुविधा प्रस्तुत की है। उसमें लिखा है कि यह प्रतिश्रुति विश्वव्यापी रूप में कार्यान्वित होने के योग्य न समझी जाए, "क्योंकि कुछ देश ऐसे हैं, जिनकी सरकारों को सबने स्वीकार नहीं किया है"। विद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है कि संसार में वह देश, जिसकी सरकार को अभी तक समस्त देशों ने स्वीकार नहीं किया, वह सोवियत रूस है। अस्तु इंगलैण्ड ने बहुत से वैपरीत्यों और विशेष सुविधाओं को अपने लिए सुरक्षित करा कर लड़ाइयों के समाप्त करने की प्रतिश्रुति के प्रभाव को नष्ट करने के पश्चात् रूस के विरुद्ध युद्ध करने की स्वतन्त्रता को शर्तों से मुक्त निश्चित किया है परन्तु यह आश्चर्य की बात नहीं है। ये बातें ब्रिटिश नीति के सर्वथा अनुकूल हैं। इस नीति की सारी नीवें ये हैं कि सन्धियों और संगठनों के द्वारा रूस के गिर्द घेरा डालकर उसे कुचल दिया जाए। इंगलैण्ड ने इस उद्देश्य के लिए निरन्तर प्रयत्न किये हैं और राष्ट्रों की लीग को अपनी नीति की कठपुतली बनाया है। लोकार्नो प्रतिश्रुति इस नीति का परिणाम था और ब्रिटेन की ओर से जर्मनी के साथ कभी कभी मित्रता पूर्ण बर्ताव ग्रहण करने का उद्देश्य भी यही है कि रूस को सर्वथा अकेला छोड़ दिया जाए। ब्रिटेन के विदेश-विभाग के विख्यात अधिकारी अंगोर अपनी हाल की पुस्तक में स्पष्टतया लिखता है कि लीग आफ नेशन्ज़ की उन्नति और लोकारनो प्रतिश्रुति का भाव बालशेविज़्म को कुचलने का लक्षण है। वह लिखता है कि वर्तमान ब्रिटिश सरकार की नीति ने संयुक्त यूरोप की दीवार सोवियत के विरुद्ध खड़ी की है।

सारांश यह है कि सरकारी भाषणों और ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की नीति से यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट होती है कि वे रूस के विरुद्ध युद्ध करने की हार्दिक इच्छा रखते हैं और इसके लिए तैयारी कर रहे हैं और खुला युद्ध करने के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा में हैं। बहुत से दूसरे बड़े बड़े पूँजीपति देश भी सामाजिक नियमों और सोवियत रूस की कार्यवाहियों के ऐसे ही विरोधी हैं। परन्तु वे उसके विरुद्ध इतना कठोर राजनीतिक द्वेष नहीं रखते। केवल वर्तमान ब्रिटिश सरकार ही रूस को घेर कर कुचलना चाहती है। यह बात भी स्पष्टतः प्रकट है कि रूस युद्ध से दूर रहना चाहता है, परन्तु आशंका तथा भय का विचार करके वह इसके लिए तैयारी कर रहा है, क्योंकि अनेक बलिदानों और प्रयत्नों से जो स्वाधीनता उसने प्राप्त की है, वह उसे सुगमता से गंवाना सहन नहीं कर सकता।

यह अनुमान से दूर है कि रूस अपनी वर्तमान स्थितियों मे लम्बे समय तक भारत पर चढ़ाई करने का विचार करेगा। वह कोई और प्रदेश विजय नहीं करना चाहता और यदि वह चाहे भी तो उसमे जोखिम बहुत अधिक है। वह एक कृषिप्रधान देश है और अपने उद्योगों कला-कौशल को समुन्न करने का प्रयत्न कर रहा है, जिनके लिए उसे पूँजी और विशेषज्ञों की आवश्यकता है और उसे ये दोनो चीजें हिन्दुस्तान से नहीं मिल सकती। वह कच्चा माल या सामग्री प्रचुर परिमाण मे उत्पन्न करता है न कि बाहर भेजने के लिये औद्योगिक वस्तुएँ। यही हाल हिन्दुस्तान का है। आजकल दोनों देशों की सर्वथा समान अवस्था या स्थिति है। इसलिये वे एक दूसरे को लूटने खसोटने का लालच नहीं कर सकते तथा हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए रूस का कोई आर्थिक उद्देश्य नहीं हो सकता।

"रूस और हिन्दुस्तान को दो अच्छे पड़ोसियो की भांति रहना चाहिए, जिनके मध्य कोई झगड़ा नही है। यूरोप में जो झगड़ा हमें नजर आता है, वह

इंगलैंड और रूस के मध्य है न कि हिन्दुस्तान और रूस के मध्य क्या कारण है कि हम हिन्दुस्तानी लोग उस शत्रुता की बपौती अपने ऊपर ले लें, जो लम्बे समय से इंगलैंड और रूस के मध्य चली आ रही है ? और जिस की नींव ब्रिटिश साम्राज्य के स्वार्थ और लालच पर है। हमारा हित निश्चय ही इस बात में है कि इस साम्राज्यवाद का अन्त हो, न कि इसको सुदृढ़ करने और इसका समर्थन करने में।

कई पीढ़ियों से हिन्दुस्तानियों से कहा जा रहा है कि वे रूस से भय खाएँ और इस भय को कार्यरूप में परिणत करना शायद आजकल किसी सीमा तक कठिन है परन्तु यदि हम घटनाओं को वास्तविक रङ्ग में देखें, तो हम केवल एक ही परिणाम पर पहुँचेंगे कि हिन्दुस्तान को रूस से डरने का कोई कारण नहीं है और इस परिणाम पर पहुँचने के पश्चात् हमें यह बात खोलकर कह देनी चाहिए कि इङ्गलैंड के साम्राज्यवादी खेल में हम कठ-पुतली नहीं बनेंगे और उसके लाभ के लिए नाच नहीं नाचेंगे और हमें इस बात का निरन्तर रूप में मद्रास काँग्रेस के प्रस्ताव के शब्दों में घोषणा करते रहना चाहिये, "यदि ब्रिटिश सरकार कोई युद्ध आरम्भ करे अपने साम्राज्यवादी स्वार्थों को उन्नति देने के उद्देश्य से हिन्दुस्तान को उसमें फँसाना चाहे तो भारत के लोगों का यह कर्तव्य होगा कि इस प्रकार के युद्ध में भाग न लें तथा इसमें उसके साथ किसी पहलू में सहयोग न दें।" और यह घोषणा जोर के साथ बार बार की गई, तो संभव है कि इंगलैण्ड यह युद्ध छेड़ने में सोच विचार करे और विलम्ब करे तथा भारत और सारा संसार एक और महायुद्ध की विनाशकारी लपटों से सुरक्षित रहे।